ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

नव वर्ष 2022 की हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष : 73 | जनवरी, 2022 | अंक : 01 | मूल्य : 150 रु. (वार्षिक)

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक
डॉ. मनबीर

सह संपादक
श्रीमती अनिला बिश्नोई

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
दूरभाष : 80590-27929
94670-90729
email: editoramarjyotipatrika@gmail.com
editor@amarjyotipatrika.com
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय दूरभाष :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक : ₹ 150
25 वर्ष : ₹ 1300

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

अमर ज्योति
1950
श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबद-111	3
सहज सेवा से प्राप्ति	4
सम्पादकीय	5
साखी	6
जाम्भाणी साहित्य के विभिन्न पक्ष	8
घट परमल की बास	11
जम्भवाणी में युग चेतना	13
पुण्यतिथि: अमर शहीद शैतान सिंह भादू	16
बिश्नोई लोकगीत: संस्कार गीत- विवाह के गीत (भाग-1)	18
हरजस	21
नव वर्ष तुम्हारा अभिनंदन, नव वर्ष की नई शुरूआत	22
बधाई सन्देश	23
आओ विचार करें-7	24
मेहोजी गोदारा (विष्णोई) कृत रामायण	27
मरण बिसारो केहू, तिरंगा	32
ना कोई मंत्र, ना कोई जाप	33
खेतीबाड़ी: उत्तम खेती (भाग-5) प्राकृतिक खेती	34
सुकृत	37
करियर: कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग के उत्कृष्ट संस्थान	38
सामाजिक हलचल	41-42

सबद-111

दोहा

झाली राणी पूछियो, देव तणें दरबार।
अयोध्या में आनन्द घणां, सुखी किसो किरतार।

सबद संख्या 63 के प्रसंग में यह बतलाया था कि चित्तौड़ नरेश सांगा राणा तथा उनकी माता झाली राणी जम्भगुरु जी के शिष्य बन गये थे तथा वहाँ पर उनके प्रति 'आतर पातर' शब्द भी सुनाया था। कुछ समय पश्चात् जम्भदेवजी जाम्बा सरोवर खुदवा रहे थे उसी समय झाली राणी जम्भदेवजी के दर्शनार्थ जाम्भोलाव आयी थी। साथ में एक सन्दूक लायी थी, जिसमें भेंट देने के लिये अमूल्य वस्तुएं थी, किन्तु मार्ग में चोरों ने युक्ति से चुरा ली थी। तब रानी ने श्री देवजी को याद किया। तब चोर अन्धे हो गये और रानी को लाकर सन्दूक वापिस सौंप दिया, तभी उनकी आंखें ठीक हो सकी थी।

रानी श्री देवजी के पास जाम्बा सरोवर पर पहुंची तथा आठ दिन तक वहीं निवास किया। वहाँ से वापिस रवाना होते समय जम्भदेवजी से पूछा कि आप पहले अयोध्या में राम रूप में थे, तब कैसा सुख था तथा अब यहाँ निर्जन वन में आपको कैसा सुख मिलता होगा। तब जम्भदेवजी ने सबद सुनाया-

सबद-111

ओ३म् खरड़ ओढ़ीजै, तूंबा जीमीजै, सुरहै दुहीजै।
कृत खेत की सींव मलीजै, पीजै ऊंडा नीरूं।

भावार्थ- हे रानी! अयोध्या में सुख तथा यहाँ के सुख में बहुत ही अन्तर तुझे दिखाई देता है। यह मरूभूमि वाला देश है, यहाँ पर लोग पशुपालन ही विशेष रूप से करते हैं। उन ऊंट, भेड़, बकरी आदि पशुओं की ऊन-जटाओं से ही वस्त्र विशेषत: बनाये जाते हैं। वे ही वस्त्र शरीर को चुभने वाले कड़े जरूर होते हैं किन्तु स्वास्थ्य के लिये लाभदायक होते हैं, उन्हें ही ओढ़ते और पहनते हैं तथा भोजन के लिये मोटा अनाज, मोठ, बाजरा, ज्वार आदि ही खाया जाता है। कभी-कभी विपत्ति काल में तो तूंबे के बीज जो अति कड़वे होते हैं उन्हें भी युक्ति द्वारा मीठे बनाकर खाये जाते हैं। दूध, दही, घी के लिये गऊवें ही ज्यादा पालते हैं उन्हीं का अमृतमय दूध पीते हैं तथा ये लोग अपने हक की कमाई करके जीवन निर्वाह करना ही पसन्द करते हैं। जो इनके अपने अधिकार में खेत जमीन जायदाद है, उसी में ही सीमित रहकर परिश्रम करके अन्न उपजाते हैं। दूसरे के खेत के फल की आशा नहीं करते, अपनी सीमा में ही रहते है तथा कूवे का जल ही पीते हैं। यहाँ पर जल बहुत ही गहरा भूमि के नीचे पाताल का है। जल जितना गहरा होगा उतना ही लाभदायक होगा। ऐसा यह दिव्य देश है तथा इसी प्रकार के लोग यहाँ पर निवास करते हैं।

सुर नर देवा बंदी खाने, तित उतरिया तीरूं।
भोलब भालब टोलम टालम, ज्यूं जाणों त्यूं आणों।

देवता, नर तथा नरों के भी देवता राजा, इन्द्र तथा महाराजा सभी लोग कर्मों के बन्धन में जकड़े हुए हैं। ये सभी अपने अपने कर्मों के अनुसार ही उच्च पदवी को प्राप्त हुए हैं किन्तु इनको भी तो कर्म भोगों की समाप्ति पर वापिस सामान्य धरातल पर ही आना पड़ेगा। ये लोग उच्च पदवी प्राप्त करने से पार तो नहीं उतर सकते। सदा-सदा के लिये जन्म-मरण के चक्र से छूट कर मुक्ति को प्राप्त करने के लिये तो उन्हें भी इसी कर्म भूमि में ही आना पड़ेगा। पार तो यहाँ पर आकर ही उतरा जा सकता है क्योंकि समुद्र में छलांग लगाने के लिये यही मरू देश ही किनारा है। इस घाट पर आये बिना तो नौका ऊपर बैठ ही नहीं सकता। तो फिर पार कैसे उतर सकते हैं? यहाँ के लोग भोले-भाले सीधे

सरल हृदय वाले हैं। ऐसा ही समझकर मैं यहाँ पर आया हूँ तथा ऐसे लोग ही मुक्ति व ज्ञान के अधिकारी भी होते हैं। ये लोग प्रह्लाद पंथी भी है। किन्तु अब अपने मार्ग को भूल गये हैं इन्हें पुन: सचेत कर देना मेरा कर्तव्य है।

मैं वाचा दई प्रहलादा सूं, सुचेलो गुरु लाजै।

क्रोड़ तेतीसूं बाड़े दीन्ही, तिनकी जात पिछाणों।

क्योंकि मैंने सतयुग में प्रह्लाद भक्त को नृसिंह रूप धारण करके वचन दिया था कि मैं तुम्हारे बिछुड़े हुऐ तेतीस करोड़ जीवों का उद्धार करूँगा। इससे पूर्व पांच, सात, नव इस प्रकार तीनों युगों में इक्कीस करोड़ तो पार पहुँच गये है। अब शेष बचे हुए बारह करोड़ का उद्धार करना मेरा कर्तव्य हो जाता है। यदि मैं कर्तव्य का पालन न करूँ, तो अच्छा शिष्य तथा सद्गुरु दोनों को ही लज्जित होना पड़ता है। पहले तो दोनों ने वचन कह दिया, किन्तु अब निभा नहीं पा रहे हैं। वे बारह करोड़ यत्र-तत्र इस मरूभूमि में ही विशेष रूप से बिखरे हुऐ हैं, उनकी जाति को मैं पहचानता हूँ, उनको खोज-खोज कर पार पहुँचाना है तभी मैं शिष्य प्रहलाद के ऋण से उऋण हो सकूँगा।

इसलिये हे महारानी! उन प्रह्लाद के बाड़े के तेतीस करोड़ भक्तों का उद्धार समय-समय पर मैंने किया है। इस कर्तव्य के लिये मुझे कष्ट भी उठाना पड़ा है। तो भी हम लोग मर्यादा के पक्के होने से हमारे सामने कष्ट भी घुटने टेक देता है।

-साभार 'जम्भसागर'

सहज सेवा से प्राप्ति

आज चारों ओर देखते हैं तो बड़े-बड़े नामचीन सिद्ध पुरुषों की महिमा सुनने को मिलती है। बड़े-बड़े मठ आश्रम बनाए, भांति-भांति के श्रृंगार किये हुए धर्म की चमक-दमक वाले सिद्ध प्राप्त पुरुषों की बातों में दम नहीं है। वे बातें तो बड़ी-बड़ी वैराग्य की बताते हैं और पदार्थों व भोगों को देखकर उनकी जीभ लपलपाने लगती है। जो सच्चा वैराग्यवान होता है उसकी दृष्टि निराली होती है वह जिधर से निकलता है उधर ही बड़ी मस्ती लहराने लगती है। क्योंकि वैराग्य की बात रागी के समझ में कैसे आए संत कहते हैं।

आदि अविद्या अटपटी घट-घट बीच अड़ी। कहो कैसे समझाइए यहां कुएं भांग पड़ी॥

अर्थात् जो बड़े-बड़े वैरागी दिखते हैं वे सत्य में वैरागी होते ही नहीं है। आदिकाल से वैराग्य की परिपाटी और परिभाषा उल्टी पड़ी हुई है। क्योंकि जो घट-घट में निवास करता है उसे किसी दूसरे के साथ ढूंढने का प्रयास करना तथा बताना उल्टा ही काम होगा। वह तो सहज ही प्राप्त है। पर यह समझाएं किस किसको ? क्योंकि यहां तो सभी के समझ में यह अविद्या घर कर गई है। जहां दिखता है वैराग्य वहां पर नहीं है, वहां पर तो अधिकांश पाखंड ही है। प्रभु स्मरण के छोटे-छोटे प्रयास है और जो अपने हाथ से छोटे-छोटे सेवा कार्य करते हैं। मीठी वाणी बोलते हैं। किसी को कष्ट नहीं देते हैं, दया भाव को प्रबल रखते हैं। लोभ मोह से दूर रहते हैं। सच्चाई के रास्ते चलते हैं। परमात्मा से प्रीत करते हैं। यही मार्ग और यही विद्या सही में वैराग्य है। ऐसे लोगों की जगत् में हंसी उड़ाई जाती है। परंतु उनको इसकी कोई चिंता नहीं होती है। श्री गुरु जांभोजी महाराज सबदवाणी में कहते हैं कि-

रण घटिये के खोज फिरंता। सुण सेवंता खोज हस्ती को पायो॥ लूंकड़िये के खोज फिरंता। सुण सेवंता खोज सुरह को पायो॥
मोथड़िये के गूंढ खणंता। सुण सेवंता लाधो थान सुथानो॥ रांघड़िये को घाट घड़ंता। सुण सेवंता कंचन सोनो डायो॥
हस्थि चड़ंता गेंवर गुड़ंता। सुनहीं सुनहां भूंकत कायों॥

परमात्मा के अनुभव तो छोटे प्रयास से भी बड़ी प्राप्ति करवाते हैं। ऐसे प्रयास दिखाई तो छोटे देते हैं परंतु प्राप्ति बड़ी होती है। जैसे कोई खरगोश के पदचिह्नों को खोजता दिखाई देता है और उसे हाथियों का झुंड मिल जाए। जैसे कोई लोमड़ी के पदचिह्न खोजता दिखाई दे रहा हो और उसे गायों का झुंड मिल जाए। जैसे कोई घास खोदता दिखाई देता हो और उसके इस प्रयास में महल बन जाए और जैसे कोई कथीर के बर्तन बनाने का प्रयास करता दीखता हो और उसके सोने के बर्तन बन जाए ऐसा ही कुछ चमत्कार है इन छोटी-छोटी सेवाओं और भावों का। सही में जो वैरागी होते हैं वह कुछ खास करते दिखलाई नहीं पड़ते हैं तथा संसार में उलझे लोग उनको तथा उनकी क्रियाओं को समझ नहीं पाते और उनके बारे में बुरा भला कहते रहते हैं। परंतु वह तो हाथी के सवार की तरह इस संसार में विचरण करते रहते हैं। जिस सवार पर चाहे कितने ही कुत्ते भौंकते हो वह उनसे ना घबराता है ना ही उस पर उन कुत्तों के भौंकने का प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार सच्चा व बैरागी संसार में रहता है। अत: परमात्मा के अनुभव की विद्या अटपटी है यह अज्ञानियों के समझ से परे हैं जो इसे सांसारिक महत्व से देखते है, उनको यह बहुत तुच्छ लगती है और उनको सच्चे वैरागी भी सांसारिक दृष्टि में तुच्छ दिखाई देते हैं। त्रुटियों के लिए क्षमा याचना।

-गोपाल बेनीवाल, जांगलू, मो. 9414973029

संपादकीय

नूतन वर्ष अभिनंदन

नव वर्ष 2022 दस्तक दे चुका है। नए वर्ष के आगमन के साथ ही सबकी जिज्ञासाएं, आकांक्षाएं, उत्साह व रोमांच सातवें आसमान पर है। सबमें एक तरह से नई उर्जा व जोश का संचार है। भावनाएं हिलोरे ले रही हैं, कुछ कर गुजरने की। कुछ नया व अनोखा किया जाए ताकि पहचान में विशिष्टता परिलक्षित हों। विविधताओं से सजे सपने, इच्छाएं व तमन्नाओं को नया आयाम देने के लिए प्रयासों को पंख लगाने की कोशिश प्रारंभ हो चुकी है। माना जाए तो मोटे तौर पर ये ही वो सब हैं जिनसे प्रेरित जीवन आगे बढ़ता रहता है। हालांकि जीवन इतना सीधा- साधा व सरल नहीं है। जीवन के गूढ़ रहस्य पर अपनी टिप्पणी में अमेरिकन कवि रॉबर्ट ली का कहना है- 'मैं अपने लंबे-चौड़े संघर्षों और सफलताओं को केवल तीन शब्दों में समेट सकता हूं, और ये तीन शब्द हैं- जीवन चलता रहता है।' कुछ इस तरह से अगर हम आने वाले नव वर्ष और बीते सालों का विश्लेषण करें तो सामने आता है कि कुछ अच्छी-बुरी बातों के अनुभवों के साथ जीवन चलायमान रहा है। हर वर्ष में हम कुछ नए संकल्प व निश्चय लेते हैं जो उस वर्ष में कुछ पूरे व कुछ अधूरे रह जाते हैं और मन ये मान लेता है कि कोई बात नहीं आगे फिर ज्यादा गंभीरता से कोशिश करेंगे उन छूटी और अधूरी रह गई चीजों को मंजिल तक ले जाने में।

इन्हीं विचारों के संदर्भ में जांभाणी समाज के परिदृश्य की विवेचना करें तो बीते साल में समाज में कई रचनात्मक व सकारात्मक प्रयास हुए जो यह जाहिर करते हैं कि समाज जांभाणी परंपरा के अनुरूप आगे बढ़ रहा है। इन प्रयासों का सिलसिलेवार वर्णन करें तो उसमें अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा निज मंदिर मुकाम में आयोजित होने वाली प्रात:कालीन व सायंकालीन हवन व आरती के लाइव प्रसारण की व्यवस्था, जांभाणी साहित्य अकादमी द्वारा कोरोना काल के बावजूद जांभाणी साहित्य के विविध पक्षों पर वर्चुअल माध्यम से चर्चा आयोजित किया जाना, अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा द्वारा वन्य जीवों के रक्षण बारे सामाजिक व प्रशासनिक स्तर पर प्रयास किए जाना, प्रमुख संतों व महात्माओं द्वारा कथा व सत्संगों में जांभाणी संस्कारों व परंपराओं का व्यापक स्तर पर प्रसारण मुख्य हैं। सामाजिक संस्थाओं के अलावा व्यक्तिगत स्तर पर भी समाज सुधार व वन्य जीव एवं पर्यावरण क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए गए जिनमें मुख्यत: सेवानिवृत मण्डी सुपरवाइजर सुभाष ऐचरा द्वारा जांभाणी शिक्षाओं जिनमें मुख्यतया जल एवं पर्यावरण संरक्षण के संदेश को देश भर में प्रचारित करने के लिए साईकिल पर 8100 किलोमीटर की यात्रा, जोधपुर के एकलखोरी गांव के रणजीता राम उर्फ राणाराम द्वारा अब तक 50 हजार से ज्यादा वृक्ष लगाना तथा सहायक पुलिस निरीक्षक तेलूराम द्वारा पौधारोपण तथा वन्य जीवों के बचाव में गंभीर प्रयास शामिल हैं। लेखक आचार्य कृष्णानंद, डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई, इंजीनियर आर.के. बिश्नोई, डॉ. बी.एल. सहू, प्रवीण धारणीया, विनोद जम्भदास, प्रो. पुष्पा बिश्नोई, डॉ. वीना बिश्नोई, नेहा बिश्नोई, प्रवक्ता कृष्ण कुमार, पृथ्वी सिंह बैनीवाल, उदयराज खिलेरी, डॉ. किशनाराम बिश्नोई, सुमन बिश्नोई, डॉ. राजाराम अग्रवाल, बनवारी लाल एडवोकेट, बिन्दु बिश्नोई, डॉ. बृजेन्द्र सिंहल, संगीता बिश्नोई आदि नियमित रूप से अमर ज्योति पत्रिका के साथ-साथ अन्य जनमाध्यमों के द्वारा जांभाणी साहित्य के प्रचार-प्रसार में योगदान दे रहे हैं। इतना कुछ होने के बावजूद दुर्भाग्यवश संस्कारिक दृष्टि से समृद्ध बिश्नोई समाज में कुछ बुराइयां व विकृतियां भी घर कर रही हैं। आए दिन विभिन्न आपराधिक गतिविधियों में समाज से जुड़े लोगों के नाम आने से समाज की साख को गहरा धक्का पहुंच रहा है जो अति चिंतनीय है। अत: नव वर्ष के अवसर पर सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं तथा जागरूक नागरिकों से अपेक्षा रहेगी कि वे रास्ते से भटके ऐसे लोगों को सामाजिक मान्यताओं, जांभाणी शिक्षाओं व संस्कारों के प्रति जागरूक व प्रेरित करेंगे ताकि देश व दुनिया में समाज की विशिष्ट पहचान कायम रहे। इन्हीं आशाओं व उम्मीदों के साथ 'अमर ज्योति' पत्रिका परिवार नूतन वर्ष पर अपने सभी लेखकों, पाठकों व हितधारकों के जीवन में सुख-समृद्धि व सर्वदा खुशहाली की मंगल कामना करता है।

साखी — हरजी दास कृत साखी 'छन्दां' की

देव तणी परमोध में, कसवैं समो न कोय।
सेंसो तो सारा सिरै, अरू स्वर्गा में होय।1।
अरज करूं गुरुदेव जी, और न करसी कोय।
म्हां समान कोई मानवी, जग मां देख्यो न लोय।2।
सैंसो तो सतगुरु सूं कहै, मांगे सीख जमात।
घर आया नै दीजिये, सुण सैंसा आ बात।3।
जोखाणी जोखो घणों, सुण ले साची सीख।
घर आया नै दीजिये, भाव भले सूं भीख।4।
बार बार म्हांसो कही, एक बात सौ बार।
मेरे घर को जगत् गुरु, जाणें सब संसार।5।
आंजस कर सैंसे कही, दइय न आई दाय।
सतगुरु आप पधारिया, पत्री लई उठाय।6।
अवाज करी हरि आवंता, हाजर है सो लाव।
सतगुरु उभा आंगणें, देखण आया भाव।7।
नारी सारी आंगणें, बैठी जोड़या थाट।
भीख न घातै भाव सूं, ऊभा जोवे बाट।8।
लैणायत ज्यूं क्यूं खड़्यो, समझायो सौ बार।
कह्यो न मानें श्यामियो, हैं तो बड़ो गिंवार।9।
जर झाली ठमको दियो, नारी कियो जोर।
भनाय चल्या घर आपणें, पत्री केरी कोर।10।
परभाते सैंसो आवियो, देव तणै दीवाण।
सुण सैंसा सतगुरु कह, ऐ सहनाण पिछाण।11।
एह पटंतरा सांभलो, सैंसो गयो सरमाय।
आंख भींच भूं में पड़्यो, धरती में रहूं समाय।12।
मूंधे मूंडै पड़ रहयो सांभल सकै न जोय।
इण खूंदी खूंद किया घणां, अरज करो मत कोय।13।
साथरिया कह श्याम सूं, अरज सुणो सुरराय।
जे थे छोड़ो हाथ सूं, जड़ा मूल सूं जाय।14।
उठ सैंसा सतगुरु कहै, गर्व न करो लिंगार।
जन हरजी ऐसे कहै, सांच बड़ो संसार।15।

भावार्थ– एक बार गुरु जम्भेश्वर जी अपनी शिष्य मण्डली सहित भ्रमणार्थ प्रस्थान किया था। एक रात्रि जांगलू की साथरी में निवास करते हुए दूसरी रात्रि नाथुसर के पास झींझाले धोरे पर निवास किया था। वहीं प्रात:काल नाथुसर का सैंसा भक्त जो कस्वां गोत्र का था वह भी अपने मित्र–संबन्धियों सहित दर्शनार्थ झींझाले आया था। आगे साखी में बतलाया है–

देव जाम्भोजी के दरबार में सैंसोजी आये थे। उनके जैसा अन्य भक्त और नहीं था। सैंसो तो शिरोमणि भक्त था। सैंसे की जाम्भोजी ने स्वयं भूरि–भूरि प्रशंसा भी की थी। यह भी कहा था कि यह भक्त निश्चित ही स्वर्ग का अधिकारी है।1। गुरु के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर सैंसे ने भी यही कहा कि हे देव! मैं आपसे विनती कर रहा हूं ऐसी विनती प्रार्थना जप अन्य कोई नहीं कर सकता। वास्तव में मेरे जैसा मानव और कोई नहीं होगा।2। सत्संग पूर्ण हुआ संध्या बेला हो गई सभी ने अपने अपने घरों को जाने की आज्ञा मांगी तथा सैंसे ने भी हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हुए कहा कि हे देव! मुझे क्या आज्ञा है? गुरुदेव ने कहा कि घर आये हुए सुभ्यागत का आदर सत्कार करना यही तुम्हारे लिये आज्ञा है।3। हे जोखाणी! इसी बात की तुम्हारे घर पर कमी है। इसकी पूर्ति करना ही सच्ची शिक्षा है।4। सैंसे ने कहा–हे देव! एक ही बात यह आप मुझे बार–बार क्यों कहते हो। मेरे घर को तो सम्पूर्ण संसार जानता है। मैं घर आये हुए सुभ्यागत का सत्कार तन–मन–धन से करता हूं।5। यह बात सैंसे ने बड़े ही अहंकार से कही थी। देवजी को अच्छी नहीं लगी थी। ऐसी गर्व पूर्ण वार्ता कहकर सैंसा तो अपने घर चला गया। पीछे–पीछे श्रीदेवजी ने अपनी पत्री उठा ली और वेश बदल लिया और सहसा सैंसे के घर पर पहुंच गये।6। घर में पहुंचते ही हरि ने भिक्षा के लिये उच्च स्वर से आवाज लगाई और कहा कि जो भी भोजन है वह लाकर देवें। ऐसा कहते हुए दरवाजे पर खड़े हो गये। सैंसा का भाव देख रहे थे अभी–अभी अपनी बड़ाई करके आया है, इसके अहंकार का खंडन करना चाहिये।7। घर की सभी छोटी–बड़ी महिलाएं बैठी बातें कर रही थी। कोई

भिक्षुक आया है, इस बात की उन्हें कुछ भी परवाह नहीं है। इसलिये भिक्षा नहीं दे रही है। देवजी खड़े हुए प्रतीक्षा कर रहे हैं।8। एक प्रधान नारी ने यह कहते हुए नाराजगी प्रकट की कि ऐसे खड़ा हुआ क्या देख रहा है मानो कर्जदार कर्जा मांगने आया है। इसे कितनी बार समझाया है किन्तु यह मानता ही नहीं है। सैकड़ों बार इसे यहां से जानने के लिये कहा किन्तु यह बड़ा ही हठीला है, मानता ही नहीं है न जाने यह कैसा स्वामी फकीर है। यह तो निपट मूर्ख गंवार मालूम पड़ता है।9। अन्त में जब वहां से नहीं हटे, तब हार करके कड़सी-जरिये में बची-खुची ठंडी बासी खिचड़ी लेकर आयी और उन्हें देने लगी किन्तु वह तो कड़सी के चिपट गई थी छूट नहीं रही थी। उसे छुटाने के लिये जोर से पत्री पर चोट मारी, तब पत्री एक तरफ से खण्डित हो गई। इस प्रकार से खण्डित पत्री और बासी भोजन लेकर चल पड़े।10। चलते हुए यह सवाल भी किया कि रात्रि में सर्दी अधिक है इसलिये ओढ़ने के लिये वस्त्र भी दीजिये इस सवाल को सुनकर एक फटा पुराना गूदड़ा पकड़ा दिया और वहां से रवाना कर दिया। दूसरे दिन प्रातः काल ही सैंसा अपनी मण्डली सहित वहां झींझाले पर पहुंच गया और वहीं पर दान की वार्ता चली, तब सैंसे ने बड़े ही गर्व के साथ कहा कि मैं दान देता हूं। मेरे घर को सारा संसार जानता है। तब गुरुदेव ने सैंसे के घर पर टूटा हुआ पात्र एवं भिक्षा का अन्न दिखाया और कहा कि यही तेरे घर की भिक्षा एवं फटा मैला वस्त्र है। इसकी पहचान कर ले।11। ये दोनों वस्तुएं अपने ही घर की देखकर सैंसा शर्मिन्दा हो गया। आंखें बन्द कर ली और भूमि पर उल्टे मुंह गिर पड़ा। विलाप करते हुए कहने लगा- इस समय यदि धरती फट जाती तो अन्दर समा जाता।12। सैंसा मूंधे मुंह पड़ा रहा सामने भी नहीं देख सका। कहने लगा- यह सैंसा हत्यारा है। ऐसी हत्याएं न जानें मैंने कितनी की है। हे लोगों! श्री देव जी से मुझे क्षमा करने के लिये प्रार्थना न करो। मैं प्रार्थना करने के तथा क्षमा करने के योग्य भी नहीं हूं।13। फिर भी साथियों ने श्री देव से प्रार्थना करते हुए कहा कि हमारी अर्ज सुनो। यदि आपने इस समय सैंसे को नहीं सम्भाला तो यह जड़ मूल से ही समाप्त हो जायेगा। इसलिये इस दीन पर कृपा करो।14। तब गुरुदेव ने कहा सैंसा! खड़े हो जाओ। किन्तु फिर कभी इस प्रकार का अहंकार नहीं करना। हरजी कहते है कि संसार में सत्य ही बड़ा है। इस प्रकार से सैंसे के अहंकार को मिटाया था। वह खण्डित भिक्षा पात्र अब भी जांगलू के मन्दिर में रखा हुआ है। इस समय भी गुरुदेव को भिक्षा के रूप में उस पात्र को घी से भरते है।15।

साभार- **साखी भावार्थ प्रकाश**

मंत्री जी की पावर (लघुकथा)

वो सब्जी के ठेले को धक्का मारता हुआ मुख्य सड़क से चौराहे पर पहुंचा ही था कि पीछे से उसकी पीठ पर एक जोरदार डंडा पुलिस के सिपाही ने मार दिया।

'मेरा क्या कसूर माई-बाप।' वो एक हाथ से अपनी पीठ सहलाता हुआ बोला।

'सारा शहर बंद है मंत्री जी के शोक में और तू साला दुकान लिए घूम रहा है।' सिपाही आंखें दिखाते हुए बोला।

'मुझे इस खबर की कोई जानकारी नहीं थी, मैं... मैं! वापिस घर जाता हूं।' वो गिड़गिड़ाया।

उसने सब्जी का ठेला घर की ओर मोड़ दिया। वो रास्तेभर सोचता रहा... तीन महीने पहले मंत्री जी रैली निकाले थे, तब भी ऐसे ही सड़क किनारे पुलिस ने उसे मारा और आज ससुरा निपट गया तब भी पुलिस पीट रही है। भई मंत्री जी तो मरने के बाद भी पावर में रहते हैं। उन्हें क्या फर्क पड़ता है जीने-मरने से।

वह अकेला बुदबुदाता हुआ घर पहुंच गया।

- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा
ग्राम रिहावली, डाक घर तारौली गुर्जर,
फतेहाबाद, आगरा, उत्तर प्रदेश-283111

जाम्भाणी साहित्य के विभिन्न पक्ष

गुरु जाम्भोजी की वाणी एवं उनके कार्यों का व्यापक प्रभाव तत्कालीन समाज पर पड़ा था। बिश्नोई लोगों एवं कवियों ने उनके दृष्टांतों को पौराणिक, ऐतिहासिक एवं लौकिक रूप में समझाने के लिए अनेक लोककथा काव्यों का निर्माण किया था। उसकी परिणती हमें समाज के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास में देखने को मिलती है। गुरु जाम्भोजी ने भी अपनी वाणी में अनेक पौराणिक प्रसंगों का उल्लेख किया था।

(1) **पौराणिक पक्ष**– गुरु जाम्भोजी के जन्म से संबंधित बिश्नोई समाज में अनेक धारणाएं एवं लोक कथाएं हैं। उनमें एक पौराणिक कथा यह भी है कि गुरु जाम्भोजी ने प्रह्लाद को बारह करोड़ जीवों का उद्धार करने का वचन सतयुग में दिया था। इस वचन की पालनार्थ गुरु जाम्भोजी इस युग में आये थे। किन्तु ऐसे कथा काव्यों का कोई ऐतिहासिक साक्ष्य उपलब्ध नहीं होता है। प्रह्लाद संबंधी कथाओं में बिश्नोई कवि केसोजी, हरचन्दजी ढूकिया, ऊदोजी अडीग, साहबरामजी राहड़, लक्ष्मण एवं दादूपंथी जनगोपाल का विशेष योगदान है। प्रह्लाद संबंधी बिश्नोई कथा काव्य में वही पौराणिक कथा है, जिसके अनुसार प्रह्लाद को होलिका अग्नि में लेकर बैठती है और वह बच जाता है। इन कथाओं से प्रह्लाद की दृढ़ता, सत्यवादिता एवं प्रेम का पता चलता है। बिश्नोई प्रह्लादपंथी नाम से भी पुकारे जाते हैं। हरिश्चन्द्र की सत्यवादिता को लेकर भी कथा काव्य लिखे गये हैं। गुरु जांभोजी की वाणी की अन्त: कथाओं के अनुसार प्रह्लाद भक्त को 33 कोटि लोगों के उद्धार का वचन दिया था। जिनका उद्धार 5 कोटि प्रह्लाद के साथ, 7 कोटि राजा हरिश्चन्द्र के साथ, 9 कोटि राजा युधिष्ठिर के साथ एवं 12 कोटि उनके स्वयं के साथ होगा।

भारतीय पौराणिक इतिहास में राम और कृष्ण दो प्रमुख स्तम्भ हैं। बिश्नोई कवि मेहोजी ने महात्मा तुलसीदास से पहले राजस्थानी में रामायण की रचना की थी। इसी तरह बिश्नोई कवि सुरजनजी पूनिया ने रामरासो (रामायण) राम संबंधी कथा काव्य की रचना की थी। इनमें राजस्थानी लोक जीवन की स्पष्ट छाप नजर आती है। कृष्णजी से संबंधित ब्याहलो श्रीकृष्णजी रो, रूकमणी मंगल तथा उनके पुत्र अनिरुद्ध को लेकर कथा उषा पुराण का निर्माण हुआ था। पाण्डवों से संबंधित कथा बहसोवनी, कथा सुरगारोहिणी, कथा भींव दुसासणी तथा कथा अहमणी भी बहुत प्रसिद्ध रही है। दसावतार संबंधी लोक कथाएं भी पौराणिक पृष्ठभूमि पर लिखी गई हैं। गुरु जाम्भोजी की वाणी में हमें अनेक पौराणिक नामों, घटनाओं, अन्त: कथाओं का उल्लेख एवं संकेत मिला है। इनमें प्रमुखत: विष्णु, शंकर–पार्वती, बलि, शिवि, दधिची, चाणूर, सुकेशी, सहस्रार्जुन, प्रह्लाद, हरिश्चन्द्र, दशरथ, राम–सीता, लक्ष्मण, हनुमान, परशुराम, रावण, कुम्भकर्ण, महिरावण, सीता–स्वयंवर और हरण, लंका दहन, कृष्ण गोपी, रूक्मिणी, देवकी, कंस, कौरव–पांडव, कर्ण, दुर्योधन, युधिष्ठिर, विदुर, हस्तिनापुर, समुद्र मंथन, सुमरू, उभयगिरि, गंगा आदि का विशेष उल्लेख हुआ है। इन पौराणिक नामों, स्थानों, घटनाओं को लेकर बिश्नोई संतों ने अनेक कथा काव्यों का सृजन किया था। बिश्नोई समाज में प्रचलित पौराणिक कथाओं का साक्ष्य बिश्नोई समाज की परम्पराओं एवं रीति–रिवाजों में मिलता है। इसलिए इनका ऐतिहासिक महत्व भी है। इन कथाओं के माध्यम से गुरु जांभोजी व उनके अनुयायी संतों ने समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का सहज मार्ग समझाया था। उदाहरणार्थ– गुरु जांभोजी की वाणी में ऐसी अनेक अन्तर कथाओं की ओर संकेत किया गया है। गुरु जाम्भोजी के एक शब्द में समाज में प्रचलित 18 लौकिक दोषों का वर्णन किया गया है। एक–दूसरे शब्द में उन्हीं दोषों को दूर करने का वर्णन किया गया है। यही लौकिक दोष रूक्मिणी मंगल में भी बताये गये हैं। कथा काव्यों में विचारधारा एवं काल विशेष का ध्यान नहीं रखा जाता है। ये आवश्यकता विशेष की दृष्टि से समाहित होती रहती है। यही बिश्नोई लोक कथाओं का पौराणिक पहलू है।

(2) **ऐतिहासिक पक्ष**– बिश्नोई संतों द्वारा निर्मित इन कथा काव्यों में शासक वर्ग के अनेक विशिष्ट व्यक्तियों का वर्णन हुआ है। इन काव्यों से जोधपुर के राठौड़ों का गुरु जांभोजी से विशेष संबंध प्रगट होता है। इनमें सबसे प्रमुख

है- राठौड़ राव जोधा। साहबरामजी के अनुसार बिश्नोई पंथ की स्थापना के समय राव जोधा और उनके पुत्र बीका सम्भराथल आये थे। गुरु जाम्भोजी ने तब उन्हें बैरीसाल नगाड़े दिये थे। राव जोधा का पुत्र मेड़ता का दूदा जोधावत गुरु जाम्भोजी से पीपासर में मिला था। तब उन्होंने मेड़ता प्राप्ति का उसे आशीर्वाद दिया था। कवि हरिनन्द ने इसे गुरु जाम्भोजी का प्रथम पर्चा माना है। दूदा के भाई वरसिंह ने मेड़ता की स्थापना के बाद दूदा को रायण की जागीर देकर उसे अलग कर दिया था। वहां उसकी भेंट रास्ते में पीपासर गांव में गुरु जांभोजी से हुई थी।

कालान्तर में मेड़ता राव दूदा ने विजय किया था, यह इतिहास प्रसिद्ध है। राव दूदा को कृष्ण भक्त माना जाता है। उनकी पौत्री मीरा कृष्णभक्त थी। मीरा के पिता रतन सिंह, चाचा वीरम सिंह और उसकी दादी सभी वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। मीरा का विवाह राणा सांगा के पुत्र भोजराज से हुआ था। वहां भी शिव एवं वैष्णव धर्म का प्रचार था। ध्यातव्य है कि राणा सांगा और उनकी माता महारानी झाली भी गुरु जांभोजी की शरण में आये थे। इस बात के आधार पर कुछ लोग मीरा को गुरु जाम्भोजी की शिष्या मानते हैं। यह भी किवंदती है कि मीरा के गुरु रैदास नामक वैष्णव साधु थे। इसी बात को लेकर कुछ लोग मीरा का गुरु बिश्नोई संत रैदास धतरवाल को बताते हैं। परन्तु इस संबंध में बिश्नोई साहित्य में कोई पुख्ता प्रमाण नहीं मिले हैं। गुरु जाम्भोजी ने भी अपनी वाणी में कहीं मीरा का नाम नहीं लिया था।

कथा मेडता की में बताया गया है कि अजमेर के सूबेदार मल्लूखां ने सटौड़ों के भानजे टोडा के नेतसी सोलंखी को कैद कर लिया था। उसे छुड़ाने के लिए जोधपुर के राव सांतल तथा मेड़ता के राव दूदा आदि गये थे। उन्होंने थांवला गांव के पास काकोलाव तालाब पर डेरा किया था। उस समय गुरु जांभोजी थांवला में थे। राव दूदा के कहने पर राव सांतल गुरु जांभोजी से मिला था। गुरु जांभोजी हिन्दुओं को कोई वर देंगे, यह सुनकर मल्लूखां भी वहां आ गया था। कथा में देखिये-

राठौडा वन्दयौ विसन, चाल सुणी चहूं फेर।
कुण वर देसी हिंदवां, खान सुण्यो अजमेर॥

गुरु जांभोजी के प्रताप से नेतसी सोलंखी छूट गया था। तब उसने मद्य, मांस एवं शिकार का भी त्याग किया था। राव जोधा का पुत्र बीदा, बीदासर का राव था। वह बहुत वाद-विवाद करता था। उसने गुरु जाम्भोजी में आस्था रखने वाले मोती मेघवाल को कैद में डाल दिया था। गुरु जाम्भोजी ने मोती मेघवाल को बीदा की कैद से छुड़ाया था। राठौड़ों का पुरोहित मूला अपनी पत्नी के आचरण भ्रष्ट होने के कारण दु:खी था। वह भी अपनी समस्या के समाधान हेतु जांभोलाव तालाब पर गुरु जांभोजी से मिला था। जोधपुर के कुंवर मालदेव का भी लोहावट के जंगलों में गुरु जांभोजी से मिलने का उल्लेख मिलता है। इसी तरह राठौड़ों की खाप कान्हावत के उद्धरण कान्हावत भी गुरु जांभोजी को पाल चारण (पशु चराने) के समय मिला था।

ऐसा माना जाता है कि उद्धरण कान्हावत अपनी ऊंटनियों की खोज में संभराथल आया था। ग्वालों के कहने पर गुरु जांभोजी ने उसकी ऊंटनियां डाकुओं से वापिस दिलाई थी। बीकानेर के राठौड़ दर्शनार्थ संभराथल आए थे। राव बीका का पुत्र राव लूणकरण तो गुरु जांभोजी को बहुत मानता था। एक बार बीकानेर के राव लूणकरण एवं नागौर के मुहम्मद खां नागौरी में यह विवाद हो गया था कि गुरु जांभोजी हिन्दुओं के देव हैं अथवा मुसलमानों के पीर हैं। तब गुरु जांभोजी ने स्वयं इस बात का समाधान किया था। बिश्नोई कवि परमानन्द जी बणियाल ने भी अपनी साखी में बीकानेर के राव बीका, राव लूणकरण एवं राव जैतसी आदि का नामोल्लेख किया है। इसी तरह बीकानेर के कुंवर प्रतापसी के संदर्भ में भी गुरु जांभोजी ने एक सबद कहा था।

कथा जैसलमेर की से गुरु जांभोजी के छह राजाओं से संबंध प्रगट होते हैं। इनके अतिरिक्त कई और राव राजाओं की ओर भी संकेत किया गया है, जो उनकी शरण में आये थे। इस कथा से डिंगल के कवि तेजोजी चारण का भी पता चलता है। रावळ जैतसी के अनुरोध पर लक्ष्मण और पाण्डू गोदारा बिश्नोई पंथ के प्रचार के लिए जैसलमेर के गांव खरींगा में रहने लगे थे। कथा चित्तौड़ की से पता चलता है कि कन्नौज (उ.प्र.) के आदू गांव के लादिया (पशुओं पर सामान लादने वाला) बनिये सौदा करते हुए चित्तौड़ आए थे। वहां उन्होंने क्रय-विक्रय किया, लेकिन चुंगी देने से इंकार किया था। उन्होंने राणा सांगा को गुरु

जांभोजी के पंथ के विषय में बताया था। उन्होंने चुंगी के बदले अपना आत्म बलिदान देने की धारणा को प्रगट किया था। उन्होंने बताया कि मारवाड़ आदि राज्यों में गुरु जांभोजी के शिष्यों को चुंगी नहीं देनी पड़ती है। राणा सांगा की मां महारानी झाली ने सभी बातें जानकर उन्हें बैलों संबंधी एक चारागाह दिया था। कथा काव्य का एक मूल छंद देखिये –

सुत सांगो झालीजी माय, रायसल वरसल आया राय।
चलू लियो विसनोई किया, गुरु वायक माथे वंदिया॥

इसी प्रसंग में गुरु जांभोजी ने एक सबद भी कहा था। कथा सिकन्दर की, से दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोदी का गुरु जांभोजी से संबंध का पता चलता है। कथा के अनुसार एक बार गंगा पार के बिश्नोई गुरु जांभोजी के दर्शनार्थ संभराथल जा रहे थे। उन्होंने दिल्ली में हासम-कासम नामक मुसलमान दर्जियों के घर के सामने रात्रि को विश्राम किया था। रात्रि जागरण में उनके प्रवचनों को सुनकर वे दर्जी भी उनके साथ संभराथल चले गये थे। वहीं पर उन्होंने गुरु जांभोजी से ज्ञानोपदेश ग्रहण किया था और बिश्नोई पंथ में दीक्षित हो गये थे। जब वे दिल्ली आये तो बादशाह को इस बात का पता चल गया था। बादशाह सिकन्दर लोदी ने उन्हें कैद में डाल दिया था। गुरु जांभोजी अपने शिष्य रणधीर जी बाबल के साथ दिल्ली गये थे। गुरु जांभोजी ने हासम-कासम को बादशाह की कैद से छुड़ाया था। इस समय गुरु जांभोजी और बादशाह में कुछ संवाद हुए थे। साहबरामजी राहड़ के प्रसिद्ध ग्रंथ जंभसार की अनेक कथाओं में भी मुल्तान के सधारी मुल्ला, कर्नाटक के शेख सद्दो, लखनऊ के नवाब स्वान्तीशाह एवं शेख मनोहर (मुनव्वर) आदि का गुरु जांभोजी से संबंध बताया गया है। ऐसे सभी संबंध ही बिश्नोई संतों की कथा काव्यों के ऐतिहासिक पक्ष हैं।

(3) लौकिक पक्ष – लौकिक पक्ष को प्रगट करने वाली संत कवियों की अनेक लोक कथाएं हैं, जैसे आतिथ्य सत्कार की कथा (सैंसे जोखाणी की कथा), चोरी न करने की कथा (रावण गोविन्द की कथा), घमण्ड का त्याग करने की कथा (शेख मनोहर की कथा), लक्ष्मण को वनवास कथा, विष्णु जन का महत्व, हक की रोटी खाना, कुंआ झांकना आदि। इन कथाओं से गुरु जांभोजी के जीवन पर सम्पूर्ण रूप से प्रकाश पड़ता है और बिश्नोइयों की जीवन पद्धति का पता भी चलता है। इन कथाओं के माध्यम से ऐसे अनेक व्यक्ति प्रकाश में आये हैं, जिनका समाज में विशिष्ट स्थान रहा था। इनसे साधारण गृहस्थ एवं किसानों पर भी समीचीन प्रकाश पड़ता है। ये कथाएं गद्य एवं पद्य में हैं।

बिश्नोई संत कवि ऊदोजी नैण एवं लक्ष्मण गोदारा, कुलचन्दराय अग्रवाल, बाजोजी तरड़, रावण तथा गोविन्द झोरड़, पूल्होजी पंवार, पूरबा, नागौर का रामा सुराणा, सैंसो जोखणी, ऊदो अतली, मंगोलाव और लाहणी, जांगलू का वरसिंह बेनीवाल आदि की कथाओं से योग संबंधी जानकारी मिलती है। जंभसार में प्रमुख चारण कवि तेजोजी, अल्लूजी, कान्होजी, कोल्हजी और कील्होजी आदि के बारे में भी लौकिक कथाएं हैं। तेजोजी तो गुरु जांभोजी के साथ जैसलमेर गये थे, जिसका पता लोक कथनों से ही चलता है। वंशावली लिखने वाले आसनोजी भाट, प्रसिद्ध गायक आलमजी एवं साल्होजी के बारे में भी लौकिक कथाएं प्रचलित हैं। फलौदी के लूंका एवं खैराज डाकू थे। गुरु जांभोजी की शरण में आने के बाद वे सदाचारी बन गये थे। कालान्तर में खैराज ने गोरक्षा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग किया गया। इन सब बातों का पता कथा काव्यों से चलता है। इसी तरह रोटू के साणियां भूत का गुरु जांभोजी की शरण में आने का और बाद में सिद्ध बनकर समेला (मेवाड़) में लौट जाने का उल्लेख हुआ है। मुसलमानों में हासम-कासम दर्जियों के विषय में लोक कथन प्रचलित है। इनमें प्रमुख थे- समसदीन (समशुद्दीन), अमीयांदीन, दीन मुहम्मद, दीन सदरदी, रहमत आदि। जांभाणी हस्तलिखित ग्रन्थों में भी एक अन्य काजी महमंद के पद भी मिलते हैं। ये सभी काजी मुसलमान सम्प्रदाय के कवि थे। इस प्रकार इन कथाओं से प्रमुख मुसलमान कवियों का पता चलता है। साधारण लोगों का गुरु जांभोजी से मिलना एवं उनसे दृष्टांत प्राप्त करना ही इन कथाओं का लौकिक पहलू है। यह पहलू ही इन कथाओं में जन साधारण का बड़ा मार्मिक चरित्र- चित्रण प्रकट करता है।

-डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई
बी-111, समता नगर, बीकानेर (राज.)
मो. : 9460002309

घट परमल की बास

सबदवाणी के सबदों की भूमिका और परिचय के रूप में आए प्रसंगों में से एक प्रसंग में जोधपुर नरेश जोधाजी का पुत्र वीदा जोधावत गुरु जाम्भोजी से पूछता है कि हे देव! आपके शरीर से सुगंध आ रही है क्या आपने शरीर पर कोई सुगन्धित इत्र आदि लगा रखा है? या नैसर्गिक रूप से ही आपकी देह सुवासित हो रही है, यह क्या भेद है आप बताने की कृपा करें। तब गुरु जाम्भोजी ने उसे जो सबद सुनाया वह सबदवाणी के तीसरे सबद रुप में प्रकाशित है–

मोरे अंग न अलसी तेल न मलियो, ना परमळ पिसायो।

जीमत पीवत भोगत विलसत दीसां नांहि, म्हापण को आधारूं।

संत परमानंददासजी ने अपने एक भजन में भाव व्यक्त करते हुए गुरु जांभोजी की दिव्य देह का वर्णन किया है –

आछो लागै जी महाराज, दरसण जाम्भोजी को।
जोजन धुन सबदन की सुणिये, घट परमल की बास।
चहूं दिस सन्मुख पीठ नहीं दीसै, कोड़ भाण प्रकाश।
चालत खोज खेह नहीं खटको, नहीं दीसे तन छांय।
तिसनां भूख नींद नहीं आवै, काम क्रोध घट नांय।
भगवीं टोपी भगवों चोलो, भलो सुरंगों भेस।
परमानंद की विणती, मोहे संगत पार उतार।

गीता में भगवान के जन्म और कर्म की दिव्यता का वर्णन है –

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्वतः।
त्यक्तवा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥ (गीता, 4/9)

भावार्थ– हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य (अलौकिक) हैं, इस प्रकार जो कोई वास्तविक स्वरूप से मुझे जानता है, वह शरीर को त्याग कर इस संसार मे फिर से जन्म को प्राप्त नही होता है, बल्कि मुझे अर्थात् मेरे सनातन धाम को प्राप्त होता है।

भगवान श्रीकृष्ण ने अपने जन्म और कर्म को दिव्य बताया है ऐसे ही भगवान के प्यारे भक्त जो हर समय भगवान का स्मरण करते–करते कीटभृंगी न्याय से भगवान से एकमेव हो जाते हैं उनकी भी प्रत्येक क्रियाएं दिव्य हो जाती है, उनमें अलौकिक सिद्धियां स्वतः ही आ जाती है। यहाँ तक की उनका शरीर भी दिव्य हो जाता है, उनके पास बैठने वाले उस शरीर से निकलती सुगंध को महसूस करते है, ऐसे असंख्य उदाहरण संतों के संस्मरणों में भरे पड़े हैं।

भारतीय ऋषि–मुनियों, संत, साधक, सिद्धों ने अनेक प्रकार की साधना पद्धतियों की खोज की है जिसके अनुसार चलकर जिज्ञासु अपनी योग्यता और लक्ष्य के अनुरूप तत्व प्राप्ति करता है। अणिमादिक अष्ट सिद्धियों और नौ निधियों का वर्णन भी हमारे धर्मग्रंथों में मिलता है। ऐसा भी हम पढ़ते और सुनते आए हैं कि योगी लोग योग की कठोर साधना के बाद अपनी पंचभौतिक देह को दिव्य कर लेते हैं जिसे बाद में इस शरीर को स्थिर रखने के लिए संसार के भौतिक पदार्थों की आवश्यकता नहीं होती और इस शरीर की आयु समाप्ति के बाद वह शरीर विलुप्त हो जाता है उसे जलाकर अथवा गाढ़कर संस्कार करने की आवश्यकता भी नहीं होती।आज से लगभग छः सौ वर्ष पूर्व हुए महात्मा कबीर के अद्‌भुत देहावसान की घटना हम इतिहास में पढ़ते आए हैं जो कि किसी आश्चर्य से कम नहीं है, हो सकता कुछ लोग इसे मानने के लिए तैयार भी न हो और इसे मानने वालों के पास कोई ऐसा साधन नहीं है जिससे वे न मानने वालों को मनवा सकें। परन्तु ऐसी ही एक घटना आज से लगभग चालीस वर्ष पूर्व घटी थी जिसका गवाह आज का आधुनिक युग और उसकी साधन सामग्री रही है।

दिल्ली–कोलकाता हाइवे पर कासगंज से एटा के बीच उत्तर प्रदेश के कासगंज जिले का एक कस्बा है गंज डुंडवारा। यहां एक गुरुद्वारे में एक संत रहता था, शरीर पर एक अंगोछा लपेट लेता और बाकी नंगे बदन रहता, दिन में एक बार नाममात्र का भोजन करता था। वह इस गुरुद्वारे में लगभग बारह–तेरह साल रहा। उस साधु ने कभी किसी को अपना परिचय नहीं दिया और साधु कहाँ से आया कहाँ का रहने वाला था किसी ने पूछने की जरूरत भी नहीं समझी। उसके पास बैठने वालों को उसके शरीर से सुगंध आती थी। सन् 1980 का रहा होगा जब उसकी उम्र सत्तर साल की थी, एक दिन उसने संगत से कहा की कल हमारी तैयारी है, हम यहाँ से चले जाएंगे, तो संगत ने पूछा की महाराज जी क्या बात है क्या किसी ने कुछ कह दिया तो उसने कहा नहीं हमें बुलावा आ गया है, कल हम इस

दुनियां से प्रस्थान करने वाले हैं। लोगों को आश्चर्य तो हुआ, फिर उन्होंने पूछा की आपका अंतिम संस्कार पास में बह रही गंगा में जल प्रवाह करके किया जाए या दाह संस्कार करके, तो उसने कहा की आपको इसके लिए कष्ट करने की आवश्यकता नहीं है, ये दोनों संस्कार ही नहीं होंगे, एक तीसरे प्रकार का होगा और वह मैं स्वयं ही करूंगा। जंगल में आग की तरह बात कस्बे में फैल गई। गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सावधानी रखी की कहीं गुरुद्वारे के अंदर लकड़ियां इक्कठी करके आग न लगा ले। दूसरे दिन मौके पर कस्बे के लोग देखने के लिए इक्कठा हुए, प्रेस और पुलिस भी आ गई। उस साधु ने ब्रह्म मुहूर्त में स्नानादि करके गुरुद्वारे में होने वाले नित्य पाठादि में भाग लिया और अरदास के बाद गुरु ग्रंथ साहिब के आगे दंडवत लेट गया, तभी उसकी नाभि से अग्नि प्रकट हुई, जिसे शास्त्रों में योगाग्नि कहा जाता है और योगियों द्वारा इस अग्नि में देह त्याग की कथाएं हम शास्त्रों में पढ़ते आए हैं। उस साधु की नाभि से निकली उस अग्नि से उसका पूरा शरीर प्रज्ज्वलित हो गया, कक्ष में दिव्य सुंगध और विलक्षण प्रकाश फैल गया, देखते ही देखते वह शरीर जल गया परन्तु न तो उसकी कणभर भस्म शेष रही और न ही उसके नीचे का कारपेट जला। दूसरे दिन सभी अखबारों ने चित्रों के साथ उस घटना को छापा, देश के प्रमुख अखबारों के फ्रंट पेज पर यह खबर छपी, विदेशी अखबारों ने भी उसे छापा। उस स्थान पर वह दिव्य सुगंध दो-तीन महीने तक रही। उस घटना को पढ़ सुनकर बड़े-बड़े संत वहां पहुंचे। प्रसिद्ध कथा वाचक ज्ञानी संत सिंह मस्कीन दो सप्ताह बाद वहाँ गए और सुगंध को महसूस किया और वहाँ कथा की, उन्होंने उस सुगंध को अविस्मरणीय बताया। ओशो रजनीश वहाँ पंद्रह दिन तक उस दिव्य सुगंध में भावमग्न रहे तथा बाद में अक्सर अपने प्रवचनों में वे घटना का जिक्र करते थे।

(ज्ञानी संत सिंह मस्कीन के प्रवचन पर आधारित)

इस घटना का साधु कोई बहुत बड़ा योगी रहा हो और जिसने योगबल से ऐसी स्थिति को प्राप्त किया हो ऐसा नहीं लगता, वह सारा दिन छोटी-बड़ी सेवा में लगा रहता, गुरु स्थान पर आने वाले श्रद्धालुओं से वार्तालाप करता और नाम जप करता। यहाँ यह बात विशेष ध्यान देने की है कि नाम जप से सब कुछ संभव हो सकता है, इसलिए जो योग की कठोर साधना नहीं कर सकते, उन्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं है। कलियुग के मनुष्य से यह अपेक्षा करना व्यर्थ है कि वह योगाभ्यास करे। पंद्रहवीं शताब्दी के भक्ति आंदोलन के सभी संतों, भक्तों, धर्म-उपदेशकों ने समवेत स्वरों में नाम जप की सर्वोच्च उपादेयता को प्रतिपादित किया है। गुरु जांभोजी ने कहा है कि नामजप के इतने लाभ है की हम इनकी गणना नहीं कर सकते- 'विष्णु भणंता अनंत गुणूं।' मनुष्य का लक्ष्य अपनी देह को दिव्य बनाना नहीं है, यह तो आध्यात्मिक साधन पथ पर लगने के बाद अपने आप ही दिव्य बन जाएगी, जैसे बस या ट्रेन में बैठने के बाद गंतव्य स्थान बिना किसी परिश्रम के आ ही जाएगा। मनुष्य को तो अपने इस जीवन को दिव्य बनाने की चेष्टा करनी चाहिए। देवताओं का शरीर दिव्य होता है और उन्हें मनुष्य के शरीर से दुर्गंध आती है जैसे कि मनुष्य को गंदी नाली में लेटने वाले सुअर की शरीर से आती है। पंचभौतिक तत्त्वों से निर्मित मनुष्य का शरीर जीवित रहने के लिए इन पांच तत्वों का सहारा लेता है और पृथ्वी पर उपस्थित स्वादिष्ट भोज्य, पेय पदार्थों का सेवन करता है परन्तु कुछ देर बाद ही यह शरीर उन सबका मल- मूत्र बना देता है, इसके नवम द्वारों से गंदगी प्रवाहित होती रहती है इसलिए यह देह देवताओं के लिए भौतिक रूप में हेय है परन्तु इसके आध्यात्मिक लाभ जो देवलोक में दुर्लभ है, उसके कारण देवता भी इस मनुष्य शरीर की प्राप्ति की कामना करते हैं।

सौभाग्य से यह शरीर हमें मिला हुआ है। उपरोक्त डुंडवारा वाली घटना का वर्णन करने का एकमात्र उद्देश्य भजन के प्रभाव को दर्शाना है। सांसारिक पदार्थों के संसर्ग और उनके भक्षण से जो इस देह में मलीनता आती है वह भगवान के भजन से दूर हो जाती है और जैसे-जैसे भजन बढ़ता है, वैसे ही यह शरीर भी दिव्य होता चला जाता है। तन और मन के दिव्य होने के बाद वह दिन दूर नहीं रहता जब साधक का भजन भगवान करते हैं-

कबीरा मन निर्मल भया, जैसे गंगा नीर।

पाछे लागा हरी फिरे, कहत कबीर॥

साधना की ऐसी उच्चतम स्थिति में पहुँचने के बाद साधक को भगवान की गर्ज नहीं रहती, वह तो परमानंद के सागर में डूब जाता है, उसकी गर्ज फिर भगवान करते हैं। ऐसे साधक के लिए गुरु जांभोजी महाराज कहते हैं कि उसके लिए कुछ कहना और सुनना शेष नहीं रह जाता है, उसको भगवद् प्राप्ति में देरी नहीं लगती- **'न यो गावै न यो गवावै, सुरगे जाते वार न लावै।'**

- विनोद जम्भदास कड़वासरा
गांव हिम्मतपुरा, तह.-अबोहर, जिला-फाजिल्का
(पंजाब) jambhdasvinod29@gmail.com

जम्भवाणी में युग चेतना

गतांक से आगे...

अपने याद न अवाई, जिनका आदि न अंत॥

हर किसी की निंदा न करें परन्तु हमारे भी सभी कृत्य ऐसे हो कि कोई दूसरा भी हमारी निंदा न करें, क्योंकि कुलीन पुरुष की निंदा और मृत्यु में से मृत्यु उत्तम है। जीवन को कलंकित करने वाली निंदा किसी भी प्रकार से अच्छी नहीं है। हमें धर्म का विचार हो या न हो मगर निंदा का भय अवश्य होना चाहिए। मानव जीवन का कर्तव्य है कि दूसरों की निंदा में अपना अमूल्य समय व्यतीत न करें। किसी की बुराई का चिंतन करने से हमारा चित्त भी मलिन हो जाता है। जाम्भोजी दूसरों की निंदा को इसीलिए वर्जित मानते हैं परन्तु अगर कोई निंदा करता है तो वह हमारा भला करता है।

निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटि छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय॥

हमारे दुर्गुणों को सुनकर हम उसे दूर करने का प्रयास करें। यही दुर्गणों से मुक्ति पाने का साधन है।

(ग) झूठ – जाम्भवाणी सात्विक जीवन व्यवहार के लिए झूठ को स्वीकृति नहीं देती। बिश्नोई धर्म के सत्रहवें नियम में जाम्भोजी ने झूठ का परित्याग करने पर जोर दिया है। महात्मा कबीर ने भी झूठ को पाप कहा है।

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जिनके हृदय साँच है, तिनके हृदय आप॥

झूठ बोलना तलवार के घाव की तरह है। घाव तो भर जाएगा, परन्तु उसका चिह्न बना रहेगा। संसार में जितने भी पाप हैं, उसमें झूठ पापों का सरदार है। स्वार्थपरता, निर्दयता, कुटिलता, कायरता आदि सभी दुर्गुण इसके संगी-साथी हैं। उपनिषद् में कहा गया है कि झूठ कभी श्रेष्ठ पद को प्राप्त नहीं होता। झूठ बोलने वाले मनुष्य से लोग उसी प्रकार डरते हैं, जैसे साँप से।

झूठ को इज्जत देकर अगर हम ऊँचा उठाते हैं तो उसकी ही ग्लानि से उतना ही कीचड़, उतना ही अनाचार इकट्ठा होता है। इसीलिए जाम्भोजी झूठ से परहेज रखने की सलाह देते हैं। जहाँ तक संभव हो जीवन में झूठ को स्वीकृति नहीं देनी चाहिए।

कागा काको धन हरे, कोयल काको देय।
मीठे वचन उच्चार करि, सबका मन हर लेय॥

जाम्भोजी ने वाणी की महत्ता को गहराई से समझा है। वे वाणी के उपयोग के समय सोच-समझकर बोलने का कहते हैं।

8) दुर्गुणों का परित्याग

जाम्भोजी ने मानव जीवन में दुर्गुणों के परित्याग पर बल दिया है। उन्होंने सामाजिक बुराइयों के प्रति अति संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाकर सामाजिक निर्मलता व दोष मुक्त के द्वारा समाज सुधार को महत्त्व दिया है। उनतीस नियमों के अन्तर्गत वे मानसिक विकारों को दृढ़ता पूर्वक परित्याग का उपदेश देते हैं।

क) चोरी – बिश्नोई धर्म पालन के पन्द्रहवें नियम में जाम्भोजी ने चोरी न करने की बात कही है। हमारे समाज ने अपने स्वार्थवश दूसरों को हानि पहुँचाना वर्जित माना है – यह अशोभनीय है। किसी की वस्तु की चोरी करना, उनका चोरी से उपयोग करना या ऐसा क्षुद्र विचार करना भी निंदनीय कृत्य है। ऋग्वेद में कहा गया है –

केवलादो भवति केवलारी।

अर्थात् जो अकेला खाता है वह चोर है। चोर को हर जगह अपमान सहन करना पड़ता है। व्यक्ति दंड से उतना नहीं डरता, जितना अपमान से। महात्मा गाँधी जी ने भी कहा था कि चोरी का माल खाने से क्षत्रिय शूरवीर नहीं बनते, दीन बनते हैं। कहा गया है – चोरी का धन कच्चे पारे को खाने के समान है। जैसे कच्चा पारा शरीर में फूट निकलता है, वैसे ही चोरी का धन भी। हमारा सभ्य समाज चोरी को घृणित कृत्य मानता है। जाम्भोजी भी हमें यही कह रहे हैं कि चोरी नहीं करनी चाहिए। चोरी से व्यक्ति की प्रतिष्ठा दांव पर लग जाती है तथा वह अपना किसी भी प्रकार का विकास नहीं कर सकता है।

ख) निन्दा – जाम्भोजी ने सात्विक जीवन के लिए किसी की भी निंदा नहीं करने हेतु उपदेशित दिया है। व्यक्ति दूसरों की बुराइयों की बजाय अपनी गलतियों पर

ध्यान दे तभी उसका सुधार हो सकता है। महात्मा कबीर ने इसीलिए कहा कि –

दोष पराये देखकर, चलत हँसत हँसत।

9) पाखण्ड का खण्डन

जाम्भोजी आडम्बरों व पाखण्ड के घोर विरोधी थे। उन्होंने सच्चे धर्म को पहचानने पर बल दिया। वे मूर्ति पूजा के विरोधी थे। उनके मतानुसार पत्थर की पूजा करना नादानी है। निर्गुण निराकार के सच्चे उपासक जाम्भोजी पत्थर या काष्ठ की मूर्ति को नमन कर, भगवान के दर्शन की अभिलाषा को मूर्खता कहते हैं –

धवणां धूजै पाहंण पूजै, बे फुरमाई खुदाई।
गुरु चेलै कै पाए लागै, देखो लोग अन्याई।
काठी कंणि जो रूपां रेहण, कापड़ मांहि छिपाई।
नीचा पडि-पडि तिहं के धोकै, धीरा रे हरि आई॥

(सबदवाणी 71/2-4 से)

वे कहते हैं कि भूत-प्रेत की पूजा करना, उनका जाप करना भी पाखण्ड है। जैसे भूसी में दाने नहीं होते, उनको बार-बार पीसना कहाँ की समझदारी है?

भूत परेती जाखा खेंणी, अै पाखंड परवांणौ।
वळि पळि कूकस कायं दळीजे जिंहमां कणौ न दाणौ।

(सबदवाणी 71/7-2)

उनका स्पष्ट मानना है कि मूर्तियों की पूजा, भूत-प्रेत की साधना तथा इधर-उधर दर्शनार्थ भटकना व्यर्थ है, क्योंकि इससे कोई सिद्धि प्राप्त नहीं होती। व्यक्ति को आत्म निरीक्षण कर आत्म पहचान का यत्न करना चाहिए। वे कहते हैं कि हे प्राणी! तू पत्थर (पूजा) का प्रेम छोड़ क्योंकि इससे मुक्ति नहीं मिलती। बिना गुरु ज्ञान के तूं मुक्ति को नहीं प्राप्त कर सकता।

पाहणं प्रीति फिटा करि प्राणी-गुर विणी मुकति न जाई॥

(सबदवाणी 99/7)

उन्होंने ने कहा कि ढोंगी लोग कई प्रकार का जाल फैलाकर लोगों को भ्रमित करते हैं। ढोंगी लोग अग्नि की तरह होते हैं, जो एक बार प्रकाशित होकर राख की भांति नष्ट हो जाते हैं परन्तु धर्मात्मा पुरुष हीरे के समान होते हैं, जो हमेशा एक ही रूप में कांतिमान रहते हैं। उनके कार्य उत्तम और चिरस्थाई होते हैं। हमें वेद और कुरान के नाम पर ऐसे ढोंगी व्यक्तियों से दूर रहकर सच्चाई के आधार पर दुष्वृत्तियों को दूर करना चाहिए।

वेद कुराणं कुमाया जाळूं, भूला जीव कुजीव कुजांणी।
वैसंदर नांही नख हीरुं, धरमं पुरिख सिरजीवै पुरुं।
कळि का माय जाळ फिटा करि प्राणी॥

(सबदवाणी 72/1-5)

10) दुर्व्यसनों का परित्याग

जम्भवाणी के उनतीस नियमों के अन्तर्गत समाज में व्याप्त दुर्व्यसनों से दूर रहने हेतु विशेष हिदायत दी है। चौबीसवें नियम में कहा गया है कि हम अफीम से दूर रहें। यह समाज में व्याप्त भयंकर नशा है, जिससे कई व्यक्तियों ने अपने जीवन को तबाह कर दिया है। नशे की यह बुरी लत व्यक्ति को विविध शारीरिक व्याधियों में फंसाकर उसके जीवन को नष्ट कर देती है। मानव अपनी मौत को अपने हाथ खरीदते फिर रहे हैं, उस पर संतों के उपदेश भी नाकामयाब हो रहे हैं। अफीम के उपयोग से मानव मानसिक पतन को प्राप्त करता है। वह हर जगह अपमानित, लांछित, पतित व उपेक्षणीय बनता है।

पच्चीसवें नियम में तम्बाकू से दूर रहने की बात कही गई है। बीड़ी, सिगरेट का उपयोग करने से तम्बाकू का विष पूरे शरीर में फैल जाता है, जिससे चुपके-चुपके अनेक प्रकार के रोगों का सृजन होता है। समय आने पर यही विष भयंकर बीमारियों के रूप में व्यक्ति को नाश की ओर ले जाता है। व्यक्ति अपनी कमाई का अच्छा-खासा भांग-तम्बाकू के पीछे खर्च कर देता है। जिन घरों में लोग तम्बाकू का सेवन करते हैं उसका प्रभाव उनकी सन्तान पर भी पड़ता है। यह हम जानते हैं कि नशा न तो पौष्टिक टॉनिक है और न ही मानसिक क्षमता बढ़ाने वाला पदार्थ। यह तो हल्का विष है जो तात्कालिक स्फूर्ति एवं क्षणिक मानसिक उत्तेजना देता है। जाम्भोजी राष्ट्र की इस कुरीति से भली-भांति वाकिफ थे। उन्होंने स्वास्थ्य के हानिकारक, मानसिक गिरावट के कारण, सन्तान पर घातक प्रभाव, समाज पर पड़ने वाला दुष्प्रभाव तथा पर्यावरण असंतुलन इत्यादि सभी पक्षों को देखकर इसका परित्याग करने का उपदेश दिया है। सामाजिक-आर्थिक और आध्यात्मिक सभी दृष्टिकोण से तम्बाकू घातक व हानिकारक है।

जम्भ वाणी के छब्बीसवें नियम में भांग से दूर रहने का उपदेश दिया है। भांग का सेवन मनुष्य के दिमाग को कमजोर बनाता है। कई लोग इसका सेवन कर अपने मानसिक सन्तुलन को खो बैठते हैं। भांग को किसी भी विधि से लेने से कोई लाभ नहीं होता बल्कि इससे मनुष्य अकर्मण्य ही बनता है।

दुर्व्यसनों के परित्याग में जाम्भोजी मद्यपान से दूर रहने पर जोर देते हैं। आयुर्वेद में नशीली चीजों की व्याख्या की गई है।

'बुद्धि लुम्पति यद्द्रव्यं मदकारि तदुच्यते।

अर्थात् जो वस्तु बुद्धि का नाश कर दे वही मदकारी कही जाती है। शराब की लत व्यक्ति के धन, स्वास्थ्य, जीवन शक्ति, मानसिक शांति व सामाजिक जीवन को हानि पहुंचाती है।

मनुस्मृति में आता है –

सुरावे मलमन्नां पाप्ना च मलमुच्यते।

तस्माद् ब्राह्माण राज चौ, वैश्यष न सुरा पिबेत॥

(मनुस्मृति)

सुरा को अन्न का मल कहा गया है। मल को पाप माना जाता है। मलमूत्र जैसे पदार्थ जिस प्रकार अभक्ष्य हैं उसी प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि सुरारूपी मल का सेवन न करें। मद्यपान दूषित है, इससे हमारी बुद्धि दूषित हो जाती है और दूषित बुद्धि वाला व्यक्ति कभी कोई अच्छा काम ढंग से नहीं कर सकता है।

शराब जैसे मादक द्रव्य का प्रयोग मानव जाति के लिए कई प्रकार की समस्याएँ ही उत्पन्न करने वाला है। मद्यपान मनुष्य के सोचने–विचारने की शक्ति, समझने–बूझने की विवेक शक्ति का नाश कर देता है इसीलिए शराब को मनुष्यता का शत्रु कहा गया है। शराब के कारण मनुष्य के स्वास्थ्य, धन, समय और मान–मर्यादा नष्ट होती है तथा चारित्रिक व मानवीय दृष्टि से भी उसका अधः पतन होता है। अतः मद्यपान अनुचित, अवांछनीय, घृणित व त्याज्य है। जाम्भोजी इन्हीं कारणों से मद्यपान का निषेध कर मानव को जीने की श्रेष्ठ राह दिखाते हैं।

इतना ही नहीं, जाम्भोजी ने मांसाहार से दूर रहने का निर्देश दिया है क्योंकि मांस भक्षण सम्पूर्ण रूप से अस्वास्थ्यदायक है। मानव के लिए मांस प्राकृतिक भोजन नहीं है। मनुष्य की रचना मांस भोजन के अनुरूप नहीं है तथा न ही मांस पर उनका जीवन निर्भर है, यह पाशविक प्रवृति का परिचायक है।

वर्ल्ड वाच इन्सटीूट नामक संस्था ने अनुसंधान के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि मांसाहार बढ़ने से डायबिटिज, क्षय, हृदय रोग, रक्तचाप, कैंसर जैसे रोगों की बाढ़ आ गई है। उन्होंने चेतावनी दी है कि मांसाहार मनुष्य के लिए हर दृष्टिकोण से हानिकारक है।

प्रकृति एवं मौसम के अनुरूप सरल, सादा, शाकाहारी भोजन ही मनुष्य के लिए उपयोगी एवं स्वास्थ्यवर्धक है। मनुष्य के दीर्घजीवी होने का राजमार्ग वनस्पति फल–फूल तथा दूध के भोजन में निहित है।

इस प्रकार जाम्भोजी का उपदेश सभी सम्प्रदायों, जातियों व मान्यताओं वाले लोगों के लिए उपयोगी है। इन सिद्धान्तों को जीवन में धारण करने से आत्म कल्याण, मानवीय गरिमा व सुख–शांति की पूर्ति संभव है। इनसे भावनाओं में देवत्व का विकास, कृतित्व में शुचिता–पवित्रता का समावेश होगा। जहाँ भावनाएं शुद्ध होगी वहाँ सर्वत्र शांति–सुव्यवस्था, प्रसन्नता व संतोष से भरे जीवन का निर्झर प्रवाहित होगा।

जाम्भोजी ने मानव को रूढ़िवादिता तथा मूढ़ता से गर्त से उबारा है। उन्होंने आत्म कल्याण की सही राह दिखलाई है। उनका परम लक्ष्य सत्प्रवृत्तियों का रोपण तथा अभिवर्धन करना है। उन्होंने लोकमानस को परिवर्तित, परिवर्धित व परिष्कृत करने का सफल प्रयास किया है। जाम्भोजी की यही युग चेतना मनुष्य में देवत्व का उदय करने का आधार–स्तभ्य है। वे युग–दृष्टा थे। उन्होंने तात्कालीन लोकभाषा में सरलता, सहजता एवं आध्यात्मिकता की जो राह चिह्नित की है, उस पर चलकर मानव–मात्र सच्चे पारमार्थिक सुख एवं परम शांति को प्राप्त कर, अपने जीवन को सार्थक बना सकता है। अस्तु।

–डॉ. उदाराम वैष्णव

'राघवाश्रित निकेतन' कैलाशनगर, सांचौर,

जिला जालोर (राज.) 343041

मो.: 9419124476

पुण्यतिथि

अमर शहीद शैतान सिंह भादू

पर्यावरण प्रणेता श्री गुरु जम्भेश्वर जी महाराज ने विक्रमी सम्वत् 1485 में संभराथल धोरे पर शिरोमणि बिश्नोई पंथ की स्थापना करते हुए प्राणी मात्र को उत्तम जीवन सुनिश्चित करने के लिए कल्याणकारी 29 धर्म-नियम की आचार संहिता प्रदान करते हुए दो नियम 'जीव दया पालणी अर रूंख लीलो नहीं घावै' दिए अर्थात् जीवों के प्रति दया और हरा वृक्ष को काटना तो दूर हरे वृक्ष को कभी घाव तक नहीं होना चाहिए का संदेश गुरुदेव ने दिया। इसी संदेश पर चलते हुए उनके अनेक अनुयायियों का वन्य सम्पदा की रक्षार्थ प्राण न्यौछावर कर वीरगति पाने का एक लम्बा इतिहास रहा है। वन एवं वन्य सम्पदा की रक्षा में तन-मन-धन और जरूरत पड़ी तो सर्वस्व न्यौछावर कर वीरगति पा ली, मगर रक्षा से कदम पीछे नहीं खींचे।

इसी कड़ी में सालासर ननेऊ गांव में श्री अर्जुनराम भादू और माता बिरादेवी के घर जन्मे शैतान सिंह भादू ने वन्यजीव हिरणों की रक्षा करते हुए निज प्राणों की आहुति दी, जिनका नाम आज स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है।

यूँ शहीद हुए थे शैतान सिंह :- इस वीर सपूत ने 29 जनवरी 2014 की रात लगभग 12 बजे गोली चलने की आवाज सुनी। तुरंत गोली की आवाज की दिशा में दौड़कर गए तो देखा कि कुछ दुष्ट शिकारी लोग हिरणों के झुण्ड के पीछे भागकर शिकार करने की कोशिश कर रहे हैं। शैतान सिंह ने उन्हें सावधान कर ललकारा, अरे दुष्ट शिकारियों, यह बिश्नोई क्षेत्र है, इस क्षेत्र में शिकार मत करना तुम। तब शिकारियों ने कहा, अरे बिश्नोई! तू दूर हट जा, अब यह शिकार हमारा है। वरना ये गोली तेरे लग जायेगी। लेकिन उस बिश्नोई वीर को अपनी जान की परवाह कहाँ थी? उसका तो ठीक वही जवाब था जो जवाब खेजड़ली वन रक्षा करते हुए वीरांगना माता अमृता देवी बिश्नोई का था। शिकारियों से कहा, 'मुझे चाहे गोली लग जाए मगर मेरे हिरणों को मैं बचा कर रहूंगा। किसी भी कीमत पर इनकी रक्षा करूँगा'। वो घटनास्थल से नहीं हटा, शिकारियों ने हिरण पर गोली चला दी जो गोली जाकर वीर शैतानाराम के लग गई। हिरणों की टोली तो वहां से भाग गई। वन्य जीव तो बच गये मगर वन्य जीव रक्षक सपूत शैतान सिंह

बिश्नोई ने वीरगति प्राप्त कर ली। इतने में गांव के बाकी लोगों के आने के डर में शिकारी भी वहां से भाग गए। इस प्रकार वीर शैतान सिंह भादू ने अपने प्राण देकर हिरणों की रक्षा की। धन्य है वह जन्मदात्री माँ, जिसने ऐसे वीर सपूत को जन्म दिया।

वन्य जीव रक्षक शैतान सिंह जी के सम्मान में एक मेरे द्वारा रचित साखी-

'साखी'

शैतान सिंह ननेऊ जिला जोधपुर,
कियो उसने बैकुण्ठ वास।
जूझ पड्या शिकारियों सूं,
शैताना राम जुग लियो जसवास।
ताँतु भुवा गाँव ननेऊ रा मानवी,
प्रगट ननेऊ में किया निवास।
इण क्षेत्र में बिश्नोई बसै,
करै जो हिरणातणो निवास ॥1 ॥
माया अरू घरबार सुहावणा,
जीव रूँख रहिया घर छाय।
वन्यजीवाँ न सुरक्षित राखियौ,
जोधपुर देश फलौदी रै माँय।
राखै बिश्नोईजन वन्य प्राणियां,
बे चालै सदगुरु जम्भ री राह।
सदगुरु जम्भेश्वर रखावै तो रहै,
बड़ी आसान बलि की राह ॥2 ॥

जित दिठा तहाँ बे रक्षा करी,
शैतान सिंह जीव बचावनहार।
वन्यजीव, खेजड़ी अर वृक्ष,
देवी-देव अरु तुलसी सा तत्सार।
ननेऊ रा भादु अर्जुन रा सपूत,
दी निज बलि बही खून की धार।
नाम अमर पंथ रो कर दिन्हों,
शैताना तज हिरणातणो संसार ॥3 ॥
रहण नै गाँव ननेऊ जोधपुर मां,
जो है वन्यप्राणी तणी औलाद।
पापी शिकारी गुरु मानै नहीं,
वन्यजीवाँ नै मारै कर कर वाद।
बिश्नोई है धर्म पर पक्का रहै,
नहावै जाय जाय जाम्भोलाव।
सब मिल चालै गुरु फुरमाई,
दर छोड़ थोथा वाद-विवाद ॥4 ॥
शैताना देश फलौदी गाँव ननेऊ,
कलियुग मांय बलि कहावियौ।
तज हिरणा तणो निज शरीर,
अर्जुन रै लाल वीरगति पावियौ।
बिश्नोई वीर ननेऊ रा मानवी,
वन्यजीव न बचावण आवियौ।
शाख भादु बिश्नोई री बधाई,
नाम जग में अमर करावियौ ॥5 ॥
आधी रैण गई रे शैताना राम,
थारी साख भरै ओ संसार जै।
सीख जम्भगुरु री मानै घणी,
बे हुवै सीधा भव जल पार जै।
बिश्नोई पंथ रा पक्का रहियौ,
करत वन्यजीवाँ नै प्यार जै।
सुकरत करियो सुरग लहियौ,
'पृथ्वीसिंह' सुणै विचार जै ॥6 ॥

'वीरों की समाधि पर लगेंगे हर वर्ष मेले, वन्यजीवों हित मरने वालों का बाकी यही निशां होगा।' अमर शहीद शैतान सिंह भादू की समाधि पर उनकी हर पुण्यतिथि 30 जनवरी को उनके गांव में प्रतिवर्ष अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा और स्थानीय बिश्नोई सभाओं की मदद से श्रद्धांजलि कार्यक्रम और मेले का आयोजन किया जाता है। साथ ही शैतान सिंह भादू को मरणोपरान्त राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी की अगुवाई वाली भारत सरकार द्वारा वर्ष 2015 में उत्तम जीवन रक्षक पदक से सम्मानित किया गया। इस सम्मान के अन्तर्गत उत्तम जीवन रक्षक पदक, एक प्रमाण पत्र और एक मुश्त भत्ता दिया गया था। शैतान सिंह के वीरगति पर नमन करते हुए 17 अगस्त, 2015 को उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा देवी के नाम तत्कालीन गृह सचिव भारत सरकार आईएएस राजीव महर्षि ने निम्न पत्र लिखते हुए शहादत को नमन किया और उत्तम जीवन रक्षक पदक बारे सूचित किया। पत्र इस प्रकार था-

I am to inform you that the President of India has been pleased to confer Uttam Jeevan Raksha Padak on Late Shri Shaitan Singh] in recognition of the indomitable courage displayed by him in a life saving act-

1. It is a matter of deep regret that he lost his own life in the process.
2. The exemplary courage exhibited by Late Shri Shaitan Singh shall remain a source of inspiration to the Nation.
3. The decoration for the award (Medal, Certificate and Lump-sum monetary allowence) will be presented to you on behalf of the President by the Government of Rajasthan.

With regards,
Your Sincerely

(Rajiv Mehrishi)

Smt. Pushpa
Village Salasar
(Bhaduon Ki Dhani) Post Naneu,
Tehsil Baap, Distt- Jodhpur (Rajasthan)

धन्य है गुरु जम्भेश्वर भगवान के ऐसे अनुयायी, जिन्होंने धर्म नियमों पर अडिग रहते हुए एक बेजुबान जीव के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। शत्-शत् नमन।

-पृथ्वीसिंह बैनीवाल बिश्नोई
313, सेक्टर 14, हिसार-125001 (हरियाणा)
मो.: 9518139200, 9467694029

बिश्नोई लोकगीत

संस्कार गीत- विवाह के गीत (भाग-1)

सुगरा संस्कार बिश्नोई पंथ का दूसरा संस्कार है। इस संस्कार पर गीत गाने की प्रथा नहीं है। विवाह संस्कार बिश्नोई पंथ का तीसरा संस्कार है। यह संस्कार न केवल बिश्नोई पंथ का अपितु सम्पूर्ण मानव जाति का महत्वपूर्ण एवं आनंदमय संस्कार है। इस संस्कार के द्वारा युवक- युवती धर्म एवं सामाजिक नियमों के अनुसार पति-पत्नी बन जाते हैं और समाज उनके इस नये सम्बन्ध को मान्यता प्रदान कर देता है। इसी संस्कार के माध्यम से व्यक्ति पितृ ऋण से मुक्त हो सकता है। विवाह समाज की एकता एवं प्रेम का प्रतीक है। अनेक धार्मिक कृत्य ऐसे हैं जो पति- पत्नी के सामूहिक रूप से ही सम्पन्न होते हैं। ऐसी स्थिति में विवाह स्त्री-पुरुष दोनों के लिए आवश्यक है। इसी आधार पर विवाह का महत्व स्त्री-पुरुष दोनों के लिए एक जैसा है। मनुस्मृति में विवाह के आठ प्रकार बताये हैं।[1] इनमें से आज हिन्दू समाज में जो विवाह प्रचलित है वह ब्रह्म एवं दैव विवाह का मिश्रित रूप है[2] और लोकगीतों में भी इसी विवाह का वर्णन है। इस संस्कार के पालन करने से समाज में एक अच्छी व्यवस्था बनी रहती है और लोग पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कारवान होते रहते हैं। विवाह के द्वारा ही मनुष्य निरन्तर समाज में क्रियाशील बना रहता है। अलग-अलग जातियों में विवाह के रीति -रिवाज एवं रस्में अलग-अलग हैं, पर इन सबका उद्देश्य एक ही है- विवाह के द्वारा युवक-युवती का विधि-विधान से पति-पत्नी बनना। मानव जाति की निरंतरता को बनाये रखने में भी विवाह का ही योगदान है।

बिश्नोई पंथ में विवाह का संस्कार हिन्दू समाज के समान होते हुए भी अपनी अलग एवं विशिष्ट पहचान बनाये हुए है। सादगी, सरलता एवं आडम्बरहीनता विवाह संस्कार की मुख्य विशेषताएं हैं। मुहूर्त निकलवाना, ज्योतिषियों से राय लेना, जन्मपत्री मिलाना, देवताओं का सोना-उठना आदि का बिश्नोई पंथ में कोई विधान नहीं है। इस समाज में विवाह के लिए सभी दिन शुभ माने गये हैं। विवाह की तिथि निर्धारण में लड़के-लड़की के परिवारों की सुविधा ही प्रमुख रहती है। कृषि प्रधान समाज होने के कारण कृषि कार्यों के समय को ध्यान में रखकर विवाह की तिथि तय कर ली जाती है। इससे समाज की आडम्बरहीनता ही प्रमाणित होती है। बिश्नोई पंथ के प्रवर्तक गुरु जाम्भोजी ने अपने सबदों के द्वारा पंथ के लोगों को आडम्बरहीन जीवन जीने पर बल दिया था और हर प्रकार के पाखंडों से दूर रहने के लिए कहा था।

मठ देवल तीरथ मूळि न जोयबा,
निज करि जपौ पिरांणी। (105-10)

इसके साथ ही उन्होंने तर्क सहित मूर्ति पूजा का विरोध किया था और इसे एक अन्यायपूर्ण कृत्य माना था।

धवणां धूजै पाहंण पूजै, बेफुरमांण खुदाई।
गुर चेलै कै पाए लागै, देखौ लोकौ अन्याई।
(71-1,2)

भूत-प्रेत की साधना को गुरु जाम्भोजी ने उल्टा कर्म मानते हुए इसे पाखण्ड की ही संज्ञा दी है।

भूत परेती कांय जपीजै, एह पाखंड परवांणौ। (66-33)

इन सब पाखंडों एवं आडम्बरों को त्याग कर गुरु जाम्भोजी ने निरालंभ सिंभू के जप पर बल दिया है।

जपां त एक निरालंभ सिंभू,
जिंह के माई न पीयौ। (4-9)

उनकी इसी आडम्बरहीन शिक्षा का पंथ पर यह प्रभाव पड़ा है कि आज भी पंथ के लोग आडम्बरहीन जीवन यापन कर रहे हैं। इसी आडम्बरहीनता का प्रभाव विवाह संस्कार पर देखा जा सकता है। इस पंथ में सम्बन्ध समाज के किसी भी गौत्र में तय हो सकता है।[3] पहले घर के बुजुर्ग लोग वैवाहिक सम्बन्ध तय कर

लेते थे, पर अब शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कारण लड़के-लड़की की पसंद को प्रमुखता दी जाती है।

बिश्नोई पंथ में मौखिक रूप से सम्बन्ध तय होने के बाद सगाई की रस्म पूरी की जाती है। इसमें भी दोनों पक्षों की सहमति एवं सुविधानुसार वर या कन्या पक्ष के यहां मित्रों एवं सम्बन्धियों को निमंत्रण देकर बुलाया जाता है। वहां कन्या का पिता वर के पिता को नारियल एवं सवा रुपया देता है तथा लड़के-लड़की के नामों की सार्वजनिक घोषणा की जाती है। इसके बाद उपस्थित लोगों को गुड़ बांटा जाता है। यदि सगाई कन्या पक्ष के यहां होती है तो वर पक्ष के लोग कन्या को रुपयों के रूप में पगे लगाई देते हैं और कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष के लोगों को कम्बल दिए जाते हैं। इसी के साथ सगाई की रस्म पूरी हो जाती है। वैसे कभी-कभी सगाई की रस्म के बिना ही मौखिक रूप से सम्बन्ध तय मान लिया जाता है।

वर एवं कन्या पक्ष की मौखिक वार्ता के अनुसार दोनों पक्षों की सुविधानुसार विवाह का दिन निर्धारित किया जाता है। इसी के आधार पर कन्या का पिता अपने निकट के सम्बन्धियों एवं मित्रों को विवाह का दिन निर्धारित करने के लिए अपने घर आमन्त्रित करता है। वहां आमन्त्रित लोगों की उपस्थिति में सूत के कच्चे धागों की दो लच्छियां तैयार की जाती है और इनमें उतनी ही गांठें लगाई जाती हैं, जितने दिनों के बाद विवाह होना निश्चित किया जाता है। इसके बाद कुछ चावल एवं इन दोनों लच्छियों को हल्दी में पीला किया जाता है। इसे ही 'डोरा करना' कहते हैं। वस्तुतः बिश्नोई पंथ में डोरा करने से ही विवाह की तिथि निश्चित होती है। डोरा करने के बाद सवा रुपये के साथ एक डोरा, कुछ पीले चावल एवं निमंत्रण पत्र नाई के हाथ वर पक्ष के यहां भेजे जाते हैं और दूसरा डोरा कन्या पक्ष का कोई वयोवृद्ध सम्बन्धी अपनी पगड़ी के बांध लेता है। इसके बाद आमन्त्रित लोगों को गुड़ बांटा जाता है और वहीं आंगन में स्त्रियां कुछ गीत गाती है। इस दिन के बाद दोनों पक्षों के घरों में सफाई एवं विवाह की तैयारी प्रारम्भ हो जाती है।

बिश्नोई पंथ में विवाह की सभी रस्मों पर गीत गाये जाते हैं। इस पंथ में डोरा करने से लेकर विवाह के पूर्ण सम्पन्न होने तक अनेक रस्मों का आयोजन किया जाता है। इन सभी रस्मों का धार्मिक एवं सामाजिक दोनों दृष्टियों से महत्व है। इसी कारण में सभी रस्में विवाह संस्कार को एक सुदृढ़ता प्रदान करती है। ये रस्में वर-कन्या दोनों ही परिवारों में सम्पन्न होती है। वैसे विवाह कन्या पक्ष के यहां ही होता है। इसलिए विवाह की अधिकांश रस्में कन्या के घर पर ही सम्पन्न होती है। इसी कारण विवाह के समय कन्या पक्ष के घर पर ही उत्साह एवं आनन्द का वातावरण अधिक रहता है। विवाह की इन रस्मों पर जब गीत की स्वर लहरियां गूंजती हैं तो विवाह का आनन्द कई गुना बढ़ जाता है। विवाह की ये रस्में शास्त्रीय एवं लौकिक दोनों प्रकार से सम्पन्न होती हैं। लौकिक ढंग से सम्पन्न होने वाली रस्में लोकगीतों से पूर्ण होती है जिसमें नारी समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। विवाह की अधिकांश रस्मों पर गीत गाये जाते हैं इसलिए समाज में विवाह के अनेक गीत प्रचलित हैं। बड़ी मात्रा में गीतों के प्रचलन के कारण ही विवाह सम्बन्धी गीतों का क्षेत्र अन्य संस्कारों से बड़ा है और ऐसे गीतों की संख्या भी सर्वाधिक है। घर में विवाह के वातावरण को निर्मित करने में लोकगीतों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। विवाह के सभी गीतों को महिलाएं एवं युवतियां बड़े चाव एवं आनन्द के साथ गाती रही है और उसी रूचि के साथ लोग इनको सुनते हैं। गीतों के प्रति इसी रूचि एवं आनन्द के कारण ही विवाह की सभी रस्में आनन्द के साथ सम्पन्न होती रही हैं। आधुनिक काल में पाश्चात्य प्रभाव के कारण पाश्चात्य धुनों पर बजने वाले फिल्मी गीतों का प्रचलन बढ़ता जा रहा है और नयी पीढ़ी की रूचि इन फिल्मी गीतों, विवाह में होने वाली वीडियोग्राफी, फोटोग्राफी एवं भोंडे नृत्य की

ओर बढ़ती जा रही है, जिससे समाज में प्रचलित लोकगीतों पर एक संकट सा मंडराता हुआ दिखाई दे रहा है। अब धीरे-धीरे लोकगीतों की गायिकाएं भी कम होती जा रही हैं और सुनने वालों की रूचि भी कम हो रही है। ऐसी स्थिति में समाज की यह अमूल्य धरोहर कहीं लुप्त नहीं हो जाए, यह समाज के लिए एक विचारणीय प्रश्न बन गया है। लोकगीत संस्कृति के सच्चे रक्षक हैं। ऐसी स्थिति में लोकगीतों के लुप्त होने से हमारी संस्कृति पर भी आंच आ सकती है। इसलिए समाज के सभी प्रबुद्ध लोगों को ऐसा प्रयास करना चाहिए, जिससे लुप्त होते हुए लोकगीतों की रक्षा हो सके और संस्कृति पर आने वाली आंच को रोका जा सके।

बिश्नोई पंथ में विवाह की कुछ रस्में वर-कन्या के यहां समान रूप से सम्पन्न होती है। इसलिए विवाह के कुछ गीत वर-कन्या के यहां समान रूप से गाये जाते हैं पर कुछ रस्में वर-कन्या के यहां अलग-अलग से सम्पन्न होती हैं। इस आधार पर वर-कन्या के यहां कुछ गीत अलग-अलग भी गाये जाते हैं। बिश्नोई समाज के विवाह से सम्बन्धित इन गीतों में भारतीय संस्कृति एवं बिश्नोई संस्कृति के स्वरूप को देखा जा सकता है। इसलिए देश एवं समाज की संस्कृति को सुरक्षित रखने में इन गीतों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस आधार पर इन गीतों का संरक्षण आवश्यक है।

बिश्नोई समाज के विवाह सम्बन्धी समस्त गीतों को हम दो भागों में बांट सकते हैं। वर पक्ष के गीत एवं कन्या पक्ष के गीत। वर पक्ष के समस्त गीतों में आनन्द एवं उत्साह रहता है जबकि कन्या पक्ष के गीतों में आनन्दमय उत्साह के साथ-साथ करुणा भी रहती है। संख्या की दृष्टि से वर पक्ष की तुलना में कन्या पक्ष के गीत अधिक हैं। वर पक्ष एवं कन्या पक्ष के यहां सम्पन्न होने वाली विभिन्न रस्मों के आधार पर बिश्नोई समाज के वर एवं कन्या पक्ष से सम्बन्धित वैवाहिक गीतों को निम्नलिखित भागों में बांट सकते हैं -

वर पक्ष के गीत	**कन्या पक्ष के गीत**
1. डोरा भधारने के गीत	1. डोरा भधारने के गीत
2. विनायक के गीत	2. विनायक के गीत
3. बनोळे के गीत	3. बनोळे के गीत
4. बनड़े	4. बनड़ी
5. भात के गीत	5. भात के गीत
6. रातीजोगे के गीत	6. रातीजोगे के गीत
7. बारात प्रस्थान के गीत	7. तोरण के गीत
8. मुकलावे के गीत	8. विदाई के गीत
	9. जंवाई के गीत

दोनों पक्षों की विभिन्न रस्मों के आधार पर बिश्नोई समाज के विवाह सम्बन्धी समस्त गीतों को निम्नलिखित भागों में बांटा जा सकता है। इन प्रमुख भागों के कुछ उपभाग भी हैं।

1. डोरा भधारने के गीत
2. विनायक के गीत
3. बनोळे के गीत
4. बनड़े
5. भात के गीत
6. रातीजोगे के गीत
7. बारात प्रस्थान के गीत
8. तोरण के गीत
9. विदाई के गीत
10. मुकलावे के गीत
11. जंवाई के गीत

संदर्भः

1. मनुस्मृति, अध्याय 3, श्लोक 21
2. डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, पृ. 83
3. ब्रह्मानन्द, श्री जम्भदेव चरित्र, भानु - पृ. 63

क्रमशः ...अगले अंक में

-डॉ. बनवारी लाल सहू
विभागाध्यक्ष (हिन्दी) से.नि.
एन.एम.पी.जी. कॉलेज, हनुमानगढ़ टाउन (राज.)
मो.: 9414875029

सुरजनजी कृत हरजस (राग खंभावची)

हुवै आरती मंगळाचार पूजै हरे, धरि-धरि चौक माणयक घेरा।
आरती उतरै इंदपुरी ऊपरै, डहळ चंद बहरख डेरा॥1॥टेक
संख नीसांण नै नाद सुर संभळे, वेद घंण वाच्यजै व्रळ बांणी।
आज उदमाद आणंद घणा ऊपरै, प्रण्यजै संगति सारगप्रांणी॥2॥
कुंदणपुर कळस कुसम थल्य जान करि, देव तेतीस जैकारा दीजै।
रिब कळ चंद कर्‌य विनणी रुखमणी, किसन सिर छत्र धरि वीन कीजै॥3॥
कांमणी वीणन तुंवर घंणां कंगरे, भुंवर गुंजार इस कार भेळा।
मंगल दीजै धवळ वीनची मंडळी, मिलै जण सजणे प्रीति मेळा॥4॥
लगन्य सुध दावनै भाव व्रंभा लहै, सांम्भ सुरजन चाकाम्य सेरा।
हाथ मेळांवण पात घंण हेलवे, फूल मालियै य च्यारे फेरा॥5॥

कुंदनपुर में मंगलाचार से श्रीकृष्ण की आरती और पूजा हो रही है, घर-घर में मोतियों के चौक पूजे जाते हैं। जैसे स्वर्ग में इन्द्र की आरती उतरती है, इधर शिशपाल के डेरे में शून्य है। शंख, निशान और नाद की ध्वनि सुनती है, वेद-पाठ का उच्चारण होता है, आज खुशी से बहुत आनन्द है, श्रीकृष्ण भगवान का विवाह है। कुन्दनपुर में कलश पुष्प लेकर तेतीस करोड़ देव जय बोलते हैं, सूर्य और चन्द्रमा की कलाओं से सम्पन्न रूकमणी दुल्हन बनी है, श्रीकृष्ण भगवान के मस्तक पर मुकुट है और वे दुल्हे बने हैं। वहां छज्जों पर चढ़ी हुई स्त्रियां यह समारोह देख रही हैं, पुष्पों पर भंवरों की मण्डली गुंजार कर रही है, बरातियों का सम्मान हो रहा है और प्रेमी जन मिल रहे हैं। इस शुभ लग्न में ब्रह्माजी पंडित बने हुए कृष्ण भगवान का विवाह करा रहे हैं। सुरजन जी कहते हैं कि पाणिग्रहण संस्कार के समय रूकमणी जी ने श्रीकृष्ण के गले में फूलमाला डाली और चार फेरे लिये।

परमानन्दजी बणियाळ कृत हरजस सोहळो (राग खंभावची)

आवौ सखी वर जीवां अम्हैं, वींद नवरंग कंवर भायौ॥1॥टेक
घणै घमंड सूं राजा रुघनाथजी, सीत सूं वर इधको सवायौ।
चोहु रथ बरोबरी रोह लागी रथां, पुंडिरजी छौहणी गैण छायौ॥2॥
राम लछमण भरथ और चत्रघण, देखि रसरथ हिरदो सिळायो।
मोतियां लुंब नै कोर हीरां माण्यकां, सेहरो सीस सोभा सवायौ॥3॥
कोड रायकुंवरि रा तुरेवा कारणै, ओप अद्‌भुत वानूं बनायौ।
मंगळाचार आचार मिथलापुरी, जीवौ जनकराय मडप छायौ॥4॥
घुरै नीसाण नै तरणि गावै धवळ, परण्यजै आज दसरथ जायौ।
भगति रो दान दे और मांगूं नहीं, सोहळौ परमानन्द गायौ॥5॥

सखियो आओ, आज अपने स्वामी का चुनाव करें। मुझे नये दुल्हे रामजी पसन्द आये हैं। राजा रामचन्द्रजी सम्मानपूर्वक आये हैं, सीताजी के लिए वे बहुत अच्छे वर हैं। चारों राजकुमारों के रथ बराबर चल रहे हैं, रथों से उड़ती धूल आकाश के अन्दर छाई हुई है। राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न को देखकर राजा दशरथ का हृदय बहुत खुश हो रहा है। हीरे, पन्ने और मोतियों के मुकुट से उनके सीस की शोभा दुगनी हो रही है। राजकुमारियों की चहल-पहल से वहां की शोभा अनोखी है। जनकजी ने मंडप बना रखा है और वहां मंगलाचार हो रहा है। नगारे बज रहे हैं और युवतियां धवल गीत गा रही हैं। आज दशरथजी के प्रिय पुत्र रामजी की शादी है, परमानन्दजी गीत गाते हुए, भगवान रामजी से उनकी भक्ति का वरदान मांगते हैं।

साभार- बिश्नोई संतों के हरजस

नव वर्ष तुम्हारा अभिनंदन

मिलकर करते हैं हम
अभिनदंन नव वर्ष तुम्हारा
नया सवेरा, नई किरण
नई डगर, नई चाह
नया आलम, नई राह
हर ओर बस
खुशियों भरा नजारा हो
यूँ हो नववर्ष अभिनदंन तुम्हारा
यूँ हो नववर्ष अभिनदंन तुम्हारा।
तुम्हारे आगमन पे
सब मंगल गीत गायें
पर्यावरण की चिंता करे
एक-एक पेड़ सब मिलकर लगाएं
धरती माँ की गौरव पताका
पूरे जग में फहराये,
यूँ हो नववर्ष अभिनदंन तुम्हारा।
गंदगी को हटाए
स्वच्छता के अभियान को
जन-जन तक पहुचायें
हो स्वच्छ रहो स्वस्थ
यह अलख सबमें जगायें
योग प्राणयाम सबको बतायें,
स्वस्थ रहने के सदमार्ग दिखलायें
यूँ हो नववर्ष अभिनदंन तुम्हारा।
शिक्षा का पूर्ण विस्तार हो
अच्छी-अच्छी बातें पढ़ें
शिक्षा में नैतिकता का विकास हो,
कोई भूखा पेट न सोए
सर्वागीण संपन्नता का प्रकाश हो।
नववर्ष तुम्हारा ऐसा प्रथम प्रभात हो
खुशियों की हरदम बरसात हो
नई शुरूआत, नया आगाज हो
यूँ हो नववर्ष अभिनदंन तुम्हारा
यूँ हो नववर्ष अभिनदंन तुम्हारा॥

-नेहा बिश्नोई
वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा. विद्यालय, जोरावरपुरा, हनुमानगढ़

नव वर्ष की नई शुरूआत

करे हम इक नयी शुरूआत,
नया आगाज
भले खुद से ही
गर हो कोई बुरी आदत
तो उसे त्याग के।
नववर्ष के शुभ अवसर पर,
पावन अवसर पर।
जीवन में नववर्ष की नई शुरूआत
इस कदर लगे जैसे,
जिंदगी की यही
नई शुरूआत है,
यही नई सुबह है।
मजबूत इरादों से,
मन में कर
दृढ़ निश्चय, सकंल्प
जीवन को ले चले हम
नई राह, नई दिशा में।
करे नई शुरूआत नववर्ष की
करे नई शुरूआत नववर्ष की।
पुरानी बातें, बिसरी यादें ओर
अब बीते पल दर्द को भूल
अधरों पर मुस्कान ले,
छोड़ उदासी को यहाँ ही
अब होगा नया सवेरा
नई शुरूआत से
नववर्ष का अभिनंदन करें।
सबके आँगन में फूल खिले
खुशियों की बौछार हो
हर घर दीवाली मने
रंगों की छटा बिखरी हो,
नववर्ष मंगलमय हो
इस कदर
नववर्ष की नई शुरूआत हो।
नववर्ष की नई शुरूआत हो।

-सुशील पूनियां
रामा कुंज 8/368 आर.एच.बी. कॉलोनी
हनुमानगढ़ जंक्शन - 335512

बधाई संदेश

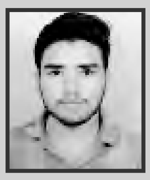

साहिल काकड़ सुपुत्र श्री सुरेश काकड़, निवासी आदमपुर, जिला हिसार का चयन पंजाब पब्लिक सर्विस कमीशन द्वारा आयोजित सहायक प्रोफेसर भर्ती में वाणिज्य विषय के पद पर हुआ है।

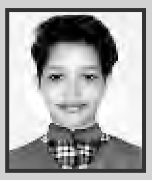

अक्षिता बिश्नोई सुपुत्री श्री सुनील धारणिया, निवासी गांव संगरिया, जिला हनुमानगढ़ ने भोपाल में आयोजित 64वीं नेशनल शूटिंग चैम्पियनशिप (राईफल) में क्वालीफाई किया है।

रोहताश सुपुत्र श्री आत्माराम गोदारा, निवासी गांव आदमपुर (ढाणी ढाब रोड), हिसार का 'पंजाबी यूनिवर्सिटी' के वाणिज्य विभाग में पीएच.डी. कोर्स में प्रवेश हुआ है।

दीपिका बिश्नोई सुपुत्री श्री राजूजी पाडीयाल, निवासी गांव खातेगांव, जिला देवास (म.प्र.) ने आई.एम.एस. कॉलेज, इंदौर से एम.बी.ए. की उपाधि प्राप्त की है।

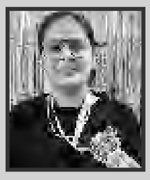

नव्या बिश्नोई सुपुत्री श्री राजकुमार गोदारा, निवासी गांव गंगवा, जिला हिसार ने डॉ. करनी सिंह शूटिंग रेंज, दिल्ली में 64वीं नेशनल शूटिंग चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। इससे पूर्व आप केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित इंटर स्कूल स्पोर्ट्स एण्ड गेम्स कम्पीटिशन में द्वितीय स्थान प्राप्त कर चुकी हैं।

विनोद कड़वासरा सुपुत्र श्री परीक्षित कुमार कड़वासरा, निवासी गांव बड़ोपल, जिला फतेहाबाद को भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अधीन वन्य जीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो का वालंटियर सदस्य मनोनीत किया गया है।

रोहित पटेल बैनिवाल सुपुत्र श्री सत्यनारायण पटेल बिश्नोई, निवासी गांव सोनखेड़ी, जिला खण्डवा (म.प्र.) को कुश्ती के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियों के चलते मध्यप्रदेश सरकार द्वारा विगत दिनों सर्वोच्च खेल पुरस्कार विक्रम अवार्ड से सम्मानित किया गया। वर्तमान में ये मध्यप्रदेश रेलवे इन्दौर में कार्यरत हैं तथा रेलवे की ओर से कुश्ती लड़ रहे हैं।

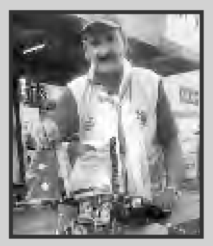

सुभाष चन्द्र बिश्नोई (रिटा. मण्डी सुपरवाईजर) सुपुत्र श्री नत्थूराम ऐचरा, निवासी गांव कालीरावण, हिसार जल एवं पर्यावरण संरक्षण की अलख जगाने हेतु 27 जनवरी, 2021 से साइकिल पर भारत भ्रमण पर हैं। सिरसा शहर से अपनी साइकिल यात्रा की शुरूआत करके आप अब तक देश के विभिन्न शहरों व गांवों में पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए 8100 कि.मी. की यात्रा पूरी कर चुके हैं तथा आगे भी यात्रा को जारी रखे हुए हैं।

आप सबकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर बिश्नोई सभा, हिसार व अमर ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

आओ विचार करें– 7

जो भी आंखें इन पंक्तियों पर अपनी अनमोल नजर दौड़ा रही हैं इनके साक्षिक को हृदय की गहराइयों से नवन प्रणाम। आप सब स्वस्थ रहें, प्रसन्न रहें। भारतीय इतिहास के मध्य युग में प्रवेश करने पर हम देखते हैं कि धर्म की मर्यादाएं तार-तार हैं। नैतिकता कराह रही है, मूल्य मान्यताएं सिसकियां भर रही हैं। सामान्यवाद की गहरी जड़ें आम जनता को शोषण की चक्की में पीस रही है। लेकिन धूप व छांव साथ-साथ चलती हैं, घने अंधकार के बाद रोशनी भी नजदीक इन्तजार कर रही होती हैं। भयानक उमस के बाद रिमझिम फुहारें भी जीवन का हिस्सा बनती हैं। ऐसा ही कुछ सुखद अनुभव मानव जाति महसूस करती हैं, जब मध्यकाल में भक्ति युग के संतों का आशीर्वाद प्राप्त होता है। भक्ति काल के इन सन्तों की दिव्य वाणी ने न केवल भारतीय जनता को झकझोरा अपितु सम्पूर्ण मानवता के लिए नए आदर्श स्थापित किए। सन्त कबीरदास, रामानन्द, चैतन्य महाप्रभु, नामदेव, रहीम, रविदास, गुरु नानक, बाबा फरीद, शंकर देव, गुरु जम्भेश्वर, रामदेव आदि आदि।

इन सन्तों ने भटकी हुई जनता को धर्म का मर्म समझाया। नैतिकता, मूल्य मान्यताएं, रीति-रिवाज को इन महान मनीषियों ने व्यावहारिकता का जामा पहनाया/ पुरोहितवाद से मुक्ति दिलाने की हर संभव कोशिश की।

भक्तिकाल के इन दिव्य पुरुषों में गुरु जम्भेश्वर जी का अनूठा स्थान है। वे वेद व वेदान्त की वाणी की जीती-जागती मशाल थे। हमारी सनातन संस्कृति के अमृत तत्त्वों का समावेश उनकी वाणी में है। तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियों का उन्होंने गहन चिन्तन किया। उस समय की समस्याओं व भविष्य की मानव जाति की कठिनाइयों को उन्होंने अपनी दूरदृष्टिता से परख कर गूढ़ समाधान दिया। उनके दिव्य संदेश की आवश्यकता भूतकाल में तो थी ही, आज के युग व भविष्यकाल के लिए भी उसकी प्रासंगिकता बढ़ती ही जा रही है।

जब तक इस धरा पर जीवन मौजूद रहेगा, गुरु जम्भेश्वर जी की 29 नियमों की रत्नों रूपी माला मानव जाति के गले के हार के रूप में शोभायमान करती रहेगी। 120 सबदों की उनकी दिव्य वाणी अनवरत काल तक प्रकाश पुंज के रूप में मनुष्य का मार्गदर्शन करेगी।

गुरु जम्भेश्वर सबदवाणी किसी एक जाति, पंथ, धर्म, वर्ग या देश तक ही सीमित नहीं है। यह पृथ्वी पर रहने वाले सभी समुदायों, हर आयु वर्ग के लिए प्रेरणा स्रोत है। जरूरत इसी बात की है कि हम गुरु जम्भेश्वर जी की ज्ञानालोकित, भक्तिमय, कर्मप्रधान, योगमार्गी सबदवाणी के आश्रय में जाएं।

युवा व विद्यार्थी वर्ग का बहुत बड़ा हिस्सा बिश्नोई पंथ के संस्थापक गुरु जम्भेश्वर की शिक्षाओं से दूरी बनाकर खड़ा नजर आता है। शायद उनका सोचना है कि ये सब प्रौढ़ावस्था या वृद्धावस्था में काम आने वाली हैं। अभी उनका समय नहीं हुआ कि वे अपना कीमती वक्त इसे पढ़ने गुणने में दें।

विचारणीय प्रश्न है कि सबदवाणी से दूरी से अभिप्राय कहीं जीवन से दूरी तो नहीं है? आओ विचार करें कि इस अंक में मैं विद्यार्थी व युवा वर्ग से आग्रह करता हूँ कि जरा ठहरकर शांत दिमांग से विचार करें। विचार करें कि सबदवाणी जीवन में संगीत है। सबदवाणी अज्ञानता के अंधकार को दूर करने वाली सुबह की किरण है। सबदवाणी भटके हुए मन को कर्तव्य पथ पर आरुढ़ करने वाली गूंज है। सबदवाणी विद्यार्थी के लिए अध्ययन मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने वाली रामबाण है। आओ विचार करें कि गुरु जम्भेश्वर जी की शिक्षाएं विद्यार्थी वर्ग का पथ प्रदर्शन कदम-दर-कदम किस प्रकार करती हैं। सबद संख्या 21 में गुरु महाराज फरमाते हैं- **गुरु का सबद ज्यूं बोलो झीणी बाणी, जिहीं का दूरा हूंतै दूर सुणीजै। सौ सबद गुणां कारूं, गुणा सारूं बले अपारूं।**

यहां गुरु महाराज सबदों की ताकत बता रहे हैं। मीठी वाणी सुनने वाले पर स्थायी प्रभाव छोड़ती हैं। इसका प्रभाव बहुत दूर तक जाता है। विद्यार्थी व युवा

लोग इस पर अमल करें तो उनके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आएगा। मीठी बोली किसे प्यारी नहीं लगती है। यह अनन्त फलदायिनी है। युवाओं में जोश होता है होश की कमी होती है। होशपूर्वक हम सबदों का प्रयोग करेंगे तो जीवन में प्रगति पथ पर बढ़ते जाएंगे। विद्यार्थी में विनम्रता है तभी वह गुरुजनों से श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त कर सकता है। संभालकर बोले गए सबद आपको सामने वाले के हृदय में प्यारा सा स्थान दिलाते हैं। उनतीस नियमों में भी कहा गया है-

पाणी वाणी इंधणी दूध इतना लिजो छाण,
क्षमा दया हिरदे धरो, गुरु बतायो जाण।

वाणी को छानना यानि कि सबदों का सोच-समझकर प्रयोग करना और निरर्थक व बेलगाम सबदों से कोसों दूरी बनाना।

गुरु महाराज के इस दिव्य संदेश में विद्यार्थियों के लिए लाख टके की शिक्षा है। आप इसका प्रयोग दैनिक जीवन के व्यवहार में कीजिए व सफलता की चाबी अपनी जेब में रखिए। आपका सामाजिक दायरा आपके मुंह से निकले हुए सबद ही तय करते हैं। सबदों में जितनी मिठास होगी आपको समाज सहर्ष स्वीकार करेगा। विनम्रता से लबरेज सबद मित्रता के द्वार खुले रखेंगे। जीवन पथ पर जब भी मुसीबत आएगी अनेकों हाथ आपके लिए दुआ करेंगे। आप एक सुरक्षा के घेरे में महफूज होंगे। किसी ने क्या सुन्दर कहा है-

शब्द सम्भाल कर बोलिए, शब्द के नहीं हाथ पांव,
एक शब्द है औषधी, एक शब्द है घाव।

तीर जब धनुष से छूट जाता है और सबद मुंह से, तो वापिस लौटकर नहीं आते। सबद संख्या 78, में गुरु महाराज कहते हैं, 'सुवचन बोल सदा सुहलाली अच्छा लगने वाला, प्रिय व सत्य वचन ही सदा बोलना चाहिए, इसी से आपके जीवन में सदा खुशहाली बनी रहेगी। विद्यार्थी जीवन में पड़े संस्कार ही जीवन भर साथ निभाते हैं। विद्यार्थियों को सबदवाणी के संदेशों में उन्नति का मार्ग खोजना है। आपके जीवन को नई दिशा मिलेगी। यदि विद्यार्थी जीवन से ही सीख लिया जाए कि कौन से सबदों का प्रयोग किस समय व किस जगह करना है तो आप अथाह सम्पत्ति के स्वामी होंगे जिसका दुनिया में कोई मूल्य नहीं आंका जा सकता। प्यारे-प्यारे सबदों को सजाकर सामने वाले को आदरसहित पेश करना विद्यार्थी के लिए अत्यावश्यक है। उपरोक्त सभी बातें हर आयु वर्ग पर लागू होती हैं, लेकिन विद्यार्थी के लिए ये अधिक महत्वपूर्ण है। विद्यार्थी जीवन संस्कार ग्रहण करने की प्रथम सीढ़ी है। इस समय अपनाएं गए संस्कार भावी जीवन की दशा व दिशा तय करते हैं। विद्यार्थी जीवन उपजाऊ खेत के समान है, जिसमें केवल बीज डालने से ही काम नहीं चलेगा, समय-समय पर सिंचाई, खाद, निराई-गुड़ाई, खरपतवार निकालना, सम्भाल अच्छी फसल लेने के लिए आवश्यक शर्तें हैं। यह बात विद्यार्थी जीवन में संस्कार शामिल करने पर लागू होती है। भावी जीवन स्वयं व समाज के लिए उपयोगी, सुखदायक, मिठासपूर्ण व सार्थक बने, इसके लिए विद्यार्थी रहते हुए ही अच्छे संस्कारों को बोना होगा, उसमें समय पर सिंचाई करनी होगी, खाद डालनी होगी, खरपतवार रूपी बुरे विचार, गलत आदतों को नकारना होगा। सबदवाणी का अध्ययन, मनन व चिंतन विद्यार्थी के लिए संस्कारों की फसल लेने के लिए अपरिहार्य शर्त है।

गुरु महाराज की शिक्षाएं विद्यार्थी के लिए संस्कारशाला का कार्य करती है। सबद संख्या 39 में गुरु जम्भेश्वर जी कहते हैं -

उत्तम संग सुसंगू, उत्तम रंग सु रंगू,
उत्तम लंग सु लंगू, उत्तम ढंग सु ढंगू।

यह सबद विद्यार्थी जीवन के लिए बेहतरीन आदर्श प्रस्तुत करता है। यह आयु काफी लचकशील, निर्दोष होती है। विद्यार्थी में यह गुण होना ही चाहिए कि उसके लिए उत्तम क्या है, उसका चुनाव वह स्वयं करें। यह स्वर भटकाव का मार्ग भी प्रदान करता है। इस आयु में अच्छी संगत का रस मिल जाए तो जिन्दगी निखर उठेगी। अच्छी संगति का असर बहुत दूर तक जाता है। बुरी संगति बर्बादी की तरफ धकेल देती है। इसलिए गुरु महाराज बार-बार सत्संगति पर बल देते हैं।

उत्तम संगति उत्तम जीवन की तरफ ले जाएगी। यदि कोई रंग अपने ऊपर चढ़ाना है तो वह उत्तम ही ग्रहण

करना चाहिए। यदि जीवन को शुद्ध सुसंस्कृत करना है तो अच्छे संस्कारों को ही धारण करना चाहिए। जीवन जीने का ढंग यदि उत्तम शालीनता से हो तो वही जीना है। सत्संगति की महत्ता हजारों वर्षों से विभिन्न देशकाल के शास्त्र कहते आए हैं। मनुष्य को पशुओं से अलग करने वाला तत्व बुद्धि व विवेक हैं। ईश्वर का दिया सर्वोत्तम उपहार विवेक है। विद्यार्थी जीवन में ही अच्छे व बुरे की पहचान करने का नजरिया मिल जाए तो जीवन की डगर आसान हो जाती है।

संगति अच्छी हो तो वह अमृत तत्व बन जाती हैं। कुसंगति व जहर में कोई अन्तर नहीं है। मन का स्वभाव बड़ा चंचल है। यह हमेशा आसान मार्ग ढूंढता है, खुश रहने के लिए। मन स्वाद की खोज करता है चाहे वह जीभ का हो या जुबान का। हम सब अच्छी तरह परिचित हैं कि मन सुस्वादु खाना फास्ट फूड, तला-भुना पसंद करता है जो स्वास्थ्य के लिए अहितकर हैं। मन का स्वभाव किसी की आलोचना करना या सुनना है जिसमें कुछ समय के लिए आनन्द की प्राप्ति होती है लेकिन इन सभी का परिणाम बड़ा खतरनाक होता है। मन को काबू करना बड़ा कठिन है, लेकिन निरन्तर हम यदि सबदवाणी से नजदीकी बनाए रखेंगे, गुरु महाराज की दिव्य वाणी की संगति करेंगे तो धीरे-धीरे मन को नियंत्रण में रखा जा सकता है। इसलिए विद्यार्थी जीवन में सत्संगति का बड़ा महत्व है चाहे वह व्यक्ति की हो या किताबों की। आधुनिक समय तो संचार प्रौद्योगिकी का है।

सोशल मीडिया, मोबाइल गेम, इंटरनेट आदि साधन आज विद्यार्थियों की आसान पहुंच में है। कोरोना काल में ऑनलाइन पढ़ाई के कारण विद्यार्थियों की अंगुलियां मोबाइल पर नाचती रहती हैं। पूरे विश्व में इसके गंभीर परिणाम युवा वर्ग के लिए भयावह है। मोबाइल, इंटरनेट का प्रयोग कितना, कैसे सकारात्मक रूप से करना है, यह ज्यादातर विद्यार्थियों को समझ नहीं आता। उनका चंचल मन गेम, अश्लीलता भरी सामग्री का आदी होता जा रहा है। अभिभावक बड़े परेशानी के दौर से गुजर रहे हैं। विद्यार्थियों में गुस्सा, चिड़चिड़ापन, हिंसात्मक व्यवहार, बेचैनी बढ़ती जा रही है। आत्महत्या या हत्या तक के मामले इसे लेकर सामने आ रहे हैं। अध्यापकों को विद्यार्थियों में बढ़ती अनुशासनहीनता का सामना करना पड़ रहा है। कम आयु के लड़के व लड़कियों में मोबाइल के कारण अजीब तरह का व्यवहार पनप रहा है। यह सब कुछ कुसंगति या अच्छे-बुरे की समझ न होने का परिणाम है। इन साधनों का सकारात्मक रूप से प्रयोग किया जाए तो बहुत अच्छे नतीजे निकलते हैं। लेकिन कोमल व असंस्कारी मन ये नहीं समझ सकता। इसलिए सत्संगति जीवन का आभूषण बताया है। चरित्रवान नागरिक सत्संगति से ही निकलेंगे। कुसंगति सामाजिक परिवेश को दुश्चरित्र नागरिक प्रदान करेगी।

सत्संगति मनुष्य के व्यक्तित्व को निखारने का कार्य करती है। विद्यार्थियों में सद्गुणों का संचार करती है। दूषित पानी भी गंगा से मिलकर पेय बन जाता है और नदी का निर्मल जल सागर में गिरकर खारा बन जाता है। सत्संगति से आत्मा की शुद्धि होती है। कबीरदास फरमाते हैं-

संगति सों सुख्या ऊपने, कुसंगति सो दुख होय,
कह कबीर तहं जाइये, साधु संग जहँ होय।
सज्जन से सज्जन मिले होवे ज्ञान की बात,
गढ़हा से गदहा मिले खावे दो दो लात।

कहावत हैं कि 'जैसी संगत वैसी रंगत' संगति का प्रभाव मनुष्य के विचार, आचरण, कार्यकलाप पर पड़ना सर्वमान्य है। अच्छी संगत जीवन निर्माण का कार्य करती हैं। कुसंगति मनुष्य हमारे आचरण का हिस्सा बनते जाते हैं। आदतें ही संस्कार बनते हैं। जन्मों में आवागमन करता है। निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि भाग्य का निर्माण में संगति बड़ा सहायक तत्व हैं। आइये विचार करें कि विद्यार्थियों को सबदवाणी से जोड़ना कितना महत्वपूर्ण हैं।

-कृष्ण कुमार
(प्रवक्ता इतिहास) गांव लान्धड़ी
हाल निवासी-सैक्टर 14, हिसार, हरियाणा
मो.: 9416686549

मेहोजी गोदारा (विष्णोई) कृत रामायण

'राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है॥ -साकेत

जाम्भोजी महाराज (सं. 1508-1593) ने वि.सं. 1542 में विष्णोई सम्प्रदाय की स्थापना की। इनका साधन मार्ग मुख्यत: 'विष्णु नाम स्मरण' है और इस साधन मार्ग द्वारा साध्य स्वरूप विष्णु को प्राप्त करना 'साध्य' है। जाम्भोजी महाराज ने प्राय: अपने द्वारा उपास्य का वर्णन निर्गुण-निराकर ब्रह्म के रूप में किया है, यथा -

- 'तद होता एक निरंजण सिंभू, कै होता धुंधकारू'
- 'जपाँ तो एक निरालम्भ सिंभू, जिहिं के माई न पीऊ'
- 'अल्लाह अलेख अडाल अजोनी स्वयंभू, जिहिं का किसा विनाणी'
- सहस्र नाम साँई भल सिंभू अपना आदि मुरारी
- सुरगाँ हुंतो सिंभू आयो कहो कुणा कै काजै
- नव अवतार नमो नारायण ते पणि रूप हमारा थीयौ किन्तु वे बार-बार दशावतार की भी चर्चा करके स्वयं को नारायण का दसवाँ अवतार कहते हैं। वे कहते हैं कि नारायण के नौ अवतारों को नमस्कार करता हूँ किन्तु वे नवों अवतार मेरे ही रूप थे। मेरे से भिन्न नहीं।

यह एक बड़ी भारी उलझन है कि जाम्भोजी एक ओर निरंजन, स्वयंभू, निरालंब, अल्लाह (जो सर्व प्रथम, सब का आदि है) अलक्ष्य, निरवयव (अडाल), अजोनी (अजन्मा) के रूप में अपने उपास्य को बताते हैं तो इसकी ओर उसको सहस नाम वाला, स्वर्ग से आने वाला स्वयंभू तथा दशावतार लेने वाला बताते हैं। ऐसे परमात्मा को न तो हम निर्गुण-निराकार ही कह सकते हैं और न सगुण-साकार ही कह सकते हैं। इसको सगुण निराकर कहने में भी संकोच होता है। क्योंकि जाम्भोजी का नारायण, विष्णु या बाल अवतारी भी है।

विष्णोई सम्प्रदाय में प्रतिमा-पूजा का कोई विधान नहीं है। साथ ही, विष्णोइयों की आचार-संहिता (Code of conduct) रूप उन्तीस नियमों में भी प्रतिमा-सेवन का कोई विधान नहीं है। ऐसी स्थिति में अवतारों की कथाओं को आख्यान काव्यों के रूपों में विष्णोइयों द्वारा निर्मित करना, उनको श्रद्धा-भक्ति सहित पढ़ना, सुनना व गाना कहाँ तक उक्त दर्शन में अन्तभूति हो सकता है, विचारणीय है फिर भी विष्णोइयों ने स्वयं जाम्भोजी की उपस्थिति में ही अवतार-कथाओं पर आख्यानों को लिखना प्रारम्भ कर दिया था। ऐसे काव्यों में मेहोजी गोदारा कृत 'रामायण' का नाम शीर्ष पर आता है।

ये मेहोजी, शेखोजी थापन के पुत्र थे और इन्होंने लगभग वि.सं.1575 से 269 छंदों की एक संक्षिप्त रामायण की रचना की है यद्यपि इसमें राम के चरित्र की कई कड़ियाँ छुटी हुई है, कुछ घटनाएँ ऐसी हैं जो वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण, रामचरितमानस जैसे बहुमान्य ग्रंथों के तथ्यों के अनुक्रम में नहीं है तथापि इसकी कई घटनाएँ लोक प्रचलित राम कथाओं से मेल खा जाती हैं।

डॉ. हीरालाल माहेश्वरी ने इसका बहुत ही उम्दा, प्रामाणिक सम्पादन किया है और भूमिका में विद्वतापूर्ण विवेचन किया है। पूरी रामायण के पढ़ने पर कुछ ऐसे स्थल भी इस रामायण में मिलते हैं जो विष्णोई-पंथानु- मोदित विश्वासों, मूल्यों की व्ख्याख्या करते हैं। आगे हम संक्षेप में इन बिन्दुओं की चर्चा करना चाहेंगे।

डॉ. हीरालाल माहेश्वरी ने लिखा है कि मेहोजी लगभग 1540 वि.सं. में जन्मे तथा सम्वत् 1609 में विष्णु पद को प्राप्त हुए। ये आजीवन गृहस्थ जीवन जीते रहे। इन्होंने मुकाम से आकर जांगळू में मंदिर की स्थापना की और यहीं विष्णु पद को प्राप्त हुए। इनके पिता शेखोजी व ये जाम्भोजी के सतत् सम्पर्क में रहे। उनका सतसंग सुनते रहे व ज्ञान प्राप्त करते रहे। प्राय: सन्त-महात्मा ऐसे स्थानों पर अपना निराश करना अधिक पसन्द करते हैं जहाँ चार जकार वाली चीजें आसानी से उपलब्ध हों। ये चार जकार हैं- (1) जगह, (2) जल, (3) जिज्ञासी, (4) झोली।

रामायण लिखते समय मेहोजी ने उक्त चार में से जल स्थान रामसर की कल्पना दण्डकारण्यवन में की, जहाँ रामजी का सर्वाधिक निवास रहा और जहाँ ही सीताजी का हरण हुआ।

मेहोजी कहते हैं, रामजी ने जल के लिऐ 'रामसर' की खुदाई की। लक्ष्मणजी ने उसकी पाल बाँधी और सीताजी उस रामसर से स्वर्गकामरा द्विघटों में जल लाती हैं।

'राम खणावै रामसर, लछमता बाँधे पाल्य।
सिर सोने रो बेहड़ौ, सीतळदे पण्यहारि॥62॥

राम द्वारा दण्डकारण्य में'रामसर' का बनाना क्या विष्णोई धर्म सम्मत 'जाम्भोलाव स्तर' की स्मृति की उपस्थिति को मेहो जी के मस्तिष्क में दर्ज नहीं कराती? अवश्य कराती है। जांभोजी ने भी जांभोलाव सरोवर का निर्माण जल की आवश्यकता के उद्देश्य से ही करवाया। साधु को तो जल चाहिए ही, जो सतसंगी सत्संग सुनने आते हैं, उनको भी जल की जरूरत होती है। यही कारण है कि मेहोजी ने रामसर की एक नयी उद्भावना रामायण में कल्पित की है।

जिस प्रकार महाभारत युद्ध का बीज कारण द्रोपदी का कटाक्ष वाक्य माना जाता है – 'अंधे की संतान अंधी'। वैसा ही पूरी रामायण का बीज कारण मेहोजी इस रामसर को ही मानते हैं। वे कहते हैं कि जल भरने को रामसर पर सीता नहीं आती, अपितु 'कायह' अर्थात् 'राम- रावण युद्ध' का कारण ही आता है। मेहोजी की रामयण में 'सूर्पनखा' का नाम तक नहीं, ना ही उसके कारण रामजी का रावण का युद्ध इस रामसर पर सीता द्वारा जल भरने आने के कारण होता है। मेहोजी कहते हैं–

'राम खणायो राम सर, उणमें नीर अथाह।

सीता सरि आवै नहीं, आकल्य चालै काह॥63॥

सीता जल भरने जाते समय ही स्वर्ण मृग देखती है और नारी सुलभ मनोवृत्ति सौंदर्य के प्रति आकर्षण(मोह न नारि नारि के रूपा। पन्नगारि यह रीति अनूपा॥) के अनुसार स्वर्ण धर्म अपनी कंचुकी बनाने को चाहती है और रामजी को यह स्वर्ण मृग धर्म लाने को कहती है।

'हीर झलकै हिरण रै, चौकस रतन चिअरि।

उरि ऊपरि ओपैं भालौं, कांचू दे करतारि॥67॥

जितना विस्तृत और चोट करता हुआ सीता का राम से व सीता का लक्ष्मण से वर्णन मेहोजी करते हैं, उतना सीधी –सीधी चोट करता वर्णन रामचरितमानस में नहीं मिलता।

मेहोजी की रामायण में विष्णोइयों का एक महत्त्व पूर्ण नियम 'नित्य सुबह स्नान करना चाहिये' की व्यञ्जना उस समय हुई है जब महिरावण पाताल में रामजी व लक्ष्मजी की बलि देने की तैयारी करता है और कहता है –

'करो सिनान सिनानी हुंता, एक खड़ग होय तोडू।

माळादेई रै मढ आंगी, ले ले मुंड चहोडू॥223॥

तुम स्नान करो क्योंकि तुम स्नानी हो अर्थात् प्रतिदिन स्नान करते हो। स्नानोपरान्त मैं खड्ग के एक प्रहार से दोनों को काट डालूँ और मालादेवी के मढ़ में उसकी प्रतिमा के आगे तुम्हारे मुंडों को अर्पित करूँ। पवन पुत्र हनुमान मालादेवी के प्रतिमा में पहले से ही प्रवेश कर चुके थे। जैसे ही महिरावण ने मस्तक काटने को खड्ग उठाया, हनुमान जी ने जोरदार हुंकार मारी। उसकी गर्जना इतनी घोरतम थी कि महिरावण जैसे अप्रतिम मायावी योद्धा का भी हाथ कँपकँपा गया औा खड्ग नीचे गिर गया। यहाँ मेहोजी एक विशिष्ट बात कहते हैं कि भक्ति ही भगवान का स्मरण नहीं करते, भगवान भी भक्त का स्मरण करते हैं। गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं –

ये यथा में प्रपद्यन्ते तांस्तथै व भजाम्यहमू।

'जो मुझको जैसे भजता है, मैं भी उसको वैसे ही भजता हूँ।' गजराज का उदाहरण इस सम्बन्ध में प्रसिद्धतम है। जब मकर द्वारा गजराज को पानी में खींच लिया गया और उसकी सूंड तिल मात्र जल के ऊपर रही, तब उसने पूर्व संस्कार वश श्रीहरि का स्मरण किया और श्रीहरि गरुड़ को भी छोड़कर स्वयं ही नंगे पैरों दौड़कर आये और मक्र को मारकर गजराज का उद्धार किया।

मेहोजी भी उस प्रसंग में यही भावना व्यक्त करते हुए कहते हैं–

पड़पच करि करि पीड़ छलन्ता, न को तंत न मंतो।

लक्ष्मण तो रामचंदजी सिंवर्‍यौ, राम सिंवर्‍यौ हणवंतौ॥224॥

कवि कहते हैं, असुर तथा महीरावण ऐसे प्रपंच के द्वारा ही अपना काम करते थे (काम चलाते थे) (महीरावण के पास) न कोई तंत्र था न मंत्र था। (उसके ऐसा कहने पर) लक्ष्मण ने तो राम का ध्यान किया और राम ने हनुमान का। लक्ष्मणजी के द्वारा रामजी का स्मरण करना तो उचित लगता है क्योंकि रामजी षोड़शकला पूर्ण परब्रह्म परमात्मा है। महारामायण में कहा गया है– 'रामस्तु भगवान स्वयम्।' किन्तु रामजी के द्वारा हनुमानजी का स्मरण करना सामान्यजनों को उलझनपूर्ण लग सकता है। लगता है, यह तथ्य उलझनपूर्ण है नहीं। क्योंकि एक बार रामजी ने हनुमानजी से पूछा कि 'हे हनुमान! आप कौन हैं? तब हनुमानजी ने बड़ा ही सुन्दर उत्तर दिया। वे कहते हैं यदि आप मुझको 'देह' समझकर प्रश्न कर रहे हैं तो मैं आपका 'दास' हूँ। यदि आप मुझको 'जीव' समझते हैं तो मैं आपका 'अंश' हूँ। यदि आप 'परमार्थ दृष्टि' से मुझसे पूछ रहे है तो 'आप और मैं एक ही हैं; ऐस मेरा निश्चित मत है –

'देह दृष्ट्या तु दासोऽहं जीव दृष्ट्वा त्वदशकः।

वस्तुवस्तु त्वमेवाहमिति में निश्चित मतिः॥

–हनुमत्पञ्धरत्नस्तोत्र, शंकराचार्य कृत

तत्त्वदृष्टि से, पारमार्थिक दृष्टि से आत्मा और परमात्मा एक ही हैं। दोनों में लेशमात्र भी अंतर नहीं है। अतः रामजी ने हनुमानजी का स्मरण करके अपने आपका ही स्मरण किया है। मैं पुनः मेरे प्रारम्भिक कथन को उद्धत करूंगा जिसमें मैंने कहा है कि जाम्भोजी का साध्य या उपास्य निर्गुण निराकार परमात्मा का उपरोक्तानुभव करना है और इस उपरोक्तानुभूति का एकमात्र साधन 'विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी, हाथाँ करौ टबाई' है। यह विष्णु और कोई नहीं, स्वयं का ही सच्चिदानन्द स्वरूप है और इस सच्चिदानन्द स्वरूप का अनुसंधान करना अर्थात् श्रवण करके स्मरण करना, स्मरण करते–करते उसी का सतत् तैलधारावत् मनन और तत्पश्चात निदिध्यासन करना चहिए। यह निदिध्यासन या ध्यान ही स्वयं का स्वयं द्वारा अनुसंधान है जैसा कि आद्य शंकराचार्य महाराज ने कहा है –

'स्वरूपानुसंधान भक्तिरित्यभिधीयते'।

मेहोजी ने लक्ष्मणजी द्वारा राम जी का स्मरण कराकर और रामजी द्वारा हनुमानजी का स्मरण कराकर जाम्भोजी के मुख्य सिद्धान्त 'विष्णु -विष्णु तू भण रे प्राणी' का ही स्मरण करवाया है।

मेहोजी की रामायण में और भी जाम्भाणी सिद्धान्तों या विचारों के संकेत होंगे, उनका संधान जल्दी-जल्दी में मैं निकाल नहीं पाया गंभीर अध्ययनोपरान्त ऐसे ही मुक्ताओं को निकाल लेना हम जैसे अध्येताओं का कर्तव्य है।

अब मैं एक बात मेहोजी की रामायण के बारे में और कहना चाहता हूं कि मेहो जी ने रामायण को अत्यन्त संक्षिप्त रूप में तत्कालीन प्रचलित राजस्थानी भाषा में लोक में प्रचलित कथानकों के अनुसार लिखी है। इस रामायण के कई एक ऐसे प्रसंग हैं जो वाल्मीकि रामायण से या बाल्मीकि रामायण की छाया में निर्मित रामायणों से मेल नहीं खाते। ऐसे प्रसंग प्राय: लोक प्रचलित विश्वासों पर आधारित है। इनको निम्न प्रकार समझ सकते हैं -

(1) वाल्मीकि रामायण के अनुसार कैकेयी ने महाराज दशरथ की सहायता तब की जब इन्द्र की सहायता करने को गये और कैकेयी ने रथ के चक्र में अपना हाथ तक लगाया था। ऐसे अप्रतिम त्याग एवं सहयोग के कारण राजा दशरथ ने कैकेयी को दो वरदान मांगने को कहा किन्तु मेहोजी कहते हैं कि एक बार दशरथ अत्यधिक बीमार हुए तब कैकेयी ने दशरथ की हर प्रकार से सेवा की और दो वरदान प्राप्त किए।

(2) मेहोजी, विवाहोपरान्त सीता को राम व लक्ष्मण द्वारा लाना बताते हैं, सर्वथा असंभव सा लगता है। सीता को रामजी लाये। उर्मिला को लक्ष्मण लाए। मांडवी को भरत व श्रुतिकीर्ति को शत्रुघ्न लाये। मेहोजी की रामायण में राम व लक्ष्मण लाये। मेहोजी की रामायण में राम व लक्ष्मण का ही यथासार उल्लेख अधिक है।

मंडहा मेळ ज बीखरी, कीजैं कुल आचार।

ले सीतां घरि आविया, राघव लखण कंवार॥34॥

(3) एक विशेष व्यतिक्रम देखने को और मिलता है कि राम व लक्ष्मण को देश निकाला (देशोटा) पहले मिलता है। राम का विवाह बाद में होता है। दोनों देशोटे पर निकल पड़ते हैं और फिर बाद में इनका (रामजी का) विवाह होता है। जैसा हम बिन्दु दो में कह आये हैं, मेहोजी सीताजी को राम और लक्ष्मण द्वारा लाना लिखते है। यह इसलिए कल्पना मेहोजी द्वारा की गई कि इन दोनों को 14 वर्ष का वनवास पहले मिला और रामजी का विवाह देशोटे के पश्चात् हुआ। लक्ष्मण का विवाह राम जी के साथ नहीं हुआ। यदि लक्ष्मण का विवाह हुआ होता तो उर्मिला भी साथ में वनवास में ही होती किन्तु है नहीं।

यहां विशिष्टता और भी है कि वनवास में जाते समय भरत अपने ननिहाल में न होकर अयोध्या में ही हैं। वे रामजी के साथ जाने को उद्यत होते हैं। जाते भी हैं किन्तु रामजी उन्हें क्रोध में भरकर वापिस कर देते हैं। यहां तुलसी भरत के लिए कहते हैं -

भरत सरिस को रामसनेही। जगु जपु राम राम जपु जेही॥

वहां मेहोजी कहते हैं -

राम कहै रीसाय, भरथ चली परि बाहड़ो।

महलां उतारया (थारी) माय, देस निकाल्या रहखड़ो॥22॥

भरथ भयो अणराय, राघव रंने पधारिया।

गया तीण ज्यौं तोड़, नातो नेह निवारिया॥23॥

भरत को अपने साथ चलते देखकर राम ने क्रोध से कहा- भरत! यही उचित है कि तुम लौट जाओ। तुम्हारी माता ने (हमें) महलों से उतारकर मारे-मारे फिरने के लिए देश निकाला दिया है।22

रामजी के उक्त वचन सुनकर भरत उदास हो गया। सांसारिक सम्बन्धों और स्नेह को तिनके के समान तोड़कर (रामचन्द्रजी वन में) चले गये।23

मेहोजी ने रामजी की भाषा कैकेयी के प्रति अवज्ञापूर्ण कहलवाई है किन्तु तुलसी दास जी ने रामजी के द्वारा कैकेयी के प्रति कौशल्या माता से भी अधिक आदर, सम्मान व श्रद्धा-भक्ति व्यक्त करवाते हैं। जब रामजी से भरत की अगुआई में समस्त पुरवासी चित्रकूट गये, तब रामजी ने सर्वप्रथम कैकेयी से भेंट की, वह भी मन को भक्ति से सराबोर करते हुए सरल स्वभाव से। पैरों में प्रणाम करके कैकेयी माता को अनेक प्रकार से प्रबोधित की तथा कहा कि वनवास में हमको आपने नहीं भेजा है, यह काल व प्रारब्ध के कारण ही ऐसा हुआ है। यदि कोई दोषी है तो काल व मेरा भाग्य है। हे माता! आप दोषी नहीं हैं।

प्रथम राम भेंटी कैकेयी। सराम सुभीयं भगति मति भेई।

पग परि कीन्ह प्रबोधु बहोरी, काल करम विधि सिर धरि खोरी॥244/8

भेंटी रघुवर सतु सब, करि प्रबोधु परितोषु।

अब ईस आधीन जगु, काहु न देहअ दोषु॥244॥

सीता हरण का कारण, दण्डकारण्य वन में सूर्पनखा प्रसंग का कहीं नाम तक नहीं, मेहोजी रामायण में। मेहोजी लौकिक काव्यों की भांति सीता हरण का कारण बताते हैं। रावण ने जनकपुर में सीताजी को देखा अवश्य किन्तु यहां रावण ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। रावण जाकर लंका में अपने योद्धा भोज से कहता है कि सीता को जो विवाहित करके ले गया, उसकी खबर लाओ और भोज पंचवटी में ही

खबर लेने आता है। खबर ले जाकर रावण को देता है और कहता है जैसी सीता सुन्दरी है, वैसी स्वर्ग में हो तो हो, अन्यथा भूमि पर तो है नहीं। तेरी पटरानी मंदोदरी तो सीता के यहां की पनिहारिनों से भी गई गुजरी है।

दीठी राणी रावळी, मन भीतरि विपळोय।

सीत सरीसी भारिजा, (काई) सुरगां होत त होय॥53॥

नीणे नवखंड थाधिया, दीठा छै चक च्यारि।

थारै पाट मंदोवरी, (उण) सीता री पणिहारि॥48॥

भोज ने कहा– मैंने नवखण्ड पृथिवी खोजी है तथा चारों दिशाएं भी भली भांति देख ली है। आपकी पटरानी मन्दोदरी तो उस सीता की पनिहारिन जैसी है। (उसके सामने पानी भरती है अर्थात् सीता की कोई समता नहीं है।) सीता के रूप वर्णन में मेहोजी ने सामान्य रीति का ही अवलम्बन लिया है। इस वर्णन से यह भी ज्ञात होता है कि मेहोजी का ब्राह्मणों या कवियों से कोई संसर्ग नहीं था। यदि उनका संसर्ग होता तो निश्चित रूप मेहोजी यहां रीतिबद्ध साहित्य जगत की चार प्रकार की नारियों (1) पद्मिनी, (2) हंसिनी (3) चित्रणी व (4) शंखिनी का वर्णन भोज के मुंह से करवाते। उन्होंने तो लोक प्रचलित व्यावहारिक बात परिहारिन को करके अपनी बात पूरी की है।

इस प्रसंग में न 'खर-दूषण' और 'मारीच' और न 'सूर्पनखा' का प्रसंग ही सामने आता है। इससे ऐसा लगता है कि मेहोजी को रामायण के प्रति जो भी जानकारियां प्राप्त थीं, वे लोकाधारित स्थान पर ही आधारित थीं।

(4) मेहोजी की रामायण में 'हनुमान मिलन, सुग्रीव मिलाई' जैसे प्रसंग भी नहीं हैं। हनुमानजी भी अचानक उस समय आ मिलते हैं, जब राम व लक्ष्मण सीता को खोजते हुए जंगल में घूम रहे हैं। जिस प्रकार पत्नी के वियोग में रोने वाले पति को सामान्यत: साधारणजन समझाते हुए कहते हैं कि पागल क्यों हो रहा है? जाने वाली चली गई। आने वाली नहीं। अब धैर्य धारण कर। इसी प्रकार लोक की भाषा में ही मेहोजी रामजी को बार-बार गहला (मूर्ख, पागल) लक्ष्मण व हनुमानजी के मुंह से कहलाते हैं।

मेहोजी यहां तक ही नहीं रूकते, वे सीता को भी सामान्य जागतिक नारी की तरह बेवफा स्त्री के रूप में चित्रित करते हैं कि स्त्रियां पहले तो पति को मार डालती हैं फिर दुनिया दिखाने को सती होती हैं। ये समस्त कथानक राम के, सीता के ईश्वरत्व व लीला नायकत्व को खंडित करते दिखते हैं। प्रकारान्तर से देखें तो मेहोजी नारी के प्रति रीतिकालीन रवैया अपनाते हैं, जहां नारी केवल अपने स्वार्थ में अंधी रहती है, कामाभिभूत रहती है और पतिव्रता होने का लोक दिखावा करती है। जबकि रामायण में राम का ही नहीं, सीता का भी चरित्र मर्यादा स्थापना करने के लिए आदर्श माना जाता है। लक्ष्मण द्वारा रामजी को गहला कहना–

राम रोवे लक्ष्मण धीरवै, गहला राम न रोय।

सीत गई तो जाण दे, ले लोटी मुख धोय॥101॥

हनुमान का कथन तो और भी चौंकाने वाला है। मेहोजी ने नरलीला का वर्णन न करके लगता है 'नर चरित्र' का ही वर्णन किया है। हनुमानजी कहते हैं –

राम रोवै लक्ष्मण धीरवै, गणवंत मेल्है चीस।

सीता गई तो जाण दे, अवर अणाऊँ बीस॥102॥

विलाप करते हुए राम को लक्ष्मण धैर्य बंधा रहे हैं। रह-रहकर उठने वाली पीड़ा को दबाते हुए हनुमानजी कहते हैं, हे राम! यदि सीता गई तो जाने दो, मैं (वैसी) बीस और ला दूंगा।102

पुन: लक्ष्मण कहते हैं –

पहलू मारै पुरिष नै, साथ सती पण्य होय।

तया भरोसौ जन करौ, गहला राम न रोय॥107॥

स्त्री पहले अपने पति को मारकर फिर उसके साथ सती भी होती है। इसलिए स्त्री का विश्वास नहीं करना चाहिए। हे राम! बावले हुए हो क्या? विलाप मत करो।107

वाल्मीकि रामायण में वर्णन है कि राम-सुग्रीव की मित्रता के समय जब सुग्रीव ने सीताजी द्वारा डाले गये आभूषणों की पोटली दी, तब रामजी उनको देखकर पहचान गये और शोक विह्वल हो गये।

मागा राम तुरत तेहिं दीन्हा। पर उर लाई सोच अति कीन्हा॥

तुलसी केवल रामजी का सोचमग्न होना कहते हैं किन्तु वाल्मीकि लक्ष्मण जी के चरित्र को उदात्ततम वर्णित करते हुए कहते हैं कि राम के पूछने पर लक्ष्मण ने कहा, मैं केवल माता सीता के बिछियों को ही पहचानता हूं, अन्य आभूषणों को नहीं क्योंकि मैं प्रात:काल सीता माता को चरणों में प्रणाम करता हूँ तब इन बिछियों का ही दर्शन करता हूँ। चरणों के ऊपर मैंने माता सीता को कभी देखा ही नहीं, तो मैं चूड़ामणि इत्यादि को कैसे पहचान सकता हूँ। जो लक्ष्मण सीता माता के प्रति इतनी उदात्ततम सर्वोच्च भावना रखते है, वे कैसे कह सकते हैं कि स्त्री विश्वास योग्य नहीं होती। पहले पति को मार डालती है, फिर दुनिया दिखाने को सती होने का ढोंग करती है।

आगे जाकर जब अशोक वाटिका में मंदोदरी और सीता का सम्वाद होता है, तब मेहोजी सीताजी के सतीत्व को बहुत ऊंचे स्तर पर उठाकर वर्णित करते हैं। वहां की सीता और यहां की सीता के चरित्र व महिमामंडन में कोसों का फासला हो गया है। एक सफल कवि का कविकर्म तब सफल माना जा सकता है तब उसके पात्रों का चित्रण शुरू से अंत तक एक जैसे आदर्श, चरित्र, आत्मबल व कम्पन वाले

हों। यदि समय-समय पर चरित्र बदलता है, विचारधारा बदलती है। किसी पात्र की तो वह आदर्श पात्र न होकर नाटक का नर ही हो सकता है। मंदोदरी व सीता का अशोक वाटिका में हुआ संवद वास्तव में सीता के आदर्श के अनुकूल ही है। वास्तव में आख्यान काव्यों के चरित्र आजकल के औपन्यासिक पात्रों के यथार्थ मूलक जैसे चरित्र नहीं होते। इन धार्मिक आख्यानकों का उद्देश्य होता है -

अनुग्रहाय भक्तानां मानुषं देहमात्रितः।
भजतेतादृशीः क्रीड़ा या श्रुत्वा तत्परोभवेत्॥

-श्रीमद्भाग. 10/33/38

भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं, मैं भक्तों पर अनुग्रह करने को मनुष्य शरीर का आश्रय लेकर भूतल पर आता हूँ और वैसी ही क्रीड़ाएं या लीलाएं करती हूं जिनको सुनकर मेरे भक्त उन लीलाओं के परायण होते हैं। उनकी चित्तवृति उन लीलाओं के सुनने, गाने व देखने में लगकर वे आत्मपरायण हो जाते हैं। हाँ, मंदोदरी पूछती है-

मंदोदरी महलां ऊतरै, सीतां सत भोळावण।
आई बाग मंदोदरी, सीता करिसी रावण॥168॥

मंदोदरी सीता को उसके सतीत्व की संभाल देने को महलों से उतरकर अशोकवाटिका में आई और बोली, सीता तुम्हें रावण अपनी बनाएगा।

इस पर सीता का उत्तर-

अल्यौ म चवै मंदोदरी, अळिये लागै पाप।
सी रावण कियौ न कीजेसी, सी के रावण बाप॥199॥

हे मंदोदरी! अपवित्र वचन मत बोल। उससे पाप लगता है। सीता को रावण ने न उत्पन्न किया है और न कर सकेगा। सीता के लिए रावण तो पिता तुल्य है।197

मंदोदरी पुनः कहती है -

जांहरा म्हे सिवरण करां, नित रा करां अवास।
सीता सती कहावती, क्यौं छोड़यो पिव पास॥197॥

जिस पति (रावण) का मैं स्मरण करती हूं, सदा उसी के साथ रहती हूं किन्तु हे सती कहलाने वाली सीता! फिर तुमने अपने पति का साथ क्यों छोड़ा? इस पर सीता सामाजिक या सांसारिक स्त्रियोचित उत्तर न देकर, अवतारी सीता जैसा उत्तर देती है कि अब भी समय है, रावण सुधर जाए, मुझे मेरे पति के पास सकुशल पहुंचा दे अन्यथा चार कार्य होंगे। ये चार ही मुख्य उद्देश्य हमारे इस धरती पर आने के हैं। सीता कहती है-

क्यौं भेळीजै त्रकट गढ, क्यों तूटै दसबीस।
तो नै दीण रंडेपड़ौ, छोड़ावण तेतीस॥198॥

यदि मैं ऐसा न करती तो, लंका कैसे नष्ट होती? रावण के दस सिर व बीस भुजाएं कैसे टूटती? तुझको वैधव्य देने और तेतीस कोटि देवताओं को बन्धनमुक्त करवाने के लिए मैंने ऐसा किया। और भी मेहोजी के लछमण जी भी सीता को सती या सतवंती तब कहते हैं, जब लंका पर आक्रमण करने की तैयारी करते हैं-

लछमण तेड़ै वंदरा, हणवत कहलौ आव।
रावण मारि लंकालिवां, सती छुड़ावण जांह॥189॥

लक्ष्मणजी बन्दरों को बुला रहे हैं। हे हनुमान! शीघ्र आओ। हम लोग रावण को मारकर लंका को लें और सती (सीता) को छुड़ाने चलें।189

रीछां महति अठार पदम, कोड़ि खंदारां हीवा।
मारां दैतां दांणवा, जम लग घातां सीवा॥190॥

लक्ष्मण कहते हैं, हमारी सेना में रीछों सहित अठारह पदम सैनिक व करोड़ों कंधारी घोड़े हैं। आओ हम दैत्यों और दानवों को मारें और उनको यमलोक की सीमा में पहुंचा दें।190

मेहोजी रामजी की सेना में करोड़ों कंधारी नस्ल के घोड़े बताते हैं जबकि तुलसीदास तो 'रावण रथी विरथ रघुवीरा' कहते हैं। रावण रथ पर चढ़कर युद्ध करता है, जबकि रामजी पैदल, जमीन पर खड़े होकर युद्ध करते हैं। बंदरों को घोड़ों, हाथियों की जरूरत नहीं। रामजी की सेना में मनुष्य केवल राम व लक्ष्मण ही थे, फिर घोड़ों की जरूरत किनके लिए थी। तुलसी ने रामजी के रथ का एक बहुत ही उम्दा सांग रूपक प्रस्तुत किया है। पढ़ें-

रामजी का विभीषण के प्रति उत्तर -

सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहि जय होई सो स्यन्दन उनना॥
सौरज धीरज तोहे रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका॥
बल विवेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे॥
ईस भजन सारथी सुजाना। विरति चर्म संतोष कृजना॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। वर विग्यान कठिन को दण्डा॥
अमल अचल मन त्रोन समाना। सम दम नियम सिलीमुख नाना॥
कवच अभेद विप्र गुरु पूजा। सर्द सम विजय उपाय न दूजा॥
सरग धर्ममय उक्त रथ जाके। जीतन कहं न कतहुंरिपु ताके।80।

लंकाकांड

देवन्ह प्रभुहि पयादें देखा। उपजा उर अति छोभ विसेषा॥
सुरपति निज रथ तुरत पठावा। हरष सहित मातलि लै आवा॥
तेज पुंज रथ दिव्य अनूपा। हरषि चढ़ेकोग्रासपुर भूपा॥89।

(1-21 लंकाकांड)

-ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल
284, लेन 3, पश्चिम छोर मार्ग, सैदुला अजब,
मेहरौली, नई दिल्ली
मो.: 9351503555
Email: bksinghal57@gmail.com

मरण बिसारो केहू

गुरु जम्भेश्वर भगवान सबदवाणी में फरमाते हैं कि 'मरण बिसारो केहू' मृत्यु को मत भूलो, मृत्यु सत्य है। जिसने भी दुनिया में जन्म लिया है, उसको एक दिन मरना ही है, इसको कोई झुठला नहीं सकता है। इसलिए मोह, माया तथा स्वार्थ को त्याग कर परमात्मा के स्मरण तथा परमार्थ के कार्यों में लग जाना चाहिए, यही जीवन का अंतिम सत्य है। हम कितना ही पद, पैसा तथा प्रतिष्ठा प्राप्त कर लें, सब क्षणभंगुर तथा अस्थाई हैं। ऐसी ही एक शख्सियत की आपबीती से अवगत कराते हैं। दुनियां की बहुत ही मशहूर फैशन डिजाइनर और लेखिका करीसदा रोड्रिगेज कैंसर से अपनी मौत से पहले लिखती है।

1. मेरे कार गैराज में दुनियां की सबसे महंगी कारें खड़ी हैं, पर मैं अस्पताल की व्हीलचेयर पर सफर करती हूं।
2. घर में मेरी अलमारी में हर तरह के महंगे कपड़े हैं, हीरे-जवाहरात के गहने, बेशुमार महंगे जूते पड़े हैं पर मैं अस्पताल की दी हुई एक सफेद चादर मे नंगे पैर लिपटी हुई हूं।
3. मेरे बैंक में बेशुमार पैसे हैं पर अब मेरे किसी काम के नहीं हैं।
4. मेरा घर एक महल की तरह है पर मैं अस्पताल में डबल साइज बेड पर पड़ी हुई हूं।
5. मैं एक फाइव स्टार होटल से दूसरे फाइव स्टार होटल में बदल-बदल कर रह सकती हूं पर इधर एक लैबोरेट्री से दूसरी लैबोरेटरी के बीच घूमती हूं।
6. मैंने करोड़ों चाहने वालों को अपने ऑटोग्राफ दिए हैं पर आज मैंने डॉक्टर के आखरी नोट पर दस्तखत कर दिए हैं।
7. मेरे पास 7 महंगे बालों को सिंगारने वाले ज्वैलरी सेट हैं पर आज मेरे सिर पर बाल ही नहीं हैं।
8. अपने निजी जहाज पर मैं कहीं पर भी एक स्थान से दूसरी जगह पर जा सकती थी पर इधर मेरे को आज व्हील चेयर पर बिठाने के लिए भी दो आदमियों की जरूरत पड़ती है।
9. वैसे तो मेरे रसोई में बहुत तरह के खाने हैं, परन्तु मेरा खाना सबेरे दो गोलियां और शाम को थोड़ा सा दूध है।
10. मेरा घर, मेरा पैसा, मेरी कारें, मेरी महंगी ज्वैलरी, मेरी शोहरत किसी काम नहीं आ रही जिसके पीछे मैंने सारी उम्र जद्दोजहद की थी।

जिंदगी बहुत छोटी है मौत सबसे बड़ा सच है पर हम इस सच को भूलाए बैठे हैं। कोशिश करिए हर एक की मदद करिए, किसी का हक ना मारिए, अहंकारी ना बनिए। हर इंसान का सत्कार करिए, हर एक को गले लगाइए। अपने भाई-बहनों से बातचीत करते रहिए।

मस्त रहिए, व्यस्त रहिए और तंदुरुस्त रहिए।

-डॉ. उदयराज खिलेरी, अध्यापक
गांव मेघावा, तह. चितलवाना, जिला जालोर (राज.)
मो.: 8003238748

तिरंगा

तिरंगा है हमारी जान,
कहलाता देश की शान।
तीन रंगों से बना तिरंगा,
बढ़ता हम सब की मान॥
केसरिया रंग साहस देता,
श्वेत रंग शांति दिखलाता।
हरा रंग विकास को बता,
तिरंगा बहुत कुछ बताता॥
तिरंगे मध्य में अशोक चक्र,
निरंतर हमें बढ़ने को कहता।
राजपथ और लाल किले पर,
तिरंगा देश की शान बढ़ाता॥
तिरंगा है देश की पहचान,
रखेंगे हम सब इसका मान।
तिरंगे की रक्षा के खातिर,
कर देंगे अपने प्राण कुर्बान॥
आओ आज हम सब मिलकर,
जन गण मन राष्ट्र गान गाएं।
जाति-धर्म का भेद मिटाकर,
अपने देश का हम मान बढ़ाएं॥

-अंकुर सिंह
हरदासीपुर, चंदवक, जौनपुर, उ.प्र.-222129
मो.: 8367782654, 8792257267

ना कोई मंत्र, ना कोई जाप

ना कोई मंत्र, ना कोई जाप,
ना कोई गुनाह, ना कोई पाप,
पाखंडी के चक्करा में.....
क्यों पड़ो रे... बेटी रा बाप....
विष्णु रो नाम रटो....
संकट कट जाई, आपो ही आप ॥1 ॥

अंग्रेजी पढ़-पढ़के बणगे बच्चे अंग्रेज...
सबदवाणी न गए भूल...
नशा करना और कराणो बणगयो...
29 नियमों को गए भूल....
बेटी-बेटा वरगी तो चोखो...
पर बेटो बणगो बाप...
आजकल रिश्ते कच्चे धागे...
टूटे जाएं आपो-ही-आप...
ना कोई गुनाह ना कोई पाप...
ना कोई मंत्र ना कोई जाप... ॥2 ॥

सुन्दर रूप मालिक को दिओड़ो...
आछो कपड़ो दर्जी को सिओड़ो...
चोखो लाड़ाऊ माताजी गो पालड़ो...
बढ़ीयाऊ बढ़ीया स्कूल में बापू गो पढ़ायड़ो...
कुकर भूल गयोरे, प्रार्थना में लेट शास्त्री मास्टर
ऊडंडो पडड़ो...
पत्ता नी कित कमी रह गयी...
नशा-दारू शरीर में बह गी...
बाकी दिन पिए माड़ा ता माड़ा...
अमावश्य... पूर्णिमा गो लोरा ल पियड़ो ?
आजो सारा मिलकर नशे से समाज को बचावां।
एक-दूसरे से जैसे नशा सिखा...
जैसे ही एक-एक से नशा छुड़ावां.... ॥
एक-दो समझावां, दो-चार समझ जी आपो ही आप,
ना कोई मंत्र ना कोई जाप
ना कोई गुनाह ना कोई पाप... ॥3 ॥

आपा किस चीज का घमंड करां,
पैसा टका एक घड़ी रो...
रंग रूप यमराज की एक छड़ी रो...
चंद पैसा दहेज खातर ना किसी बहन को पिहर तकड़ो
एक दिन सबन ओढणो है ऐसो कपड़ो...
जिसके ना कोई जेब, ना कोई नाप...
ना कोई गुनाह, ना कोई पाप...
ना कोई मंत्र, ना कोई जाप... ॥4 ॥

सीनू आपा सारा बिश्नोई मिल र प्रण ला...
अपने आपकी बुराई मिटा र....
समाज में अच्छाई फैलावां ला....
नशा त्याग र, पेड़-पौधे लगावां ला....
बिश्नोई समाज र पर्यावरण बचावां ला...
सुते हुए बिश्नोइयां न जगावां ला...

29 नियम ही सच्चा बिश्नोई...
ना कोई जात, ना कोई पात...
ना कोई मंत्र, ना कोई जाप...
ना कोई गुनाह, ना कोई पाप...
विष्णु रो नाम रटो....
हो जाओगे मालो-माल....
आपो - ही - आप ॥5 ॥

-सीनू बड़ोपल, फतेहाबाद
मो.: 9896438693, 7210070021

सूचना

अमर ज्योति पत्रिका के समस्त सदस्यों व पाठकों को सूचित किया जाता है कि पत्रिका के मुद्रण व प्रकाशन की दरों में वृद्धि के चलते पत्रिका की वार्षिक व आजीवन सदस्यता की दरों को जनवरी 2022 से संशोधित किया जा रहा है। संशोधित दरों के अनुसार पत्रिका की वार्षिक सदस्यता राशि 150 रुपए तथा आजीवन सदस्यता राशि 1300 रुपए निर्धारित की गई है। सदस्यता राशि की दर में यह किंचित बढ़ोतरी पत्रिका के अबाधित संचालन व प्रकाशन हेतु की गई है। अत: आपसे पुन: आग्रह है कि अपनी चहेती पत्रिका की सदस्यता राशि की दरों में बढ़ोतरी को सहर्ष स्वीकार करते हुए इसके सदस्यता अभियान को बढ़ाने में आपका सहयोग वांछित है। **-सम्पादक**

खेतीबाड़ी

उत्तम खेती (भाग—5) प्राकृतिक खेती

जापान के एक किसान और दार्शनिक मासानोबु फुकुओका द्वारा स्थापित पर्यावरणरक्षी खेती को प्राकृतिक खेती कहा जाता है। इस पद्धति में कुछ भी नहीं करने की सलाह दी जाती है, जैसे कि जुताई न करना, गुड़ाई न करना, निराई न करना, उर्वरक नहीं डालना, कीटनाशक नहीं डालना इत्यादि। जापान के अलावा चीन, कोरिया में भी प्राकृतिक खेती की जाती है।

प्राकृतिक खेती के सिद्धान्त :-

1. **जुताई नहीं करना**– इसमें मिट्टी को पलटने के लिये खेती की जुताई नहीं की जाती है। केंचुए और जीवाणु एवं जैविक कार्बन मिट्टी को पोला रखते हैं जिससे मिट्टी में प्राणवायु का संचार होता रहता है। गहरी जुताई करने से ऊपरी सतह की उपजाऊ मिट्टी और जीवाणु नीचे दब जाते है, इससे मिट्टी को पलटने और जुताई पर लगने वाला बहुत बड़ा खर्चा बच जाता है। इसे अंग्रेजी में नो टिलिंग (no tilling) कहा जाता है।

2. **किसी भी तरह के तैयार या रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं करना**– जैसे प्रकृति में जंगलों, वनों के पेड़–पौधे अपने और अन्य जैविक अवशेषों से अपना भोजन स्वंय बनाते है और उन्हें किसी बाहरी खाद की जरूरत नहीं होती है, उसी सिद्धान्त से ही प्राकृतिक खेती की जाती है। (लेकिन इसके सुधरे हुए स्वरूप में जैविक खाद को बाहर से डाला जा सकता है।)

3. **निराई–गुड़ाई नहीं करना**– हलों या औजारों से किसी भी तरह की निराई–गुड़ाई नहीं की जाती है क्योंकि इससे मिट्टी के जीवों, केंचुओं को हानि होती है, छिद्र बन्द होते हैं, जिनमें प्राणवायु होती है। खरपतवार भी मिट्टी में जीवन, जैविक संतुलन और मिट्टी की उर्वरक शक्ति को बढ़ाने के लिये उपयोगी माने जाते हैं। खरपतवारों को बिल्कुल समाप्त करने की जगह उन्हें नियंत्रित किया जा सकता है। चूंकि खरपतवार खाली और रोशनी/धूप वाली जगह पर अधिक पनपते हैं इसलिये जमीन पर पुआल (मल्चिंग) बिछाकर खरपतवारों को नियंत्रित किया जा सकता है। खाली जगह पर मेथी जैसी फसल उगाई जा सकती है जिससे भूमि की उर्वरकता भी बढ़ती है। बुवाई करने और मिट्टी को पलटने से गहराई में मिट्टी में छिपे खरपतवार के बीजों को भी बाहर आकर उगने का मौका मिल जाता है।

4. **रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग नहीं करना**– इस पद्धति से उत्पन्न पौधे स्वस्थ होते हैं इसलिये उनमें रोगों से लड़ने की शक्ति अधिक होती है। प्रकृति में मित्र कीट हानिकारक कीटों को खाकर संतुलन बनाये रखते हैं।

भारत में देशी गाय पर आधारित खेती को भी प्राकृतिक खेती कहा जाता है। यह प्राचीन कृषि पद्धति है इसमें भूमि के प्राकृतिक स्वरूप को बनाये रखा जाता है। इसमें फैक्ट्री में बने रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। गाय के गोबर और फसल अवशेषों से बनी हुई जीवाणु खाद (कम्पोस्ट) का उपयोग किया जाता है। हरी खाद का भी उपयोग किया जाता है। इसके अलावा प्राकृतिक रूप में उपलब्ध खनिज लवणों जैसे कि रॉक फास्फेट, जिप्सम, चुना इत्यादि का भी उपयोग किया जाता है।

गाय के मूत्र और पशुओं द्वारा नहीं खाये जाने वाले पेड़–पौधों, खरपतवारों, छाछ इत्यादि द्वारा जैविक कीटनाशक बनाये जाते है। मित्र कीटों, मित्र जीवों का भी उपयोग किया जाता है। किसानों द्वारा स्वयं तैयार किये बीजों का प्रयोग किया जाता है।

प्राकृतिक खेती के फायदे :-

1. महंगे और हानिकारक रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की बजाय, आसानी से उपलब्ध जैविक खाद और कीटनाशकों का उपयोग होता है। इससे खेती में लागत कम आती है।

2. पर्यावरण, धरती, जल और स्वास्थ्य को नुकसान नहीं पहुंचता है।

3. अच्छे जीवाणुओं और केंचुओं की संख्या बढ़ने से मिट्टी की उर्वरक शक्ति प्राकृतिक रूप से बढ़ती रहती है। मिट्टी में लाभदायक जैविक कार्बन की मात्रा बढ़ती है जो मिट्टी के उपजाऊपन और स्वास्थ्य के लिये आवश्यक होता है। जैविक कार्बन की वजह से ही जीवाणुओं की संख्या बढ़ती है।

4. पौधे की रोग प्रतिरोधक शक्ति अधिक होती है जिससे उत्पादन अधिक होता है और बाहरी कीटनाशकों की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

5. सिंचाई के लिये कम पानी लगता है। मिट्टी में मौजूद जैविक कार्बन मिट्टी की नमी को बनाये रखता है, पानी को सोखकर रखता है।

6. फसल अवशेष, गोबर और अन्य जैविक कचरे का सदुपयोग हो जाता है।

7. सरकार द्वारा रासायनिक उर्वरकों में सब्सिडी पर किया खर्च बचता है।

प्राकृतिक खेती की सीमाएं, समस्याएँ और समाधानः-

1. सरकार द्वारा उतनी सब्सिडी और सुविधाएं नहीं प्रदान की जाती है, जितनी रासायनिक खेती में की जाती है लेकिन धीरे-धीरे सुविधायें बढ़ रही हैं।

2. जैविक उत्पादों का उचित मूल्य नहीं मिल पाता है।

3. सरकार की तरफ से प्राकृतिक खेती के लिये उपलब्ध जानकारी, प्रचार-प्रसार, ट्रेनिंग, प्रोत्साहन, सुविधाएं पर्याप्त नहीं है।

4. पशुपालन घटने से जैविक खाद महंगी हो रही है।

5. जुताई और निराई गुड़ाई नहीं करने से खरपतवार की समस्या तो आती है, जिसके लिये हल्की (कम गहरी) जुताई की जा सकती है। पकने (बीज आने) से पहले ही खरपतवार को हटाकर जमीन में दबाया जा सकता है, जिससे अगली फसल में खरपतवार कम पैदा होंगे और जमीन को हरी खाद भी मिलेगी।

प्राकृतिक खेती के नए स्वरूप :-

अलग-अलग लोगों द्वारा समय समय पर प्राकृतिक खेती पर आधारित स्वरूप सामने आते हैं जैसे कि शून्य बजट खेती, जीरो बजट प्राकृतिक खेती (ZBNF), जैविक खेती, कुदरती खेती, ऋषि खेती, आध्यात्मिक खेती इत्यादि। इस खेती के साथ-साथ पशुपालन भी किया जाता है जो इसमें सहायक होता है। एक देशी गाय से 30 एकड़ जमीन पर प्राकृतिक खेती की जा सकती है। गाय के गोबर और गोमूत्र से जीवामृत, घन जीवामृत, बीजामृत बनाया जाता है। इस खेती में खुले सतही पानी से सिंचाई को मना किया जाता है, क्योंकि उससे जमीन के जीवाणुओं, जीवों की दम घुटकर मौत हो जाती है। अधिकतर पानी पौधे की जड़ों से नीचे जमीन में बेकार चला जाता है। धरती की सतह के पानी वाष्पित होकर उड़कर बेकार चला जाता है। इस खेती में यह माना जाता है कि पौधों की जड़ों में भोजन बनाने वाले जीवाणुओं को सिर्फ नमी (वाष्प) की ही आवश्यकता होती है।

भूमि की उर्वरा शक्ति को बचाए रखने हेतु फसल चक्र, हरी खाद, कंपोस्ट इत्यादि का उपयोग किया जा सकता है। केंचुए को किसान का सबसे बड़ा मित्र माना जाता है जो भूमि को पोली भी करता है और फसल अवशेष से पौधों के लिये खाद भी तैयार करता है। बागवानी भी प्राकृतिक खेती की पद्धति से की जा सकती है जिसके लिये सरकार भी सुविधाएं देती है। श्री राजीव दीक्षित और श्री सुभाष पालेकर जैसे कई लोगों ने प्राकृतिक खेती के लिये किसानों को प्रेरित किया। सुभाष पालेकर जी ने तो उन द्वारा प्रचारित प्राकृतिक खेती को सुभाष पालेकर जीरो बजट (SPZB) खेती नाम दिया। अब तो सरकार भी इसको बढ़ावा देने के लिये भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति (BPKP) योजना चला रही है। इस योजना के तहत सरकार किसानों को 12200 रुपये प्रति हैक्टेयर की राशि दे रही है।

छोटे और सीमांत किसानों के बीच जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए 2015 में शुरू की गई परम्परागत कृषि विकास योजना द्वारा भी सरकार सहायता दे रही है।

सुभाष पालेकर जीरो बजट प्राकृतिक खेती (SPNF):-

कर्नाटक में एक कृषि वैज्ञानिक और किसान श्री सुभाष पालेकर जी द्वारा शुरू की गई इस कृषि पद्धति के चार सिद्धान्त है :-

1. जीवामृत- जीवामृत की मदद से जमीन को पोषक तत्व मिलते हैं और यह उत्प्रेरक एजेंट का काम करता है जिससे मिट्टी में सूक्ष्म जीवों की संख्या बढ़ जाती है जो पौधों के लिये ग्रहण योग्य पोषक तत्व तैयार करते हैं। इससे पौधों में रोगों से लड़ने की क्षमता भी बढ़ती है।

जीवामृत तैयार करने की विधि :- एक ड्रम या टैंक में 200 लीटर पानी लेकर उसमें 10 लीटर गाय का ताजा गोबर, 5 से 10 लीटर गाय का मूत्र, 2 किलो किसी भी दाल का आटा, 2 किलो पुराना गुड़ (या 4 लीटर गन्ने का रस या 1 किलो मीठे फलों का गुदा), 1 किलो पुराने पेड़ के निचे की या मेड़ की मिट्टी मिला दें। मिलाकर इस मिश्रण को कपड़े या जूट के बोरे से ढककर 48 घण्टों के लिये छाया में रख दें। दिन में दो बार इसे लकड़ी से घड़ी की सुई की दिशा में घुमाकर मिलाते रहें। 48 घण्टों बाद यह मिश्रण उपयोग के लिये तैयार है। देशी गाय का गोबर और मूत्र सर्वश्रेष्ठ माना जाता है क्योंकि उसमें उपयोगी जीवाणुओं की संख्या और पोषकतत्व अधिक पाए जाते हैं।

उपयोग की विधि :- 200 लीटर का यह तैयार घोल एक एकड़ के लिये पर्याप्त है जिसे महीने में 2 बार छिड़काव से या सिंचाई के पानी के साथ दिया जा सकता है। बने हुए घोल को सात दिनों के अंदर ही उपयोग में ले लेवें।

2. बीजामृत- बिजाई से पहले बीजों को बीजामृत से उपचारित किया जाता ताकि नए पौधे की जड़ों को फंगस

और अन्य बीमारियों से बचाया जा सके। बीजामृत को बनाने के लिए गाय का गोबर, एक शक्तिशाली प्राकृतिक कवकनाश, गाय मूत्र, एंटी-बैक्टीरिया तरल, नींबू, चूना, मिट्टी, राख इत्यादि का इस्तेमाल किया जाता है।

बीजामृत बनाने की विधि :- गाय का गोबर 5 किलो, गाय का मूत्र 5 लीटर, चुना 50 ग्राम, पानी 20 लीटर, पुराने पेड़ के नीचे से या मेड़ की मिट्टी मुठी भर। इन सबको मिलाकर 24 घण्टे छाया में रखें। दिन में दो बार लकड़ी से हिलाकर मिलाएं। यह बीजामृत 100 किलो बीजों के लिये पर्याप्त है।

उपयोग की विधि:- बीजों को बोने से पहले उनमें बीजामृत को अच्छे से लगाकर छाया में सूखा दें। सूखने के बाद बीजों को बो दें।

3. **आच्छादन (मल्चिंग)** – मिट्टी में नमी और प्रजनन क्षमता बनाये रखने के लिये मिट्टी की ऊपरी सतह को ढका जाता है ताकि मिट्टी में जीवाणु सुरक्षित रहकर मिट्टी को उपजाऊ बना सके। मल्चिंग से खरपतवार भी नियंत्रण में रहता है और कम पानी की आवश्यकता पड़ती है। कुछ लोग प्लास्टिक की मल्चिंग भी करते हैं, लेकिन फसल अवशेष (पराली, भूसा, पत्ते इत्यादि) द्वारा बनी जैविक मल्चिंग सबसे बढ़िया होती है। इससे फसल अवशेष के कचरे का भी निपटान हो जाता है और धीरे-धीरे वह कचरा खाद में परिवर्तित हो जाता है। मुख्य फसल के पौधों के बीच में खाली जगह में दूसरी फसल के छोटे-पौधों या बेल को लगा देने से हरी मल्चिंग भी की जा सकती है जो कम धूप में भी हो जाये।

4. **वाप्सा (नमी)**– पौधों को अधिक पानी की जरूरत नहीं होती है। उन्हें तो अपनी जड़ों और मिट्टी से चिपके पोषक तत्व बनाने वाले जीवाणुओं को नमी की आवश्यकता होती है। मिट्टी के छिद्रों में नमी युक्त हवा ही पर्याप्त होती है। अधिक सतही पानी (flood water) होने से हवा निकल जाती है और जीवाणु दम घुटकर मर जाते हैं। अधिकतर पानी जड़ों की मिट्टी के नीचे बह जाता है और कुछ सतह से वाष्पित होकर उड़ जाता है। ड्रिप इरीगेशन या फव्वारा पद्धति से सिंचाई पर्याप्त होती है जिससे कम पानी से काम चल जाता है। आने वाले समय में पानी की कमी और होने से यह पद्धति ही एक सही समाधान है।

प्राकृतिक खेती में हानिकारक कीट कम आते हैं फिर भी जैविक कीटनाशक आसानी से घर में ही तैयार किये जा सकते है :-

1. **नीमास्त्र (रस चूसने वाले कीट, छोटी सुंडी, इल्लियों के नियंत्रण के लिये) :-** नीम की हरी पत्तियां 5 किलो या निम्बोली 5 किलो लेकर कूटकर, 100 लीटर पानी में मिला लें, 5 किलो गाय का मूत्र, 1 किलो गाय का गोबर भी मिलाकर, कपड़े या बोरी से ढककर 48 घण्टे तक रखें। फिर कपड़े से छानकर फसल पर छिड़काव करें।

2. **ब्रह्मास्त्र (अन्य कीटों, बड़ी सुंडियों, इल्लियों के नियंत्रण के लिये) :-** 10 लीटर गोमूत्र लें। उसमें 3 किलो नीम के पत्ते, 2 किलो धतूरे, करंज, शरीफा, अमरूद, अरंड, बेलपत्र, पपीता, आक, कनेर इत्यादि में से कोई भी पांच पौधों के पत्ते कूटकर मिला दें। फिर चार उबाली देकर (गर्म करके) ठंडा कर लें। 48 घंटे के बाद कपड़े से छानकर रख लें। 100 लीटर पानी में 3 लीटर ब्रह्मास्त्र मिलाकर छिड़काव करें। इस ब्रह्मास्त्र को 6 महीने तक प्रयोग में लिया जा सकता है।

3. **अग्नि अस्त्र (तना छेदक, फलों फलियों की सुंडिओं, कपास के डिंडों की सुंडियों के लिये):-** 20 लीटर गौमूत्र लें, उसमें 1 किलो तम्बाकू, 1 किलो हरि मिर्च, आधा किलो लहसुन, 5 किलो नीम के पत्ते कूटकर डालें। 4 उबाली देकर गर्म करें। फिर 48 घण्टे तक ठंडा करके छानकर रख लें। 100 लीटर पानी में 3 लीटर घोल मिलाकर फसल पर छिड़काव करें। यह घोल 3 महिनों तक उपयोग में लाया जा सकता है।

4. **फंगीसाइड (कवकनाशक) :-** 100 लीटर पानी में 3 लीटर खट्टी छाछ मिलाकर छिड़काव करें। प्राकृतिक खेती में देशी बीजों का ही उपयोग बताया जाता है।

सरकार भी जीरो बजट प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिये किसानों को सहायता प्रदान करती है। रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, खरपतवारनाशकों की बढ़ती हुई कीमतों और स्वास्थ्य और पर्यावरण और धरती के नुकसान को देखते हुए प्राकृतिक खेती ही एक अच्छा समाधान है। इसलिये प्रत्येक किसान को इसे शुरू करना चाहिए। रासायनिक खादों से नशेड़ी हुई जमीन में भले ही शुरू के वर्षों में प्राकृतिक खेती से उत्पादन कम हो, लेकिन खर्चा कम होने से कुल लाभ अधिक ही होगा। जमीन में जीवाणुओं की संख्या और पोषक तत्वों में वृद्धि होने से हर वर्ष उत्पादन बढ़ता ही जायेगा।

-आर.के. बिश्नोई
गांव -लाडाणा, तह.-सूरतगढ़,
जिला-श्री गंगानगर, मो.: 9899303026
E-mail: bishnoirk@gmail.com

सुकृत

गुरु जाम्भोजी ने सबदवाणी में कहा है कि 'सुकृत अहलयों न जाईं'। श्री कृष्ण ने गीता में उपदेश दिया है कि 'कर्म किए जा फल की इच्छा मत कर' अर्थात् शुभ कार्य करने का सन्देश दिया था। जितने भी धार्मिक ग्रन्थ, वेद-पुराण आदि हैं, सभी में मनुष्य के उद्धार की बातें बतलाई गई हैं। सच्चे अर्थों में धार्मिक व्यक्ति का धर्म बिल्कुल सीधा-सादा होता है, जिसमें कर्म-विश्वासों, धर्म-सिद्धान्तों के मनोभाव या अधिदैविक तत्वों की बेड़ियां नहीं होती। अपनी व्यावहारिक अभिव्यक्ति के लिए इसकी यह सूक्ति होती है जो भी कोई भला करता है, न्यायपूर्वक आचरण करना सत्य की भावना के साथ विनम्रतापूर्वक चलना, यही सबसे ऊँचा धर्म है। यदि हम आध्यात्मिक वास्तविकताएं केन्द्रित हो जाए तो हम लोक और भय से, जो हमारे अराजक और प्रतिस्पर्धा समाज के आधार है, मुक्ति पा जाते हैं। गुरु जाम्भोजी द्वारा कही हुई शब्दावली सभी ग्रन्थों का सार है और सबका सार है। यह सबद 'सुकृत अहलयो न जाई' अगर केवल इसी सबद की पालना हो जाए तो मनुष्य शुभ कर्म करेगा, उनतीस नियमों की पालना होगी। जिससे मनुष्य को 'जीवा न जुगती तथा मरे को मोक्ष प्राप्त होगा'। केवल इस एक सबद की पालना करने से जीवन में सच्चाई, ईमानदारी, सादगी, पवित्रता और कर्मठता आएगी।

गुरु जाम्भोजी ने शुभ कर्म (सुकृत कर्म) की दोहरी महत्ता बतलाई है। मनुष्य जन्म पूर्व जन्म के शुभ कार्यों के कारण ही मिलता है और इस जन्म के किए गये शुभ कर्मों का फल आगे मिलेगा। मनुष्य कार्यों से ही ऊँच और नीच माना जाता है, कुल और आयु से नहीं। सार के रूप में गुरु जाम्भोजी का कथन है कि साथ तो केवल सुकृत ही चलते हैं, गुरु जाम्भोजी ने कहा है कि जो सुकृत करता है और जीने की विधि जानता है, वही जीवन मुक्ति प्राप्त कर सकता है। मनुष्य का लक्ष्य ही मुक्ति प्राप्ति का होता है। एक बार की मुक्ति सदा की मुक्ति है। उन्होंने कहा है- हे मनुष्य! तू भले मूल को सींच। बिरले पुरुष ही भली मूल का सिंचन करते हैं तथा परम तत्त्व को जानने का प्रयास करते हैं। जो जीवन की विधि जानते हैं वही ऐसा कर सकते हैं। उनको इस जीवन में तो लाभ होगा ही, मरने पर भी वो आवागमन से मुक्त हो जाएंगे।

व्यक्ति का दोहरा दायित्व है- अपने प्रति तथा समाज के प्रति। अतः जीवन की विधि के अंतर्गत आत्मोथान के साथ लोक संग्रह और लोक मंगलकारी अर्थात् सुकृत कार्यों की गणना है। गुरु जाम्भोजी ने किसी न किसी रूप में निरन्तर लोक मंगल के कार्य करना मनुष्य का एक प्रमुख कर्तव्य बताया है।

गुरु जाम्भोजी ने जहां कथनी और करनी में सामंजस्य पर बल दिया, वहां उन्होंने बार-बार शुभ कार्य (सुकृत) और श्रमशील जीवन बिताने का संदेश भी दिया। उन्होंने कहा- हे प्राणी! तू अपनी मृत्यु से पहले स्वयं को संभाल, क्योंकि सुपथ (सुकृत) पर चलकर ही तू पार उतर सकेगा। गुरु जाम्भोजी की जीवन पद्धति और कार्य प्रणाली से यह स्पष्ट है कि वे एक महान कर्म योगी थे। उन्होंने अपनी ज्ञानमयी वाणी से समाज को सुसंस्कृत और आदर्श समाज बनाने का यत्न किया था। उनकी वाणी में दृढ़ता, स्पष्टवादिता और ओजस्विता थी। उन्होंने अपनी वाणी में कहा है- 'सुकरत साथ सखाई चालै' अर्थात् पुण्य कर्म, शुभ कर्म (सुकृत) साक्षी के रूप में हमेशा साथ चलते हैं। मरणोपरान्त तो किए हुए सुकृत ही जीवन के साक्षी होंगे।

गुरु जाम्भोजी ने अपनी सबदवाणी में कहा है कि जीवन का वास्तविक घर तो आगे है यहां तो केवल 'गोवलवास' है। यहां का 'आधोचार' झूठा है। अतः जो शुभ कार्य कर सकते हो, उसको जल्दी करो।

केवल 'सुकृत अहल्यो न जाई' सबद सबका सार है तथा इसकी पालना करने से प्राणी मात्र का जीवन सुधर सकता है तथा मोक्ष प्राप्त कर सकता है। मुनष्य का लक्ष्य ही मुक्ति प्राप्ति का होता है। नववर्ष के अवसर पर हमें सुकृत का संकल्प लेना चाहिए।

-मनोहर लाल गोदारा

पूर्व संपादक, अमर ज्योति, सदलपुर हिसार

मो.: 9416131047

कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग के उत्कृष्ट संस्थान

गतांक से आगे.....

शिक्षा से हम जीवन में एक अर्थपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करने में सक्षम हो सकते हैं।

हम चर्चा कर रहे थे कि कंप्यूटर शिक्षा में भविष्य किस प्रकार के संस्थान से पढ़ाई करके बनाया जा सकता है। इस विषय पर चर्चा करते हुए यह हमारा निरंतर तीसरा प्रयास है। मैं पहले भी बता चुका हूं कि यह भविष्य का क्षेत्र है जहां पर संभावनाओं की कोई कमी नहीं है। निरंतर कंप्यूटर साइंस में नए-नए क्षेत्र बनते जा रहे हैं। निर्माण के सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर, ऑटोमेशन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मांग बढ़ रही है, इसलिए यह एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बन जाता है। पिछले अंक में हम NIT की चर्चा कर रहे थे कि किस रैंक तक हमें किस NIT में प्रवेश कंप्यूटर साइंस ब्रांच में एडमिशन मिल सकता है या किस रैंक तक IT (इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी) की ब्रांच मिल सकती है। हमने यह पाया था कि कुछ NIT का नाम IIT से भी आगे है जहां पर उच्च रैंक आने पर ही प्रवेश मिलता है। परंतु मध्यम रैंक प्राप्त होने पर भी हम किन अच्छे संस्थानो में कंप्यूटर साइंस की डिग्री कर सकते हैं वे संस्थान है- IIIT (इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी) के।

भारत में तेजी से बढ़ते टेक्नोलॉजी क्षेत्र की जरूरत को पूरा करने के लिए इनकी स्थापना की गई थी। मानव संसाधन मंत्रालय के उद्देश्य ने पूर्ण रूप लिया, जब अपने अधीन सर्वप्रथम IIIT ग्वालियर, इलाहाबाद, जबलपुर और कांचीपुरम की स्थापना की और बाद में कुरनूल में IIIT स्थापित किया गया। इन संस्थानों को राष्ट्रीय महत्व का दर्जा प्राप्त है। इसके अतिरिक्त भी 20 अन्य संस्थानों की स्थापना PPP (सार्वजनिक -निजी भागीदारी मॉडल) के आधार पर केंद्र व राज्यों की भागीदारी के साथ स्थापित किए गए हैं। यह केंद्र सरकार की नीति के अनुसार प्रवेश करते हैं और आरक्षण व्यवस्था केंद्रीय नीति के तहत रहती है। इन संस्थानों में B.Tech की डिग्री के साथ-साथ PG की डिग्री और रिसर्च के कार्य भी होते हैं। साथ ही कुछ संस्थानों में Dual डिग्री के प्रोग्राम भी करवाये जाते हैं। इन संस्थानों में प्रवेश के लिए JEE मेन में प्राप्त अंकों के आधार पर प्रवेश होता है। यह प्रवेश प्रक्रिया JoSAA (ज्वाइंट सीट एलोकेशन अथॉरिटी) के अंतर्गत होती है तथा मास्टर डिग्री के प्रवेश के लिए GATE (ग्रेजुएट एटीट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग) के तहत प्रवेश होते हैं। इन संस्थानों की चर्चा करते हुए हम यहां पर B.Tech की डिग्री के साथ-साथ 5 वर्षीय इंटीग्रेटेड M.Tech प्रोग्राम की भी चर्चा करेंगे।

प्रमुख संस्थान - ABV& IIITM (अटल बिहारी वाजपेयी इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट), ग्वालियर।

राष्ट्रीय महत्व के इस संस्थान की स्थापना 1997 में हुई थी। यहां पर तीन प्रकार के कोर्स होते हैं। प्रथम B.Tech की चार वर्षीय डिग्री। इससे कोर्स में इस वर्ष JEE मेन के 5570 रैंक से प्रवेश शुरू कर 8292 रैंक तक ओपन कैटिगरी में प्रवेश हुए हैं। छात्राओं के लिए यह रैंक 2908 से 12237 तक रहा है। इस संस्थान के इंटीग्रेटेड कोर्स की बात करें तो वह M.Tech (IT) इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी का 5 वर्ष डिग्री का कोर्स होता है। इस इंटीग्रेटेड डिग्री में प्रवेश के लिए रैंक 8525 से शुरू होकर 12740 तक रहा। संस्थान में एक और अन्य इंटीग्रेटेड डिग्री B.Tech + MBA ब्रांच में एडमिशन 12894 से 16786 रैंक तक ओपन कैटिगरी में एडमिशन हुए। यहां पर इंटीग्रेटेड M.Tech प्रोग्राम में 119 सीटें हैं, इंटीग्रेटेड MBA प्रोग्राम में 69 सीटें हैं और B.Tech कंप्यूटर साइंस में 74 सीटें प्रवेश के लिए उपलब्ध है। इस संस्थान से प्लेसमेंट रिकॉर्ड बहुत अच्छा है, सैलरी के पैकेज लाखों रुपए के रहते हैं। इस प्रकार कंप्यूटर शिक्षा में यह संस्थान विशेष महत्व रखता है।

IIIT, हैदराबाद (इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी)- तेलंगाना राज्य में एक स्वायत्त विश्वविद्यालय के रूप में IIIT हैदराबाद एक महत्वपूर्ण संस्थान है। यह निजी क्षेत्र का विश्वविद्यालय है। इस संस्थान में प्रवेश के लिए इनके स्वयं के प्रवेश नियम हैं। यह ज्वाइंट सीट एलोकेशन अथॉरिटी के अंतर्गत नहीं आते। यह प्रवेश के लिए JEE मेन का स्कोर तो प्रयोग करते हैं परंतु एडमिशन की प्रक्रिया खुद देखते हैं। यहां पर कंप्यूटर साइंस की 100 सीटें हैं। छात्राओं के लिए भी कुछ अलग से सीटें निर्धारित हैं। संस्थान की NIRF रैंकिंग में 54वां स्थान है। संस्थान में प्रवेश के लिए उच्च रैंक की आवश्यकता रहती है। इस बार JEE मेन में 1000 रैंक तक ही प्रवेश हो पाया है। यहां पर विश्व की कोर कंप्यूटर कंपनी प्लेसमेंट के लिए आती है और पैकेज लाखों में रहता है। इस कारण यहाँ प्रवेश हेतू कड़ी प्रतियोगिता है और इस कारण यह संस्थान कंप्यूटर साइंस के क्षेत्र में विशेष नाम रखता है।

IIIT, इलाहाबाद (भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान)- राष्ट्रीय महत्व का यह संस्थान भारत के प्रमुख संस्थानों में से एक है। भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित यह संस्थान NIRF की इंजीनियरिंग रैंकिंग में 87वें स्थान पर है। अप्लाइड साइंस, इलेक्ट्रॉनिक्स, इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी और मैनेजमेंट के डिपार्टमेंट यहाँ कार्यरत है। यहाँ पर

B.Tech की दो प्रकार की डिग्री होती है एक B.Tech कंप्यूटर साइंस और B.Tech बिजनेस इनफॉर्मेटिक्स। इस संस्थान में प्रवेश JoSSA (जॉइंट स्वीट एलोकेशन अथॉरिटी) के अंतर्गत होते हैं और इस वर्ष प्रवेश उच्च रैंक पर हुए हैं। अंतिम राउंड तक यहां रैंक 1528 से शुरू होकर 4875 तक ओपन कैटिगरी में प्रवेश हुए हैं। B.Tech बिजनेस इनफॉर्मेटिक्स में रैंक 3980 से 5300 तक ओपन कैटिगरी में रहे। इससे यह पता चलता है कि संस्थान की मांग बहुत अच्छी है और यहां का प्लेसमेंट रिकॉर्ड बहुत अच्छा है। रिसर्च क्षेत्र में भी संस्थान का विशेष नाम है। कंप्यूटर साइंस में यहां से 19 विषयों पर पीएच.डी. भी होती है जो यह दर्शाता है कि यह संस्थान कितना महत्वपूर्ण है।

IIIT DM, जबलपुर (इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी डिजाइन एंड मैन्युफैक्चरिंग) NIRF की 80वीं रैंक प्राप्त यह राष्ट्रीय महत्व का संस्थान है। यहां पर B.Tech, M.Tech कंप्यूटर साइंस के साथ-साथ B.Tech (Design) में भी डिग्री होती है। इंटीग्रेटेड कोर्स में M.Tech कंप्यूटर साइंस में किया जा सकता है। यहां प्रवेश हेतू JEE मेन का रैंक चाहिए होता है। इस वर्ष अंतिम राउंड तक ओपन कैटेगरी 7374 रैंक से 15755 रैंक तक प्रवेश हुए हैं। यहां पर एक नया कोर्स B.Tech (Smart Manufacturing) भी शुरू हुआ है जिसमें 30000 रैंक तक प्रवेश हुए हैं। यहां से छात्रों को प्लेसमेंट हर वर्ष बढ़ रहा है। यहां से एवरेज प्लेसमेंट पैकेज10 लाख प्रति वर्ष का रहा है।

IIIT DM, कांचीपुरम (इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी डिजाइन एंड मैन्युफैक्चरिंग) राष्ट्रीय महत्व के इस संस्थान से B.Tech कंप्यूटर साइंस के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल की डिग्री भी होती है। कंप्यूटर साइंस में ओपन कैटेगरी से 7613 रैंक से 16624 रैंक तक प्रवेश हुआ है। चेन्नई स्थित इस संस्थान का प्लेसमेंट बहुत अच्छा रहता है। इसके अतिरिक्त यहां से B.Tech + M.Tech की ड्यूल डिग्री भी की जा सकती है।

IIIT DM, कुरनूल (इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी डिजाइन एंड मैन्युफैक्चरिंग)- आंध्रप्रदेश स्थित भारत सरकार के अधीन यह संस्थान कम्प्यूटर साइंस की डिग्री करने हेतू JoSSA के अंतर्गत प्रवेश करता है। इस वर्ष ओपन कैटिगरी से 20417 रैंक से 31549 रैंक तक यहां प्रवेश हुए हैं। यहां पर प्लेसमेंट 65% प्रतिशत बेहतर प्रतीत होता है। कम फीस में अच्छी शिक्षा वाला यह संस्थान निरंतर अच्छे आयाम स्थापित कर रहा है।

IIIT, बेंगलुरु (इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी)- NIRF की 76वीं रैंक प्राप्त यह संस्थान 1999 से कार्यरत है। यह सरकारी निजी क्षेत्र की भागीदारी से स्थापित संस्थान है। शत्-प्रतिशत प्लेसमेंट वाले संस्थान में 12वीं के बाद इंटीग्रेटेड कोर्स M.Tech में भी एडमिशन होता है। संस्थान में JEE मेन के स्कोर का प्रयोग एडमिशन के लिए होता है परन्तु एडमिशन प्रोसेस स्वयं की है। पिछले वर्ष यहां 6000 रैंक से 7200 रैंक के बीच प्रवेश संभव हो पाया था। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अन्य यूनिवर्सिटी से एक्सचेंज प्रोग्राम के कारण छात्रों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जाकर पढ़ने का मौका मिलता है।

IIIT गुवाहाटी, (इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी)- NIRF की इंजीनियरिंग रैंक में 73वीं रैंक पर यह संस्थान आता है। 2013 से कार्यरत यह संस्थान राष्ट्रीय महत्व का दर्जा प्राप्त है। B.Tech कंप्यूटर साइंस में प्रवेश हेतू JEE मेन की रैंक 7857 से 22054 तक संभव हुआ है। यहाँ का प्लेसमेंट रिकॉर्ड 75% है और एवरेज प्लेसमेंट पैकेज तेरह लाख प्रति वर्ष है। IIITs में सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग के साथ यह संस्थान कम समय में बहुत अच्छा कार्य कर रहा है।

IIIT भुवनेश्वर, (इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी)- NIRF की 190वीं रैंक प्राप्त यह संस्थान उड़ीसा राज्य की राजधानी में है। यह पूर्ण रूप से राज्य सरकार द्वारा स्थापित संस्थान है। इसलिए यहां प्रवेश हेतु 50% सीटें उड़ीसा राज्य के छात्रों के लिए निर्धारित होती है। ऑल इंडिया के कैटेगरी में प्रवेश हेतु ज्वाइंट सीट एलोकेशन अथॉरिटी के माध्यम से काउंसलिंग होती है। इस बार यहां अंतिम राउंड तक प्रवेश हेतू 13315 रैंक से 21298 रैंक था।

IIIT, पुणे (इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी) - नए संस्थापित IIITs संस्थानों में यह सर्वाधिक गति से नए आयाम स्थापित करने वाला संस्थान है। इस संस्थान छात्रों को नवाचार, प्रतियोगिता, वार्तालाप के गुण आदि खूबियों को भी सिखाया जा रहा है जिस कारण छात्रों की व्यावहारिक सोच बन रही है। इसका प्रमाण यहां के प्लेसमेंट रिकॉर्ड से पता चलता है। यहाँ ओपन कैटेगरी में 7299 रैंक से 17042 रैंक तक एडमिशन हुए हैं।

अन्य संस्थान - इस प्रकार कंप्यूटर साइंस को समर्पित अन्य IIITs भी है जिसमें विद्यार्थी कंप्यूटर साइंस से अपना भविष्य बना सकते हैं। इनमें IIIT, कोटा में जहां 11315 रैंक से 22000 तक प्रवेश हुए। इसी प्रकार IIIT, श्री सिटी, चित्तूर जो कि तमिलनाडु में है, में प्रवेश हेतु 16429 रैंक से 26606 रैंक तक प्रवेश हुआ है। IIIT वडोदरा गुजरात में प्रवेश हेतू 20254 रैंक से 32340 रैंक तक प्रवेश हुआ है। इसी प्रकार IIIT नागपुर में 17642 रैंक से 26772 रैंक तक प्रवेश हुआ है। IIIT दिल्ली का नाम भी बहुत प्रतिष्ठित है परंतु यहां पर 80% सीटें दिल्ली राज्य हेतु आरक्षित है।

अन्य प्राइवेट संस्थान- BITS पिलानी, गोवा, हैदराबाद का नाम

भारत के सर्वश्रेष्ठ इंजीनियरिंग संस्थानों में आता है। यहां से B.Tech की डिग्री करने पर 100% प्लेसमेंट होती है और पैकेज लाखों रुपए में होते हैं। यह एक निजी संस्थान है इसलिए यहां फीस थोड़ी ज्यादा होती है परंतु प्लेसमेंट बहुत जबरदस्त है और एडमिशन के लिए कम्पीटिशन पूरा है और आरक्षण नियम लागू नहीं है। सीटों की संख्या की बात करें तो पिलानी में 120 सीटें, गोवा में 110, हैदराबाद में 150 सीटें हैं। यहां के लिए प्रवेश परीक्षा 450 नंबर की होती है जिसमें पिलानी के लिए 2020 में कटऑफ 372 नंबर रहे, गोवा के लिए 347 नंबर और हैदराबाद में 336 नंबर रहे। यहां से पास होने पर अंतरराष्ट्रीय स्तर के जॉब प्राप्त कर सकते हैं। वैसे यहाँ B.Tech की सभी ब्रांच में अच्छे प्लेसमेंट होते हैं। तीनों संस्थानों में सभी प्रकार की B.Tech की 2000 सीटों के लिए लाखों विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा में शामिल होते हैं।

VIT की वेल्लोर, चेन्नई, आंध्र प्रदेश और भोपाल के इंस्टीट्यूट कंप्यूटर साईंस की डिग्री करवाते हैं परंतु वेल्लोर कैंपस बहुत अच्छा प्रोग्राम देता है। सभी कैंपस से 80% प्लेसमेंट होती है। प्राइवेट संस्था होने के कारण यहां पर भी फीस थोड़ी ज्यादा होती है परंतु पढ़ाई और प्लेसमेंट के हिसाब से यह न्यायोचित रहती है। इसी प्रकार मणिपाल ग्रुप द्वारा भी बंगलोर, जयपुर से B.Tech कंप्यूटर साइंस में प्रवेश होने पर आप अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। यहां से प्लेसमेंट बहुत अच्छे हैं। प्राइवेट संस्थानों की इसी कड़ी में थापर युनिवर्सिटी पटियाला का नाम बहुत अच्छा है। यहां पंजाब के निवासियों के लिए 50% सीटें आरक्षित हैं। इसी प्रकार LNMIIT, जयपुर बहुत अच्छे संस्थानों में आता है।

इस प्रकार हम कंप्यूटर साइंस के कुछ संस्थानों की चर्चा कर पाए हैं। भारत में अभी बहुत सारे सरकारी विश्वविद्यालय भी है जहां पर सामान्य फीस में प्रोफेशनल ढंग से कंप्यूटर साइंस की डिग्री की जा सकती है। स्वयं का स्टार्टअप बना कर भी युवा उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। कंप्यूटर साइंस के क्षेत्र में विद्यार्थी के पास असीमित संभावनाएं आगे भी रहेंगी। जरूरत है तो श्रेष्ठ संस्थान में प्रवेश करने की। इसलिए जरूरी है कि 10+2 के नॉन मेडिकल के विद्यार्थी जो अपना भविष्य इस क्षेत्र में बनाना चाहते हैं वे अन्दाजा लगा लें कि कितनी मेहनत की जरूरत रहेगी। कंप्यूटर साइंस के विषय पर अभी भी बहुत कुछ लिखा व समझा जा सकता है जितना मैं बता पाया हूँ इसके अतिरिक्त भी।

आगे के विषय पर बात करें तो हम आगे के अंक में परंपरागत इंजीनियरिंग के विषय सिविल, मैकेनिकल इंजीनियरिंग के बारे में चर्चा करेंगे। उपरोक्त चर्चा में मैंने अपनी क्षमता से बिंदुओं को स्पष्ट करने की कोशिश की है फिर भी किसी विषय में कोई सुझाव या शंका हो तो उसके लिए मैं सदैव आपके समक्ष उपलब्ध हूं। मुझे आपकी किसी भी जानकारी को बढ़ाने में खुशी महसूस होगी जो कि मेरा धार्मिक दायित्व भी है।

सीएसई कोर्स के लिए विभिन्न संस्थान एवं बेबसाइट

- Joint Seat Allocation Authority https://josaa.nic.in/
- Different Engineering Institutes
  - ABV & IIITM, Gwalior (https://www.iiitm.ac.in)
  - IIIT, Hyderabad (https://ims.iiit.ac.in)
  - IIIT, Allahabad (https://www.iiita.ac.in)
  - IIITDM. Jabalpur (https://www.iiitdmj.ac.in)
  - IIIT Design & Manufacturing, Kurnool (https://iiitk.ac.in)
  - IIIT Design & Manufacturing, Kancheepuram (http://www.iiitdm.ac.in)
  - IIIT, Bhubaneswar (https://www.iiit&bh.ac.in)
  - IIIT, Pune (https://www.iiitp.ac.in)
  - IIIT, Kota (https://iiitkota.ac.in)
  - IIIT, Sri City, Chittoor (https://www.iiits.ac.in)
  - IIIT, Vadodara (http://www.iiitvadodara.ac.in)
  - IIIT, Nagpur (https://iiitn.ac.in)
  - IIIT, Kalyani (http://iiitkalyani.ac.in)
  - IIIT, Lucknow (https://iiitl.ac.in)
  - Birla Institute of Technology & Science (https://www.bits&pilani.ac.in)
  - VIT Group (https://vit.ac.in)
  - Manipal Institute of Technology (MIT) Manipal (https://manipal.edu)
  - Thapar Institute of Engineering & Technology (https://www.thapar.edu)
  - LNM Institute of Information Technology (https://www.lnmiit.ac.in)
- Institution Ranking Body
  - National Institutional Ranking Framework (https://www.nirfindia.org)

–प्रवीण धारणीया

अध्यक्ष, अ.भा. बिश्नोई युवा संगठन

मो.: 9728400029

E-mail: parveendharnia29@rediffmail.com

सामाजिक हलचल

मध्यप्रदेश के नीमगांव में अगहन उत्सव का आयोजन

नीमगांव: मध्य क्षेत्र बिश्नोई सभा, नीमगांव, जिला हरदा के तत्वावधान में प्राचीन श्री गुरु जम्भेश्वर मंदिर, नीमगांव में अगहन उत्सव मेला 2021 का आयोजन हुआ। आचार्य संत डॉ. गोवर्धनराम जी शिक्षा शास्त्री के पावन सान्निध्य में 30 नवंबर से 04 दिसंबर तक पांच दिवसीय सामूहिक सबदवाणी हवन और श्री जाम्भाणी हरिकथा हुई। बिश्नोई समाज पर्यावरण शुद्धि व प्रकृति संरक्षण का संदेश तथा समाज हित के लिए प्रतिवर्ष यह अगहन उत्सव मनाती है। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रथम खंड मे समाज के संत आचार्य डॉ. गोवर्धनराम जी सहित समाज के लोगों ने मंदिर परिसर में श्री जाम्भाणी सबदवाणी के पाठन से हवन किया।

द्वितीय खंड दोपहर को आचार्य श्री के मुखारविंद से 1.30 से 4.30 बजे तक श्री जाम्भाणी हरिकथा का लाभ जनमानस ने लिया। आचार्य श्री ने हरिकथा में कहा कि पर्यावरण संरक्षण में बिश्नोई समाज में वन और वन्यजीव की रक्षा करने की परम्परा रही है। समाज के इतिहास पर प्रकाश डालकर 363 बिश्नोई शहीदों को याद किया। श्री गुरु जाम्भोजी की सबदवाणी का उदाहरण देते हुए कहा जो मृत्यु को विस्मृत नहीं करता, वही नित्यवस्तु से जुड़ पाता है तथा वही मुक्ति के साथ युक्ति को पाने में सफल हो पाता है। आचार्य श्री ने कथा मे सबदवाणी और उन्नतीस नियम की महत्ता बतलाई व समाज को बिश्नोई पंथ पर चलने का आह्वान किया।

अगहन उत्सव के चौथे दिन मध्यक्षेत्र बिश्नोई सभा का चुनाव आपसी सहमति से हुआ जिसमें पूर्व अध्यक्ष बद्रीप्रसाद कालीराणा एव उनकी समिति ने त्यागपत्र दिया। तदोपरांत मध्यक्षेत्र बिश्नोई सभा के नए अध्यक्ष के रूप में आत्माराम पटेल बैनिवाल को चुन लिया गया। नवनियुक्त अध्यक्ष को आचार्य संत डॉ. गोवर्धनराम जी, पूर्व अध्यक्ष हीरालाल पटेल, पूर्व अध्यक्ष बद्रीप्रसाद कालीराणा, लक्ष्मीनारायण पंवार आदि समाज के गणमान्य लोगों ने बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कंधे से कंधा मिलाकर समाज के लिए कार्य करने का आश्वासन दिया।

3 दिसंबर की सायं को मंदिर परिसर से नीमगांव गांव में श्रीगुरु जम्भेश्वर भगवान की शोभायात्रा निकाली गई। मंदिर परिसर मे विशेष विद्युत साज सजा कर बिश्नोई लोगों ने शोभायात्रा का स्वागत दीपक, आरती, फूलमालाओं और हरिसंग कीर्तन से किया।

पांच दिवसीय अगहन उत्सव मेले के अंतिम दिन हजारों की संख्या में बिश्नोई बंधुओं, माताओं-बहनों एवं बच्चों ने हवन कर यज्ञ मे आहुति दी। तत्पश्चात् दोपहर को धर्मसभा का आयोजन हुआ। बिश्नोई सभा ने साल भर का आय-व्यय का ब्यौरा रख धर्म सभा में बिश्नोई समाज ने

निर्णय लिया कि समाज में अगर कोई गलती करता है तो उसके सुधार के लिए जल्द ही 11 लोगों की एक समिति बनाई जाएगी, जो समाज सुधार के लिए कठोर निर्णय लेगी। आचार्य संत डॉ. गोवर्धनराम जी ने समाज को संबोधित करते हुए कहा वर्तमान समय में समाज का सही दिशा में चलना बहुत जरूरी है। अगर समाज का कोई भी व्यक्ति कोई गलती करता है तो उसके सुधार के लिए 11 लोगों की समिति काम करेगी। आचार्य श्री ने नवनियुक्त अध्यक्ष आत्माराम पटेल को जल्द समिति बनाने के निर्देश दिए। आचार्य श्री ने समाज को कुरीतियों से दूर रहने, किसी प्रकार का नशा न करने , बेटियों को उच्च शिक्षित बनाने की बात कही। धर्मसभा मे अध्यक्ष आत्माराम पटेल बैनिवाल, पूर्व अध्यक्ष हीरालाल, पूर्व अध्यक्ष बद्रीप्रसाद कालीराणा, लक्ष्मीनारायण पवार सहित अन्य लोगों ने मंच सांझा कर समाज को संबोधित कर अपने विचार रखे।

सभा में बिश्नोई सेवक दल, विभिन्न क्षेत्र की प्रतिभाओं व मेधावी बच्चों का सम्मान किया। समाज के युवा लेखक धनगांव निवासी धर्मवीर बिश्नोई की पुस्तक का विमोचन किया। मंच संयोजक राजेश गोदारा ने बिश्नोई सभा का सामाजिक आय-व्यय पत्रक का वाचन किया। अगहन उत्सव मे बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने हवन में आहुति देकर मंदिर मे धोक लगाई, फिर भंडारे की प्रसादी को ग्रहण किया। इस वर्ष बिश्नोई सभा, हिसार, हरियाणा से प्रकाशित 'अमर ज्योति' पत्रिका के व्यवस्थापक श्री रामनिवास बिश्नोई ने पत्रिका स्टाल लगाकर बिश्नोई बंधुओं को पत्रिका के वार्षिक एवं आजीवन सदस्य बनाये।

-**रामनिवास सिहाग**, व्यवस्थापक, अमर ज्योति, हिसार

गांव-गांव चला जाम्भाणी साहित्य संस्कार परीक्षा अभियान

समाज के बच्चों व युवा पीढ़ी में जांभाणी शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से अभियोजन विभाग के निदेशक पद से सेवानिवृत बनवारी लाल ने जाम्भाणी साहित्य संस्कार परीक्षा अभियान प्रारंभ किया है। इस अभियान के तहत गत 12 व 19 दिसंबर को हरियाणा के साथ-साथ पंजाब व राजस्थान के विभिन्न गांवों में ये परीक्षाएं आयोजित करवाई गई। जिनमें हजारों की संख्या में बच्चों, युवाओं तथा महिलाओं ने हिस्सा लिया। परीक्षा में शामिल होने वाले अभ्यर्थियों को सम्मान स्वरूप सबदवाणी व जम्भसागर की प्रतियां भेंट की गई। अभियान को और ज्यादा प्रभावी व व्यापक बनाने के लिए समाज के प्रबुद्ध व्यक्तियों द्वारा भी विशेष सहयोग किया गया जिसमें विशेष रूप से जांभाणी साहित्य के रूप में सबदवाणी व जम्भसागर उपलब्ध कराना शामिल है। अभियान को सहयोग प्रदान करने वालों में विशेषरूप से सेवानिवृत पृथ्वी सिंह गिला, पूर्व प्रधान सुभाष देहड़ू, जगदीश कड़वासरा, का. बनवारी लाल, सेवानिवृत ए.डी.सी. भाल सिंह बिश्नोई, मक्खनलाल काकड़, सुरेश गोदारा महलसरा, कैलाश ज्याणी, कृष्ण लाल बैनिवाल, कृष्ण कुमार काकड़, पालाराम करीर, देवेन्द्र लांबा, दलीप सहारण काजला, इन्दिरा बिश्नोई कुरुक्षेत्र आदि गणमान्य शामिल थे।

गुरु जंभेश्वर मंदिर, हिसार

गुरु जंभेश्वर मंदिर, मंगाली, हिसार

गुरु जंभेश्वर मंदिर, आदमपुर, हिसार

गुरु जंभेश्वर मंदिर, नाढोड़ी, फतेहाबाद

गुरु जंभेश्वर मंदिर, कालवास, हिसार

गुरु जंभेश्वर मंदिर, महलसरा, हिसार

भादुना, सांचौर (जालोर)

अबूबशहर, सिरसा

गांव शेरेकां, तह. टिब्बी, जिला हनुमानगढ़

पंजवाणा ढाणी, बुर्जभंगु, सिरसा

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

सम्वत् 2078 पौष की अमावस्या

लगेगी– 1.1.2022 शनिवार रात्रि 3 बजकर 41 मिनट पर
उतरेगी– 2.1.2022 रविवार रात्रि 12 बजकर 03 मिनट पर

सम्वत् 2078 माघ की अमावस्या

लगेगी–31.1.2022 सोमवार दोपहर 2 बजकर 18 मिनट पर
उतरेगी– 1.2.2022 मंगलवार प्रातः 11 बजकर 15 मिनट पर

पौष अमावस मेला– गाडरवाड़ा, म.प्र., **माघ अमावस मेला**– इन्द्र नगर (फलौदी), खातेगांव (म.प्र.), मेहराणा धोरा (पंजाब)– 1.2.2022 मंगलवार; **सन्त आश्रम जूनागढ़ मेला**– बसन्त पंचमी 05 फरवरी 2022 शनिवार।

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या–उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा–दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद–विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/RNP/01/HSR/2020-2022
TECH/WPP/HR-04/HISAR/2020-22

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

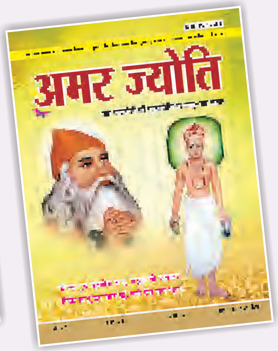

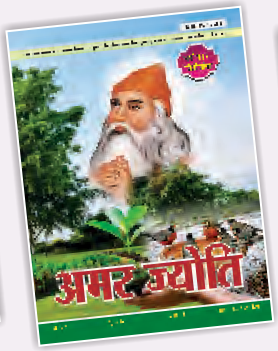

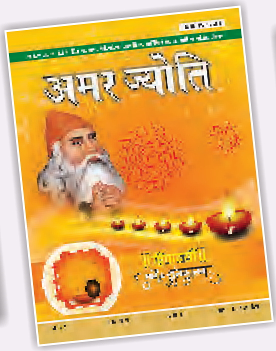

मुद्रक, प्रकाशक प्रो. राजेन्द्र सेवदा (HES-I), प्रशासक, बिश्नोई सभा हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 जनवरी, 2022 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।

DOREX Printers 9896011117